एक कहानी कई रंग–**13** ः

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियॉ

मेरा नाम क्या है?

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Rumpelstiltuskin Jaisi Kahaniyan (Like Rumpelstiltskin Stories)
Cover Page picture : Rumpelstiltskin
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियॉ 7

1 रम्पिलस्टिल्टस्किन–**1812** 13

2 रम्पिलस्टिल्टस्किन–**1857** 17

3 डबलतुर्क 24

4 परज़ीनजैल 26

5 कूज़ीमुगेली 38

6 टौम टिट टौट 43

7 डफ़ी और शैतान 53

8 विन्टरकोल 72

9 मिस सुन्दरी 78

10 ज़िर्कज़िर्क 80

11 सुनहरा कातने वाली 82

12 आलसी लड़की और उसकी चाचियॉ 94

13 विरोधी कैम्पर्स 103

14 टारनडैन्डो 116

15 और सात 126

16 सूअर के मॉस के सात टुकड़े 140

17 किनकाश मार्टिन्को 153

18 लड़की जो मिट्टी और लम्बे भूसे से सोना कात सकती थी 161

19 बड़े साइज़ का आदमी फ़िन और लुंड का चर्च 167

20 ग्वारविन ए थ्रोट 170

21 पैनैलोप 174

22 तपई और ब्राह्मण 180

23 रम्पिलस्टिल्टस्किन 185

24 हिप्पोपोटेमस और कछुआ 193

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000,** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियॉ यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियॉ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियॉ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियॉ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियॉ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

[1] Cinderella, Tom Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियॉ

बच्चों तुमने रम्पिलस्टिल्टस्किन का नाम सुना है। शायद नहीं। यह एक जर्मन लोक कथा चरित्र है जिसकी कहानी वहॉ बहुत प्रसिद्ध है। यह कहानी बहुत ही मजेदार है। ऐसी कहानी केवल वहीं नहीं कही सुनी जाती बल्कि और जगहों पर भी कही सुनी जाती है। जब इस तरह की कहानियॉ इकट्ठी करने का समय आया तो देखा गया कि यह कहानी केवल रूस और यूरोप के कुछ देशों में ही पायी जाती है।

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं। बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। ऐसी ही कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियॉ कही गयीं हैं।

इस सीरीज़ में यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में इससे पहले हम **12** पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। में "बिल्ला और चुहिया" जैसी कहानियॉ थीं।[2] इसकी तीसरी पुस्तक में "टौम थम्ब" जैसी कहानियॉ दी गयीं थीं। इसमें बहुत छोटे बच्चे के कारनामों की कथाऐं हैं।[3]

अब प्रस्तुत है इस सीरीज़ की यह **13**वीं पुस्तक "रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियॉ"[4]। इस पुस्तक में रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियॉ दी गयी हैं। रम्पिलस्टिल्टस्किन जर्मनी की एक बहुत ही मशहूर और लोकप्रिय लोक कथा है। पर तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा कि वैसी कथा केवल वहीं नहीं पायी जाती कई और जगहों पर भी कही सुनी जाती है – ग्रेट ब्रिटेन, चैक रिपब्लिक, फ्रांस, हंगरी, आइसलैंड, रूस, स्लोवाकिया, अरब, भारत आदि आदि। इस पुस्तक में हमने तुम्हारे लिये वैसी ही कुछ कथाऐं इकट्ठी कर के यहॉ रखी हैं। तो लो पढ़ो ये रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कुछ कहानियॉ...

यह कहानी जर्मनी की एक एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है। इसे सबसे पहले ग्रिम्स ब्रदर्स ने **1812** में लिखा था। इसके उसी रूप का यानी **1812** में प्रकाशित कहानी का हिन्दी अनुवाद हम यहॉ प्रस्तुत कर रहे है।[5] डी ऐल ऐशलीमान[6] ने अपनी वेब साइट पर इस कहानी के **22** रूप दे रखे हैं। सबका हिन्दी अनुवाद तो यहॉ देना सम्भव नहीं है। हॉ उनमें से कुछ का हिन्दी अनुवाद हम यहॉ प्रस्तुत कर रहे हैं। इन सब कहानियों में कोई रहस्यमय और धमकी देने वाला आदमी या स्त्री किसी की काम में सहायता करता है पर बाद में कहानी का हीरो या हीरोइन उसका

---

[2] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"

[3] "One Story Many Colors-3" – like "Tom Thumb"

[4] "One Story Many Colors-13" – Like "Rumpelstiltuskin"

[5] Its classification number is AT 500 – (Helper's Name)

[6] DL Ashliman's Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/type0500.html#rumpelstiltskin
This story was first published in "Kinder-und Hausmarchen". 1st ed. Berlin. 1812.

असली नाम बता देता है या फिर उसकी धमकी का जवाब दे देता है। षे सब कहानियॉ AT Type 500 के अन्तर्गत आती हैं जिनमें "उस सहायक का नाम मालूम करना होता है जिसने हीरो या हीरोइन की सहायता की है।"

ग्रिम्स भाइयों ने इस कहानी को पहली बार **1812** में प्रकाशित करने के बाद कई बार बदला है। सबसे ज़्यादा दिखायी देने वाला बदलाव है इसमें एक चरखे का जोड़ना जिससे लड़की को भूसा सोने में बदलने के लिये कहा जाता है। इसके बाद के रूपों में अक्सर रानी इस आदमी का नाम इकट्ठा करने के लिये अपना ही एक आदमी भेजती है न कि राजा उसे उसका नाम बताता है।

इन कहानियों की कथावस्तु का आरम्भ ऐसे होता है जब कोई मॉ या पिता अपनी बेटी की बहुत प्रशंसा करता है। जैसे कि भूसे को सोने के सूत में कातना या फिर एक दिन असाधारण मात्रा में सूत कातना। पर क्योंकि यह सत्य प्रशंसा नहीं है तो वह बच्ची यह काम नहीं कर पाती और हमारा रम्पिलस्टिल्टस्किन उसकी सहायता कर देता है पर एक शर्त पर कि वह उसका असली नाम बता दे। वह यह पहेली रखता तो अवश्य है पर वह यह भी पक्का कर लेता है कि एक दिन पहले वह उसे किसी तरीके से वह नाम बता भी दे। इस पुस्तक में उनके लिखे हुए दोनों रूप दिये हुए हैं।

पूर्वीय जर्मनी ने इसके नाम का एक डाक टिकिट **1976** में निकाला था।

रम्पिलस्टिल्टस्किन कौन था[7]

बच्चो क्या तुमने रम्पिलस्टिल्टस्किन का नाम सुना है? यह कहानी जर्मनी की जानी पहचानी कहानी है। यह ग्रिम ब्रदर्स की परियों की कहानी रम्पिलस्टिल्टस्किन में एक खलनायक का काम करता है।

उसमें यह एक छोटे शैतान के जैसा प्राणी है जो लोगों के साथ उनकी उस हालत में सौदा कर के सहायता करता है जब वे सब तरफ से निराश हो जाते हैं।

बच्चों के एक उपन्यास "द ऐन्चान्ट्रैस रिटर्न्स"[8] में रम्पिलस्टिल्टस्किन अपने अपराधों के लिये जेल में रहने के **127**वें साल में "पिनोकियो जेल" की **30**वी मंजिल में बन्द कर दिया जाता है। इसमें इसका नाम रम्पी[9] है। यह उम्र में **127** साल से भी बड़ा है।

यह एक बहुत ही छोटा आदमी है जिसकी ऑखें फूली हुई हैं। बटन जैसी नाक है। इसके इतने छोटे बाल हैं कि ऐसा लगता है जैसे इसने हैल्मैट पहन रखी हो।

---

[7] This description is taken from the Web Site : https://thelandofstories.fandom.com/wiki/Rumpelstiltskin

[8] The Land of Stories: The Enchantress Returns". by Chris Colfer. Little Brown Books for Young Readers. 2013.

[9] Rumpy

यह बड़े कौलर की कमीज पहनता है। यह अपनी छोटी छोटी टॉगों पर कसी हुई पैन्ट पहनता है और नुकीले लाल जूते पहनता है जिनको पहन कर जब यह चलता है तो इसमें घंटियॉ बजती हैं।

यह बौना बना हुआ खानों में काम करता है पर यह वहॉ खुश नहीं है। यह ऐज़मिया[10] को मिल जाता है तो वह इसको अपनी योजनाओं में होने वाले नीचे गन्दे काम करने पर रख लेती है।

यह अपने भाइयों "सात बौने"[11] से अलग है। वे इसको अपने परिवार में शामिल नहीं करते क्योंकि इसने उन सबको ऐज़मिया के लिये काम करने के लिये छोड़ दिया है। जब यह उनको ऐज़मिया की ताकत की चेतावनी देता है तब वे इसकी बात नहीं सुनते।

यहॉ इसकी कहानी कुछ ऐसे दी हुई है —

"रम्पिलस्टिल्टस्किन ऐज़मिया का सहायक बन जाता है इससे वह ज़िन्दगी भर खानों में काम करने से बच जाता है। लेकिन इसके बदले में वह पूर्वीय राज्य की पुरानी रानी के एक नये पैदा हुए बच्चे को लाने के लिये कहा जाता है।

ऐज़मिया इस बात का सारा इन्तज़ाम करती है। वह राजा पर जादू डाल देती है जिससे वह यह सोचने लगता है कि उसको एक ऐसी पत्नी की जरूरत है जो भूसे से सोना कात सके।

---

[10] Ezmia – means "The Enchantress", the evil fairy is the main character of "The Enchantress Returns" novel. She is the villainous fairy of "Sleeping Beauty" and "Beauty and the Beast". She is also tied to the tail of Rumpelstiltskin. She is 100 years old. (From : https://thelandofstories.fandom.com/wiki/Ezmia)

[11] Seven Dwarves

वह एक गॉव की लड़की को चुनता है जो यह कर सकती है और उससे सौदा कर लेता है। रम्पिलस्टिल्टस्किन यह काम नहीं कर सका तो वह यह तय करता है कि वह लड़की को एक मौका देता है कि वह एक बार उसका अपना नाम पता करने की कोशिश करे।

साथ में वह यह भी पक्का कर लेता है कि एक रात पहले उस नाम को सिपाही भी सुन लें। वह बच्चे को बिना लिये भाग जाता है पर कुछ साल तक छिपने के बाद में वह फिर आता है।

जब वह जेल में था तभी वह अपना जादू छोड़ देता है और वहॉ उगे हुए एक फूल की देखभाल करने लगता है। जब ऐज़मिया उसको दोबारा काम पर रखने के लिये आती है तब वह उस फूल को नष्ट कर देती है।

यह कहानी सिन्डरैला की कहानी की तरह से दुनियॉ में चारों तरफ फैली हुई है। जैसे "सुन्दरी और जानवर" फ्रांस की कहानी है। "जंगली हंस" जर्मनी की कहानी है। इसी तरह से रम्पिलस्टिल्टस्किन जर्मनी की कहानी है हालॉकि स्कौटलैंड में यह चरित्र "व्हूपिटी स्टूरी" कहलाता है, आयरलैंड में "ट्रिट ए ट्रौट", एम्स्टरडम में "रिक्डिन रिक्डौन", आइसलैंड में "गिलीट्रुट" और जर्मनी और रूस में "रम्पिलस्टिल्टस्किन"।[12]

[12] "Beauty and Beast" is of France origin, "Wild Swans" is from Germany, "Rumpelstiltskin" is from Germany. He is known as "Whooppity Stoorie" in Scotland, "Trit-a-Trot" in Ireland, "Gilitrutt" in Iceland and "Ricdin Ricdon" in Amsterdam

इस पर कई फिल्में भी बन चुकी हैं। रूस और जर्मनी ने इसके चित्र पर डाक टिकिट भी निकाले हुए हैं।

1 रम्पिलस्टिल्टस्किन–1812[13]

तो जैसा कि तुमने पढ़ा रम्पिलस्टिल्टस्किन की कहानी मूल रूप से जर्मनी की कहानी है जो ग्रिम्स भाइयों ने **1812** में पहली बार प्रकाशित की थी। आज वही कहानी हम तुम्हें यहाँ हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं।

एक बार की बात है कि एक आटा पीसने वाला रहता था जो बहुत गरीब था पर उसके एक बहुत सुन्दर बेटी थी। एक दिन राजा ने उसे बुलाया तो बात करते समय उसने राजा से कहा कि उसके एक बेटी है जो भूसे से सोना कात सकती है।

सो राजा ने उसकी बेटी को तुरन्त ही वहाँ लाने के लिये कहा और उसको हुक्म दिया कि वह एक रात में एक कमरा भरा भूसा सोने में कात दे। और अगर उसने ऐसा नहीं किया तो उसको मार दिया जायेगा। उसको उस कमरे में बन्द कर दिया गया।

वह वहाँ बैठ गयी और रोने लगी क्योंकि उसने तो ज़िन्दगी भर में यह नहीं सीखा था कि वह भूसे को सोने में कैसे बदले।

कि अचानक उसके कमरे में एक छोटा आदमी प्रगट हुआ और उससे पूछा — "तुम मुझे क्या दोगी अगर मैं इस सारे भूसे को सोने में बदल दूँ।"

---

[13] Rumpelstiltskin. By Grimms Brothers. 1812 version. Taken from the Web Site : http://www.sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#rumpelstiltskin
This story was first published in "Kinder-und Hausmarchen". 1st ed. Berlin. 1812.

उसने अपना गले का हार उतारा और उस आदमी को दे दिया। उस छोटे आदमी ने वह कर दिया जिसका उसने वायदा किया था।

अगली सुबह राजा ने वह कमरा सोने से भरा पाया तो उतना सोना देख कर राजा का मन लालच से भर गया। उसने आटा पीसने वाले की बेटी को एक और कमरे में रख दिया जो पहले कमरे से भी कहीं बड़ा था और पूरा का पूरा भूसे से भरा हुआ था।

उसने उससे फिर वही कहा कि वह उस कमरे का पूरा भूसा काट कर सुबह तक सोने में बदल दे नहीं तो उसे अपनी जान खोनी पड़ेगी। वह छोटा आदमी फिर वहॉ आया। उसने उसको अपने हाथ की अॅगूठी दी और उसने वह सारा भूसा फिर सुबह तक सोने में बदल दिया।

तीसरी रात को राजा फिर आया और इस बार उसने उसको एक बहुत ही बड़े कमरे में रख दिया जो पिछले दोनों कमरों से भी बहुत बड़ा था और पूरा भूसे से भरा हुआ था। राजा बोला — "अगर तुमने आज मेरा यह काम कर दिया तो मैं तुमसे शादी कर लूॅगा।"

तब वही छोटा आदमी फिर वहॉ आया और बोला — "मैं यह काम फिर सकता हूॅ मगर इस बार तुम्हें मुझे अपना पहला बच्चा देना होगा।"

लड़की बहुत दुखी थी सो इस दुख में उसने उससे वायदा किया कि वह वैसा ही करेगी। अगले दिन जब राजा ने सारा भूसा सोने में बदला हुआ देखा तो उसने उस लड़की से शादी कर ली।

समय आने पर उसने एक बेटे को जन्म दिया तो वही छोटा आदमी उसको सामने प्रगट हुआ और अपने वायदे के अनुसार उसका बच्चा मॉगा। रानी ने उससे बहुत विनती की कि वह उसका बच्चा उसके पास ही रहने दे। उसके बदले में वह उसको बहुत सारा खजाना देगी पर वह नहीं माना।

आखिर वह बोला — "ठीक है। मैं इस बच्चे को लेने के लिये तीन दिन बाद लौटूँगा। अगर उस समय तक तुम मेरा नाम बता दोगी तो तुम यह बच्चा रख सकती हो।"

दो दिन तक रानी बहुत सारे नाम सोचती रही पर वह उसका कोई नाम नहीं सोच सकी। वह बहुत दुखी हो गयी। तीसरे दिन राजा शिकार पर से वापस आया तो उसे बताया कि किस तरह से दो दिन पहले जब वह एक घने जंगल में अपना शिकार ढूँढ रहा था उसको एक छोटा सा घर दिखायी दिया।

वहॉ उसने देखा कि एक अजीब सा आदमी एक टॉग पर खड़ा हुआ यह गाते हुए नाच रहा था।

आज मैं रोटी बनाऊँगा कल मैं शराब बनाऊँगा
तब मैं रानी के नये बच्चे को यहॉ लाऊँगा
यह बहुत अच्छा है कि कोई नहीं जानता कि मेरा नाम रम्पिलस्टिल्टस्किन है

रानी तो यह सुन कर बहुत खुश हो गयी। सो जब वह छोटा आदमी फिर उसके बच्चे को लेने के लिये आया और रानी से पूछा — "योर मैजेस्टी। मेरा क्या नाम है।"

तो रानी बोली — "तुम्हारा नाम कौनरैड है।"

"नहीं।"

"तो क्या तुम्हारा नाम हैनरिच है।"

"नहीं।"

"तो तुम्हारा नाम रम्पिलस्टिल्टस्किन है।"

छोटा आदमी चिल्ला कर पड़ा — "तुम्हें यह नाम जरूर ही शैतान ने बताया होगा।"

कह कर वह वहॉ से तेज़ी से भाग गया और फिर कभी नहीं देखा गया।

2 रम्पिलस्टिल्टस्किन–1857[14]

ग्रिम्स ब्रदर्स द्वारा लिखा गया रम्पिलस्टिल्टस्किन का कई रूपों के बाद यह आखिरी रूप **1857** में प्रकाशित किया गया था। इससे पहले हमने तुम सबके लिये इसका सबसे पहला रूप दिया था जो उन्होंने **1812** में प्रकाशित किया गया था।

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब आटा पीसने वाला था जिसकी एक बहुत सुन्दर बेटी थी। एक बार ऐसा हुआ कि उसकी राजा से बात हुई तो उसे प्रभावित करने के लिये उसने राजा से कहा कि उसकी बेटी भूसे को सोने में कात सकती थी।

यह सुन कर राजा ने आटा पीसने वाले से कहा — "यह तो बड़ी अच्छी कला है। यह तो मुझे बहुत अच्छी लगी। अगर तुम्हारी बेटी इतनी ही होशियार है जितनी कि तुम बता रहे हो तो कल तुम उसे मेरे महल में ले कर आओ। मैं उसका इम्तिहान लूँगा।"

अगले दिन आटा पीसने वाला अपनी बेटी को राजा के पास ले कर गया। जब वह राजा के महल पहुँची तो राजा उसे एक ऐसे कमरे में ले गया जिसमें बहुत सारा भूसा भरा हुआ था। उसने लड़की को एक रील दी और एक चरखा कातने को दिया और

---

[14] Rumplestiltskin. By Grimm Brothers. 1857. Grimm's source : Henriette Dorothea (Dortchen) Wild (1795-1867), and other sources. Translated in English by D. L. Ashliman. © 2002. Taken from : https://sites.pitt.edu/~dash/grimm055.html

उससे कहा कि वह अपने काम पर लग जाये और रात भर भूसा काते। अगर उसने रात भर में यह सारा भूसा सोने में नहीं काता तो सुबह होते ही उसे मार दिया जायेगा।

यह कह कर उसने अपने हाथों से उस कमरे को बन्द कर दिया और वहॉ से चला गया।वह वहॉ अकेली बैठी रह गयी। अब उस गरीब आटा पीसने वाले की बेटी वहॉ अकेली बैठी थी और अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये नहीं जानती थी कि वह क्या करे।

उसे नहीं मालूम था कि भूसे को सोने में कैसे कातना है। उसका डर बढ़ता ही जा रहा था। वह डर इतना बढ़ा कि वह रोने लगी। तभी अचानक से दरवाजा खुला और एक छोटे से आदमी ने अन्दर कदम रखा।

अन्दर आ कर वह बोला — "नमस्ते। मिस मिलर। तुम क्यों रो रही हो?"

लड़की बोली — "ओह मुझे यह भूसा सोने में कातना है और मैं नहीं जानती कि मैं यह कैसे करूँ।"

छोटे आदमी न कहा — "अगर मैं तुम्हारा यह काम कर दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?"

लड़की बोली — "मैं अपने गले का हार तुम्हें दे दूँगी।"

छोटे आदमी ने उससे उसके गले का हार ले लिया और चरखे के पीछे बैठ कर भूसे को सोने के तारों में कातने लगा। उसने तीन बार चरखे का पहिया घुमाया और उसकी एक तकली भर गयी।

उसने दूसरी तकली लगायी और चरखे को फिर तीन बार घुमाया तो फिर से उसकी तकली भर गयी।

इस तरह से वह सारी रात भूसे को कातता रहा और सुबह होने तक उसका सारा भूसा कत चुका था। सारा भूसा सोने के तारों में कता तकलियों के चारों तरफ लिपटा पड़ा था।

सुबह होने पर राजा वहॉ आया और जब उसने भूसे का कता हुआ सोना देखा तो वह तो बहुत खुश हुआ और आश्चर्य में पड़ गया। उसे सोने का लालच हो आया। वह आटा पीसने वाले की बेटी को एक दूसरे भूसे से भरे हुए कमरे में ले गया।

यह कमरा पहले वाले कमरे से बड़ा था और उसने लड़की से कहा कि अगर उसे अपनी जान प्यारी हो तो वह इस भूसे को रात भर में सोने में कात दे।

लड़की फिर से नहीं जानती थी कि वह क्या करे सो उसने फिर से रोना शुरू कर दिया। एक बार फिर दरवाजा खुला और उसमें से फिर से वही छोटा आदमी अन्दर आया और बोला — "अगर मैं तुम्हारा यह काम कर दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?"

लड़की बोली — "मैं अपनी उँगली की अँगूठी तुम्हें दे दूँगी।"

छोटे आदमी ने उससे उसकी अँगूठी ले ली और चरखे के पीछे बैठ कर भूसे को सोने के तारों में कातने लगा। इस तरह सुबह होने तक उसका सारा भूसा कत चुका था।

सुबह होने पर राजा वहॉ आया और जब उसने भूसे का कता हुआ सोना देखा तो वह तो बहुत ही खुश हो गया पर उसका सोने का लालच नहीं गया था। वह उसे एक और बड़े कमरे में ले गया और वहॉ जा कर उससे बोला कि वह रात भर में उस कमरे में रखे भूसे को कात दे।

उसने सोचा कि हालॉकि यह एक आटा पीसने वाले की बेटी है पर अगर यह सारा भूसा सोने में कात देगी तो मैं इससे शादी कर लूॅगा।

जब लड़की अकेली रह गयी ता वह छोटा आदमी तीसरी बार उसके पास लौटा और बोला — "अगर अबकी बार मैं तुम्हारा यह भूसा सोने में कात दूॅ तो तुम मुझे क्या दोगी।"

लड़की बोली — "मेरे पास तो अब तुम्हें देने के लिये कुछ नहीं है।"

"तब तुम मुझसे वायदा करो कि जब तुम रानीबन जाओगी तो तुम मुझे अपना पहला बच्चा दे दोगी।"

आटा पीसने वाली की बेटी ने सोचा "आगे क्या पता क्या होना है और इसके अलावा अब मेरे पास कोई रास्ता भी नहीं है।" जो उसने उससे जो मॉगा उसका वायदा कर दिया। इसके बदले में छोटे आदमी ने रात भर में वह सारा भूसा सोने में कात दिया।

सुबह को जब राजा आया तो जैसा उसने चाहा था वैसा ही उसने पाया तो उसने लड़की से शादी कर ली।

एक साल बाद उसके एक बहुत सुन्दर बच्चा हुआ। उसे छोटे आदमी की याद ही नहीं आयी। एक दिन अचानक ही वह उसके कमरे में प्रगट हुआ और बोला — "अब तुम मुझे वह दो जिसका तुमने वायदा किया था।"

रानी उसे देख कर डर गयी और उससे कहा कि वह उसके बच्चे को छोड़ दे और चाहे तो उसकी सारी सम्पत्ति ले ले पर वह बोला — "दुनियॉ के सारे खजाने से मुझे तो ज़िन्दा चीज़ें अधिक प्रिय हैं।"

षह सुन कर रानी बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी कि छोटे आदमी को उस पर दया आ गयी। वह बोला — "ठीक है ठीक है। मैं तुम्हें तीन दिन का समय देता हूॅ। तब तक अगर तुम मेरा नाम बता दोगी तब तुम अपने बच्चे को रख सकती हो।"

रानी ने सारी रात उसका नाम सोचने में गुजार दी वह केवल उन्हीं नामों को सोचती रही जो बहुत मुश्किल से मिलते हैं। िफर उसने अपना एक दूत बाहर भेजा कि वह जा कर यह पता लगाये कि और दूसरे नाम क्या हो सकते थे।

अगले दिन जब छोटा आदमी आया तो उसने उसे बहुत सारे नाम पढ़ दिये – कैस्पर मैलचिऔर बालज़र पर हर नाम को उसने कहा कि वह उसका नाम नहीं था।

अगले दिन उसने अपने पड़ोस में पता लगाने की कोशिश की कि उन लोगों के क्या क्या नाम थे सो जब अगले दिन जब छोटा

आदमी उसके घर आया तो उसने वे सब नाम उसे पढ़ कर सुनाये तो उसने कहा कि उनमें से भी कोई नाम उसका नाम नहीं था।

तीसरे दिन उसका दूत लौट कर आया तो उसने बताया — "आज भी मुझे कोई नया नाम तो पता नहीं चला पर मैं जब जंगल के किनारे एक ऊँचे पहाड़ के पास पहुँचा जहॉ लोमड़े और खरगोश सोने जा रहे थे तो वहॉ मैंने एक छोटा सा घर देखा।

घर के सामने एक छोटी सी आग जल रही थी और एक छोटा आदमी उसके चारों तरफ एक टॉग पर नाच रहा था। द्याह नाच रहा था —

आज मैं पकाऊँगा कल मैं शराब बनाऊँगा
उसके बाद मैं रानी का नया बच्चा ले कर आऊँगा
यह कितनी अच्छी बात है कि मेरा नाम किसी को नहीं पता
कि मेरा नाम रम्पिलस्टिल्टस्किन है

अब तुम सोच सकते हो कि रानी यह सुन कर कितनी खुश हुई होगी। कुछ देर बाद ही छोटा आदमी वहॉ आया और बोला — "अब बताइये रानी मैडम कि मेरा नाम क्या है?"

रानी बोली — "क्या तुम्हारा नाम कुन्ज़ है?"

"नहीं।"

"तब शायद हैन्ज़ होगा।"

"नहीं।"

"तब तो निश्चित रूप से रम्पिलटिल्टस्किन होगा।"

"किसी शैतान ने तुम्हें बताया है। किसी शैतान ने तुम्हें बताया है।" और गुस्से में आ कर उसने अपनॉ दॉया पैर फर्श पर मारा जिससे वह कमर तक उसमें धॅस गया। फिर दोनों हाथों से उसने अपना बॉया पैर उठा कर अपने आपको बीच से चीर दिया।

3 डबलतुर्क[15]

एक बार एक बहुत ही बड़े बौने को एक बहुत ही सुन्दर लड़की से प्यार हो गया। यह यकीन करने के लिये कि वह लड़की उससे नफरत नहीं करती थी क्योंकि वह बहुत छोटा था साथ ही देखने भालने में भी कोई बहुत अच्छा नहीं था उसने उसके पिता को बहुत पैसा और जमीन दे कर जीत लिया था। इसलिये लड़की को भी उसका प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ गया।

फिर भी उसने उसको उसके वायदे से आजाद करने के लिये कह दिया था कि अगर उसने उसका नाम बता दिया तो वह अपने वायदे से आजाद कर दी जायेगी। यह सुन कर लड़की ने उसका नाम पता करने की बहुत कोशिश की पर वह पता नहीं कर सकी।

अन्त में उसकी किस्मत ने उसका साथ दिया। एक रात एक मछली बेचने वाला ग्रीफ़स्वाल्ड को जाने वाली सड़क पर जा रहा था कि वह एक ऐसी जगह आ पहुॅचा जहॉ चॉदनी में कई बौने नाच गा रहे थे।

उसको यह देखने में बहुत अच्छा लगा सो वह उनका नाच देखने के लिये रुक गया। तभी उसने एक बौने को खुशी से यह

[15] Doubleturk. By JDH Temme. in “Die Erdgeister Greifswald”. 1840. No 216. pp 255-256. Temme does not give this tale a title. It is part of a larger section entitled "The Earth Spirits in Greifswald."

गाते हुए सुना "अगर मेरी दुलहिन को पता होता कि मेरा नाम डबलतुर्क है तो वह मुझे नहीं पा पायेगी।"

अगले दिन मछली बेचने वाले ने इस घटना को ग्रीफस्वाल्ड की एक सराय में बताया। दुलहिन ने यह बात सराय के मालिक की बेटी से सुनी। उसने अन्दाजा लगाया कि शायद यह उसके दुलहे से सम्बन्धित है।

सो एक दिन जब वह बौना उसके घर आया तो उसने उसे डबलतुर्क कह कर पुकारा। इस बात पर वह बहुत गुस्सा हो गया और फिर वहॉ कभी दिखायी नहीं दिया।

4 परज़ीनजैल[16]

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियों के इस संग्रह में हमने यह कहानी तुम्हारे लिये औस्ट्रिया की लोक कथाओं से ली है।

यह बहुत समय पुरानी बात है एक बहुत ही ताकतवर काउन्ट[17] रहता था। चारों तरफ की बहुत सारी जमीन उसके अधिकार में थी। उसके पास वह सब कुछ था जो वह चाहता था। उसके पास पैसा था और खुशी बॉटने वाली उसकी एक पत्नी थी। वह दिन की तरह सुन्दर थी और एक देवदूत की तरह से प्यारी थी।

वे कई महीनों तक साथ साथ खुशी से रहे। उनके दिन मिनटों में गुजर रहे थे। एक दिन काउन्ट शिकार खेलने गया। शिकार खेलते खेलते वह जंगल में काफी दूर चला गया। वह शिकार खेलने में इतना मस्त था कि वह जंगल में इतनी दूर चला गया जितनी दूर वह पहले कभी नहीं गया था।

इस चक्कर में वह अपने साथियों से भी बिछड़ गया। वे उससे बहुत पीछे रह गये। उसने देखा कि वह तो घने जंगल में अकेला खड़ा था।

---

[16] Purzinigele. From Austria. By Ignaz and Joseph Zingerle, Purzinigele, in “Kinder- und Hausmärchen”. Innsbruck. 1852. No. 36, pp. 225-232.
Concerning the countess's second guess on her last day: The word for goat in German is "Ziege," which approximates the second part of Purzinigele's name. This explains why he blushes and pauses to think after hearing the countess's first two guesses on the last day.

[17] Count is a historical title of nobility in certain European countries, varying in relative status, generally of middling rank in the hierarchy of nobility.

कि उसने देखा कि एक बौना उसके सामने खड़ा है। वह छोटा जंगली केवल तीन फीट लम्बा था। उसकी दाढ़ी उसके घुटनों तक लम्बी थी। वह अपनी अंगारे जैसी लाल ऑखों को घुमाता हुआ क्या बोला — "तुम यहॉ क्यों आये हो? यह मेरा राज्य है। तुमको मेरे राज्य में आने की फीस देनी होगी। अगर तुम मुझे अपनी पत्नी नहीं दोगे तो तुम इस जंगल से ज़िन्दा बच कर नहीं जा सकोगे।"

बौने को देख कर और उसके मुॅह से यह सुन कर काउन्ट तो डर के मारे जमा सा खड़ा रह गया। क्योंकि उसने इस बौने की ताकत और नीचता के बारे में बहुत सारी अजीबो गरीब डरावनी कहानियॉ सुन रखी थीं। उसकी बूढ़ी आया उसको उसके बचपन में इसकी कहानियॉ सुनाया करती थी।

पर अब वह क्या करे। यह तो एक बड़ी भारी समस्या थी। डरे हुए काउन्ट को समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह इस परिस्थिति से कैसे बचे सिवाय इसके कि वह उससे बात करे और किसी तरह से बच कर निकले।

काउन्ट बोला — "मुझे माफ कर दें कि मैं आपके राज्य में से जा रहा हूॅ। मुझे इस बात का पता नहीं था कि यह आपका राज्य है। आगे से मैं ऐसा नहीं करूॅगा।"

पर वह जंगली बौना तो इस बात से सन्तुष्ट नहीं था। वह बोला — "तुमको वही करना है जो मैंने कहा है। या तो तुम या फिर वह।"

"तुम्हें और जो कुछ चाहिये वह तुम मुझसे माँग लो मैं तुम्हें दे दूँगा पर इस बात के लिये मुझे मजबूर मत करो।"

ऐसा लगा जैसे वह छोटा आदमी इस बात के ऊपर विचार कर रहा हो। कुछ पल बाद वह बोला — "अगर ऐसा है तो मैं तुम्हारी पत्नी की किस्मत तुम्हारी पत्नी के हाथों में सौंपता हूँ। मैं तुम दोनों को एक महीने का समय देता हूँ। अगर वह तीन बार में मेरा नाम बता दे तो वह तुम्हारी है और तुम आजाद हो, नहीं तो वह मेरी है।"

काउन्ट यह सुन कर थोड़ा सन्तुष्ट हुआ और उसने चैन की साँस ली फिर भी उसके दिमाग पर एक बोझा बना रहा। इसके बाद जंगल के बौने के साथ वह घर चला आया। दोनों बहुत गम्भीर थे दोनों ने सारे रास्ते एक दूसरे से बात नहीं की।

कुछ देर तक चलने के बाद उनको एक बहुत ही पुराना सफेद रंग का फ़र का पेड़ मिला। बौना वहाँ रुका और बोला — "यह मेरे राज्य की सीमा है। मैं तुम्हारी पत्नी का यहीं इस फ़र के पेड़ के पास इन्तजार करूँगा। यह पेड़ उम्र में दूसरे पेड़ों से नौ गुना बड़ा है। तुम्हारी पत्नी तीन बार में तीन तीन नाम बता सकती है। पर अगर ऐसा नहीं हुआ तो फिर मैं तुम्हारे लिये बहुत बुरा हो सकता हूँ।"

इससे आगे काउन्ट धीरे धीरे घर की तरफ चलने लगा क्योंकि उसका दिल बहुत भारी था। वह अपने किले में घुसा बहुत दुखी। जैसे ही वह अपने घर के फाटक के पास पहुँचा उसकी पत्नी ने

उसको खिड़की से देख लिया। सो वह उठी और उसके स्वागत के लिये फाटक तक आयी। वह बहुत खुश थी कि उसका पति घर वापस आ गया था।

पर जल्दी ही उसको लगा कि वह वैसा खुश नहीं था जैसा कि हमेशा रहा करता था। ऐसा लग रहा था जैसे हफ्ते भर की बारिश का सा मौसम हो। यह देख कर वह खुद भी दुखी और चिन्तित हो गयी। उसने काउन्ट से पूछा कि क्या बात है।

जब वे अपने घर में घुसे और अपने बैठने वाले कमरे में आये तो वह थका सा बैठ गया। फिर उसने अपनी पत्नी से वह सब बताया जो उसके साथ जंगल में हुआ था।

काउन्टैस ने जब यह सुना तो वह डर के मारे पीली दिखायी देने लगी। उसके सुन्दर गुलाबी गालों पर ऑसू बहने लगे। महल से सारी खुशियॉ चली गयीं। सब जगह सन्नाटा छा गया।

अब वह अक्सर पेड़ों के कुंज में बैठी रहती और सोचती रहती कि उसकी खुशी तो अब बहुत कम दिनों की थी। या फिर वह कभी किले के चर्च में चली जाती जहॉ वह प्रार्थना करती रहती और रोती रहती।

अब काउन्ट भी शिकार पर नहीं जाता था बस अपनी पुरानी कुर्सी पर बैठा रहता जिस पर बहुत सारा खुदाई का काम हो रहा था। जिस पर उसके पूर्वज बैठे रहते थे। उसका सिर उसके दॉये

हाथ में रखा रहता वह सोचता रहता सोचता रहता। पर किसके बारे में यह उसको पता नहीं था।

इस तरह दिन पर दिन हफ्ते पर हफ्ते गुजरते गये। अब एक महीने में केवल तीन दिन बाकी बचे थे। काउन्ट और काउन्टैस दोनों जंगल़ की तरफ चल दिये जब तक कि वे उस फ़र के पेड़ के पास नहीं पहुॅच गये।

काउन्ट पीछे ही रह गया केवल उसकी पत्नी ही आगे बढ़ी। हालॉकि जंगल बहुत सुन्दर था। वहॉ चिड़ियें चहचहा रही थीं। गिलहरियॉ इधर से उधर कूद रही थीं या फिर पाइन कोनों पर बैठी उनको फाड़ रही थीं। इधर उधर सफेद और लाल जंगली गुलाब खिले हुए थे।

पर काउन्टैस का दिल आज जैसा भारी कभी नहीं रहा था। वह दुखी मन से धीरे धीरे फ़र के पेड़ की तरफ चलती चली जा रही थी। लाल और हरी सुन्दर पोशाक पहने बौना वहॉ उसका इन्तजार कर रहा था।

जब उसने काउन्टैस को देखा तो उसके चहरे पर एक चालाकी की खुशी नाच गयी क्योंकि वह उसको बहुत अच्छी लगी। वह जल्दी से बोला — "ओ कुलीन स्त्री। अब बताओ मेरा नाम क्या है।" हालॉकि उसको यह आशा बिल्कुल भी नहीं थी कि वह तुरन्त ही उसका जवाब देगी।

काउन्टैस ने अन्दाज लगाया — "फ़र स्प्रूस पाइन[18]।"उसने सोचा कि क्योंकि यह जंगल में रहता है इसलिये इसका नाम भी किसी पेड़ के नाम पर होगा।

बौने ने जैसे ही इसे सुना कि वह खुशी से ज़ोर से हॅस पड़ा जब तक कि उसकी हॅसी सारे जंगल में गूॅज नहीं गयी। "तुम ठीक से अन्दाजा नहीं लगा पायीं। देखना शायद तुम कल इससे कुछ ज़्यादा अच्छा कर पाओ। अगर नहीं तो फिर तुम मेरी पत्नी बन जाओगी।"

काउन्टैस यह सुन कर और दुखी हो गयी और नीची निगाह किये फ़र के पेड़ के पास से चली आयी। बौना मुस्कुराते हुए उसके दुख पर खुश वहीं खड़ा रहा। जल्दी ही वह अपने पति के पास आ गयी और आ कर उसे बताया कि आज उसने कितना बुरा किया। वे अपने महल जितने दुखी गये थे उससे कहीं ज़्यादा दुखी हो कर लौटे।

बाकी का दिन बड़ी बेचैनी में कटा। बहुत दुख में कटा। शाम आयी और फिर रात भी जल्दी ही आ गयी। यह रात भी दुख और निराशा में कट गयी। काउन्ट के कमरे में न तो नींद आयी न सपने।

[18] Fir, Spruce and Pine – all are trees' names.

चिड़िया के चहचहाहट शुरू करने से पहले ही काउन्ट और काउन्टैस दोनों ही उठ गये। वे आज के दिन के बारे में चिन्तित थे।

पहले वे अपने महल में बने चर्च गये फिर वहॉ से जंगल गये। वे वहॉ तक पहुँच गये जहॉ वह सफेद फ़र का पेड़ खड़ा हुआ था। इस बार भी काउन्ट पीछे ही खड़ा रहा केवल काउन्टैस ही फ़र के पेड़ तक गयी।

हालॉकि जंगल बहुत सुन्दर था। वहॉ चिड़ियें चहचहा रही थीं। फूल हॅस रहे थे और खिल कर चारों तरफ अपनी खुशबू फैला रहे थे। गिलहरियॉ आदमियों की तरह से खड़ी हुई थीं। पर काउन्टैस का दिल आज बहुत भारी था।

वह ऑसू भरी ऑखों से फ़र के पेड़ की तरफ बढ़ी। जैसे ही वह वहॉ पहुँची तो वह बौना अपनी सुन्दर नीली और लाल पोशाक पहने आगे बढ़ा। जब उसने काउन्टैस को देखा तो एक शरारत भरी खुशी उसके चेहरे पर दौड़ गयी क्योंकि वह उसको बहुत अच्छी लगी थी।

वह जल्दी से बोला — "लेडी काउन्टैस। आप मेरा नाम बतायें।"

काउन्टैस ने अन्दाजा लगाया — "ओट कूटू मक्का।"[19]

[19] Oat, Buckwheat and Corn are the names of cereal or grains. Their pictures are given in this order.

क्योंकि उसने सोचा कि शायद उसका नाम अनाज का नाम हो।

छोटे से बौने ने मुश्किल से ये नाम सुने होंगे कि वह फिर ठहाका मार कर हॅस पड़ा और बोला — "तुम ठीक से अन्दाजा नहीं लगा पायीं काउन्टैस। देखना शायद तुम कल इससे कुछ ज़्यादा अच्छा कर पाओ। अगर नहीं तो फिर तुम मेरी पत्नी बन जाओगी।"

काउन्टैस तो यह सुन कर बहुत ही दुखी हो गयी। धीरे धीरे नीची नजर किये वह फ़र के पेड़ के पास से चली आयी। बौना अपनी कुटिलता की मुस्कान लिये वहीं खड़ा रहा।

वह जल्दी ही अपने पति के पास आयी और उसे बताया कि आज उसने कितना बुरा किया था। उस दिन वे लोग अपने महल पहले दिन से भी ज़्यादा दुखी लौटे। वह सारा दिन दुख के साये में बीता। रात भी दुखी ही बीती। काउन्ट और काउन्टैस दोनों की ऑखें सारी रात एक पल को बन्द नहीं हुईं।

पर रात को तो गुजरना ही था सो रात गुजरी सुबह हुई। सुबह होने से पहले ही दोनों उठ चुके थे। वे फिर अपने किले के चर्च गये प्रार्थना की। और वहॉ से जंगल की तरफ चल पड़े।

अभी सुबह बहुत जल्दी थी। बहुत सारी चिड़ियें अभी भी अपने अपने घोंसलों में सोयी पड़ी थीं। केवल ठंडी ठंडी हवा से पेड़ों की टहनियॉ हिल रही थीं जिससे उन पर लगे पत्तों के हिलने से

सरसराहट की आवाज हो रही थी। नहीं तो सारा जंगल शान्त पड़ा था – जैसे कोई चर्च।

काउन्ट और काउन्टैस दोनों जंगल की तरफ बढ़े जा रहे थे जब तक वे उस सफेद फ़र के पेड़ के पास तक नहीं पहुँच गये। वहॉ आ कर काउन्ट ने काउन्टैस को चूमा तो एक ऑसू उसकी ऑखों से उसकी दाढ़ी पर गिर गया क्योंकि वह इस बारे में अभी कुछ नहीं सोचना चाहता था कि वह उसे फिर देख भी पायेगा भी या नहीं।

काउन्टैस आज पहले दो दिनों के मुकाबले में ज़्यादा मजबूत थी। उसका दिल भी पहले दो दिनों के मुकाबले कम तेज़ धड़क रहा था। उसने अपने पति को गुड बाई कहा और फ़र के पेड़ की तरफ चल दी। पर लो आज वह बौना तो वहॉ कहीं था ही नहीं।

वह अकेली उस फ़र के पेड़ के पास खड़ी रही। वहॉ उसने देखा कि दोनों तरफ गुलाब की झाड़ियॉ लगी हुई थीं। उनसे एक सुन्दर बाड़ बन रही थी।

वह उसी रास्ते पर चल दी। जल्दी ही वह एक घाटी में आ गयी। वहॉ चारों तरफ बहुत सुन्दर सुन्दर फूल खिल रहे थे। पहाड़ी की तरफ अंजीर और अंगूर के बागीचे लगे थे। वहीं उसे बीच मैदान में उसे एक मकान दिखायी दिया।

उसकी एक खिड़की धूप में खूब चमक रही थी। उसकी छोटी सी चिमनी से नीला धुऑ निकलता दिखायी दे रहा था। अन्दर से किसी गीत की आवाज आ रही थी।

जब काउन्टैस ने उस मकान को देखा तो वह अपनी तकलीफ तो भूल गयी और उधर की तरफ ही चल दी। वहॉ पहुँच कर उसने खिड़की से अन्दर यह देखने के लिये झॉका कि क्या वह मकान अन्दर भी उतना ही सुन्दर था जितना बाहर।

उसने देखा कि वह एक छोटा सा प्यारा सा रसोईघर था। उसमें कुछ चीज़ें पक रही थीं। जंगल का वह छोटा आदमी भी वहॉ था। वह चूल्हे के पास खड़ा हुआ था और कभी किसी चीज़ को देखता भालता तो कभी किसी दूसरी चीज़ को।

साथ में वह मुस्कुराते हुए गाता भी जा रहा था —

ओ मेरे ओट्स उबल, मेरी बन्द गोभी पक
यह कितना अच्छा है कि काउन्टैस नहीं जानती कि मेरा नाम परज़िनीजैल है

काउन्टैस ने उसे कई बार सुना और फिर दबे पॉव वहॉ से चली आयी। तुरन्त ही वह फ़र के पेड़ के पास आ कर खड़ी हो गयी ताकि बौना वहॉ उससे पहले न पहुँच न जाये और बौने का इन्तजार करने लगी। आज उससे उसका इन्तजार नहीं हो पा रहा था।

जल्दी ही वह भी वहॉ आ पहुँचा। आज वह पहले से कहीं ज़्यादा सुन्दर लग रहा था। उसके कपड़े आज लाल रंग के धागे से

कढ़े हुए थे और उगते हुए सूरज की तरह चमक रहे थे। आते ही वह काउन्टैस से बोला — "अब बताओ कि मेरा नाम क्या है। यह आखिरी बार है।"

जैसे वह कह रहा हो कि आज यह चिड़िया मेरे हाथ से बच कर कहॉ जायेगी।

काउन्टैस ने कहना शुरू किया "पर..." और अपने सवाल करने वाले की तरफ देखा।

बौना बोला — "यह ठीक नहीं है। अब तुम्हारे पास केवल दो मौके और हैं।"

काउन्टैस बोली — "बकरा।"[20]

इस पर बौने का चेहरा लाल हो गया। उसने कुछ याद करने का बहाना किया फिर बोला — "जल्दी करो तुम्हारे पास केवल एक मौका बचा है।"

काउन्टैस खुशी से भर कर बोली — "परज़िनीजैल।"

अपना नाम सुन कर बौने ने गुस्से से अपनी लाल अंगारे जैसी ऑखें घुमायीं। उसकी मुट्ठियॉ भिंच गयीं। बड़बड़ाते हुए वह वहीं पास की एक झाड़ी में घुस गया।

अब काउन्टैस आजाद थी। वह तुरन्त ही काउन्ट से मिलने भागी जो बड़ी बेचैनी से उसका इन्तजार कर रहा था। दोनों खुशी

[20] Concerning this word, the German word for a goat is "Ziege" which approximates the second part of Purzinigele's name. That is why the Dwarf blushed and paused to think after hearing the Countess' first two guesses on the last day.

खुशी घर लौटे। सब जगह बहुत खुशियॉ मनायी गयीं। वे बहुत सालों तक खुश खुश रहे।

पर परज़ीनीजैल का क्या हुआ? वह तो इतना गुस्सा हुआ कि वहॉ से भाग ही गया और फिर कभी दिखायी नहीं दिया।

5 कूज़ीमुगेली[21]

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहाानियों के इस संग्रह की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये औस्ट्रिया देश की लोक कथाओं से चुनी है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जो शादी करना चाहता था पर उसने यह निश्चय किया हुआ था कि वह किसी और से शादी नहीं करेगा जब तक कि उसके काले बाल और उसी रंग की काली ऑखें न हों। उसे इस बात से कोई मतलब नहीं था कि वह किसी कुलीन परिवार से हो या किसी नीचे परिवार से।

इस तरह से उसने यह घोषणा सारे राज्य में करवा रखी थी कि ऐसे बाल और ऑखों वाली सब लड़कियॉ उसके पास आ कर इकट्ठा हों। बहुत सारी आयीं भी पर किसी का भी काला रंग उसकी मर्जी के मुताबिक नहीं था। थोड़े में कहो तो हर लड़की में कोई न कोई कमी थी।

एक कोयला जलाने वाला अपनी बेटी के साथ जा रहा था तो किले के सामने भीड़ देख कर उसकी बेटी ने उससे पूछा कि वहॉ ऐसा क्या है जो इतनी भीड़ है।

उसके पिता ने उसे बताया कि राजा किसी ऐसी लड़की से शादी करना चाहता था जिसके बाल और ऑखें बहुत काले हों और एक

[21] Kruzimugeli. A folktale from Austria. By Theodor Vernaleken. 1896. Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#kruzimugeli

ही रंग के हों। पर अभी तक उसको अपनी पसन्द की लड़की नहीं मिली है।

कोयला जलाने वाले की बेटी के बाल और ऑखें दोनों ही बहुत काले थे सो उसने पिता से पूछा कि क्या वह वहॉ जा सकती थी।

पिता ने कहा — "क्या तुम बेवकूफ हो? क्या तुम्हें लगता है कि वह तुमसे शादी कर लेगा?"

लड़की ने कहा कि फिर भी वह भी महल में जा कर देखना चाहेगी। पिता ने उसको इजाज़त दे दी और वह महल में चली गयी। जब वह महल की तरफ जा रही थी तो उसे एक छोटा आदमी मिला जिसने उससे कहा — "अगर तुम रानी बन जाओ तो तुम मुझे क्या दोगी।"

लड़की बोली — "ओ छोटे आदमी मैं तुम्हें क्या दे सकती हूॅ। मेरे पास तो कुछ भी नहीं है।"

छोटा आदमी बोला — "ठीक है तुम्हारे पास अभी कुछ नहीं है तो न सही। पर तुम रानी बन जाओगी। तुम तीन साल तक मेरा नाम याद रखना। मेरा नाम कूज़ीमुगेली है। अगर तुम्हें यह नाम याद नहीं रहा तो तुम मेरी हो जाओगी।"

लड़की बोली — "अगर तुम मुझसे केवल यही चाहते हो तो मैं इसे याद रखूॅगी।" और महल की तरफ भाग गयी। उसने छोटे

आदमी की बातों पर ध्यान नहीं दिया जो अभी भी उसको उसके पीछे से हाथ मलता हुआ सन्तुष्ट सा घूर रहा था।

जैसे ही राजा ने कोयला बेचने वाले की बेटी को देखा उसने उससे शादी करने का फैसला कर लिया। उसके बाल बहुत काले थे और उसकी ऑखें भी कालेपन से चमक रही थीं। राजा ने उससे शादी कर ली और वे खुशी खुशी रहने लगे।

वह इतनी खुश थी कि उसको पता ही नहीं चला कि उसके तीन साल कब गुजर गये। जब उसको याद आयी तो वह तो बहुत डर गयी। क्योंकि वह तो उसका नाम ही भूल गयी थी।

अब वह हमेशा दुखी रहती और सारा दिन रोती रहती। राजा जो उसको बहुत प्यार करता था हर समय उसको नयी नयी चीज़ों से हॅसाने और खुश रखने की कोशिश करता पर उसकी सब कोशिशें बेकार जातीं।

जब भी कभी वह उससे पूछता कि वह क्यों इतनी उदास है तो वह जवाब देती कि वह उसे यह बात नहीं बता सकती।

एक दिन जंगलों की देखभाल करने वाला शाही नौकर राजा के खाने के लिये शिकार की खोज में घूम रहा था कि उसने एक बहुत छोटा सा आदमी देखा जिसने आग जलायी और उसके चारों तरफ बड़ी खुशी से नाचने लगा। नाचते नाचते वह गाता जा रहा था —

कितना अच्छा है कि नौजवान रानी नहीं जानती
कि मेरा नाम कूज़ीमुगेली है

शिकारी ने यह सुना और अपने घर चला गया। वह रानी से महल के बागीचे में मिला जहॉ रानी बहुत दुखी सी बागीचे में घूम रही थी। उसने तुरन्त ही उसको जंगल में घटी घटना के बारे में बता दिया।

जैसे ही उसने कूज़ीमुगेली नाम सुना तो उसे उस छोटे आदमी का नाम याद आ गया और उसके चेहरे पर तो हॅसी खेल गयी। वह तो यह नाम सुन कर इतनी खुश हुई कि खुशी के मारे अपना आपा ही भूल गयी। अगले दिन तीन साल खत्म होने वाले थे तो अगले दिन ही वह अपना नाम जानने के लिये आने वाला होगा।

और वाकई अगले दिन ही वह छोटा आदमी अपना नाम जानने के लिये आ पहुॅचा। आते ही वह बोला — "योर हाइनैस। क्या आपको अभी भी मेरा नाम याद है। आप तीन बार मेरा नाम बताने की कोशिश कर सकती हैं और अगर तीनों बार आप गलत हुईं तो आप मेरी हैं। "

रानी बोली — "शायद तुम्हारा नाम स्टैफ़ैल है।"

छोटा आदमी खुशी से चिल्ला कर बोला — "नहीं तो।"

रानी बोली — "तो तुम्हारा नाम वील होगा।"

वह फिर खुशी से चिल्ला कर बोला — "नहीं यह भी नहीं है।"

रानी ने मुॅह लटका कर कहा — "तो क्या तुम्हारा नाम कूज़ीमुगेली है।"

यह सुन कर वह बिना कुछ कहे एक गरज की आवाज के साथ दीवार में से हो कर बाहर की तरफ निकल गया। इससे दीवार में जो छेद हुआ वह किसी तरह भी ठीक नहीं कराया जा सका।

पर राजा और रानी बहुत समय तक खुशी खुशी रहे।

6 टौम टिट टौट[22]

एक बार की बात है कि एक स्त्री थी। उसने पॉच पाई बेक कीं। जब उसने उनको ओवन से बाहर निकाला तो वे कुछ ज़्यादा ही सिक गयी थीं और उनका खोल कुछ ज़्यादा ही सख्त हो गया था कि वे खायी नहीं जा सकती थीं।

सो उसने अपनी बेटी से कहा — "डार्टर। इन पाइयों को आलमारी में रख दो और इनको वहॉ कुछ देर के लिये छोड़ दो तो ये फिर से मुलायम हो जायेंगी।"

पर लड़की ने अपने मन में सोचा "अगर ये फिर से मुलायम हो जायेंगी तो मैं इनको अभी खा लेती हूँ।" यह सोच कर वह बैठ गयी और उसने वे पॉचों पाई खा लीं।

जब शाम को खाना खाने का समय हुआ तो मॉ ने कहा — "जाओ वहॉ से एक पाई उठा लाओ। मुझे यकीन है कि वे सब अब ठीक हो गयी होंगी।"

---

[22] Tom Tit Tot. A folktale from England. By Joseph Jacob, "English Fairy Tales". 1890.
Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#tomtittot
Jacobs' note on his source :
Contributed by Mrs. Walter-Thomas to the "Suffolk Notes and Queries" of the *Ipswich Journal,* 1877, and reprinted by Mr. E. Clodd in a paper on "The Philosophy of Rumpelstiltskin" in *Folk-Lore Journal,* vii [1889], 138-43. I have reduced the Suffolk dialect.... One of the best folk-tales that have ever been collected, far superior to any of the continental variants of this tale with which I am acquainted. Mr. Clodd sees in the class of name-guessing stories, a "survival" of the superstition that to know a man's name gives you power over him, for which reason savages object to tell their names.

लड़की वहॉ गयी और चारों तरफ देखा तो वहॉ तो कुछ भी नहीं था सिवाय प्लेटों के। सो वह मॉ के पास वापस आयी और बोली — "नहीं मॉ वे तो अभी ठीक नहीं हुई हैं।"

मॉ ने आश्चर्य से पूछा — "क्या एक भी नहीं।"

वह बोली — "हॉ एक भी नहीं।"

मॉ बोली — "वे ठीक हुई या नहीं पर मुझे उनमें से एक अपने खाने के लिये चाहिये।"

लड़की बोली — "पर अगर वे ठीक नहीं है तो आप उन्हें कैसे खा सकती हैं।"

मॉ बोली — "हॉ मैं खा सकती हूॅ। जा और जा कर मेरे लिये उनमें से सबसे अच्छी पाई ले आ।"

लड़की बोली — "अच्छी या बुरी। अब वहॉ कोई पाई नहीं है। मैंने सारी पाई खा लीं और आपको अब कोई पाई नहीं मिल सकती जब तक आप अब और पाई न बनायें।"

मॉ को बहुत गुस्सा आया। वह अपन चरखा ले कर दरवाजे के पास जा कर बैठ गयी और वहॉ बैठ कर सूत कातने लगी। जैसे जैसे वह सूत कातती जाती थी वह गाती जाती थी —

मेरी डार्टर ने पॉच खा ली हैं आज पॉच पाई खा ली हैं
मेरी डार्टर ने पॉच खा ली हैं आज पॉच पाई खा ली हैं

वहॉ का राजा उधर से गुजरा तो उसने यह गीत तो सुना पर वह यह नहीं समझा कि वह क्या गा रही थी। सो वह रुक गया और उससे पूछा कि वह क्या गा रही है। स्त्री इस सवाल से बहुत शर्मिन्दा हुई सो उसने गाया —

मेरी डार्टर ने आज पॉच लच्छी कात ली हैं मेरी डार्टर ने आज पॉच लच्छी कात ली हैं

राजकुमार ने अपने मन में कहा "हे भगवान। मैंने तो कभी नहीं सुना कि किसी ने इतना सूत काता हो।"

वह स्त्री से बोला — "देखिये। मुझे शादी करनी है। मैं आपकी बेटी से शादी करना चाहता हूॅ। पर सुनिये। साल के ग्यारह महीने वह जो चाहे खा सकती है और जितनी पोशाकें चाहे पहन सकती है और जिसके साथ चाहे उठ बैठ सकती है। पर साल के आखिरी महीने में उसको पॉच लच्छियॉ रोज कातनी पड़ेंगी। और अगर वह ऐसा नहीं करेगी तो मैं उसे मार दूॅगा।"

स्त्री बोली — "ठीक है।"

क्योंकि उसने सोचा कि यह शादी तो बहुत बढ़िया रहेगी। और जहॉ तक पॉच लच्छियों का सवाल है जब समय आयेगा तब देखा जायेगा। यह करने के बहुत सारे तरीके निकल आयेंगे। या फिर यह भी हो सकता है वह इस बात को भूल ही जाये। सो उसने अपनी बेटी की शादी राजकुमार से हो गयी।

पर जब समय गुजरने लगा तो उसको लच्छियों की याद आयी। उसको आश्चर्य हुआ कि यह बात उसे अभी भी याद है या नहीं क्योंकि इसके बारे में अभी तक उसने एक शब्द भी नहीं कहा था। उसने सोचा शायद वह इस बात को बिल्कुल ही भूल चुका है।

खैर आखिरी महीने के आखिरी दिन राजकुमार उसको एक ऐसे कमरे में ले आया जो उसने पहले कभी देखा नहीं था। उस कमरे में कुछ नहीं थे सिवाय एक चरखे और एक बैठने के स्टूल के।

उसको वह कमरा दिखा कर वह बोला — "कल तुम्हें इस कमरे में रुई के साथ बन्द कर दिया जायेगा और अगर शाम तक तुमने पॉच लच्छियॉ न कातीं तो तुम्हें मार दिया जायेगा।" और वह अपने काम पर चला गया।

यह सुन कर वह बहुत डर गयी। वह हमेशा से ही बहुत लापरवाह रही थी। उसको कातना भी बहुत अच्छा नहीं आता था। अगर किसी ने उसकी सहायता नहीं की तो कल वह क्या करेगी। यही सोचते हुए वह रसोईघर में पड़े एक स्टूल पर बैठ गयी और रोने लगी।

तभी अचानक उसने दरवाजे पर एक हल्की सी खटखटाने की आवाज सुनी तो उठी और दरवाजा खोला तो उसने देखा कि एक पूँछ लगी छोटी सी काली सी चीज़ खड़ी थी।

उसने उत्सुकता से ऊपर की तरफ देखा और पूछा — "तुम क्यों रो रही हो?"

लड़की बोली — "तुमसे मतलब?"

वह बोला — "कोई बात नहीं। फिर भी तुम क्यों रो रही हो?"

लड़की बोली — "अगर मैंने तुम्हें बता भी दिया तो उससे कोई फायदा नहीं है।"

वह अपनी पूँछ घुमाता हुआ बोला — "तुम अभी यह नहीं जानतीं।"

लड़की बोली — "ठीक है। अगर तुम्हें बताने में कोई अच्छाई नहीं है तो कोई नुकसान भी नहीं होगा।" उसने उसको पाई खाने से ले कर अब तक की सारी बातें बता दीं।

उस काली छोटी चीज़ ने कहा — " मैं एक काम करूँगा। मैं तुम्हारी खिड़की पर रोज आऊँगा तुमसे पॉच लच्छी रुई ले जाऊँगा और शाम को तुम्हें कता हुआ सूत ले आऊँगा।"

लड़की ने पूछा — "इसके लिये तुम क्या लोगे?"

उसने अपनी ऑखों के कोने से एक तरफ देखते हुए कहा — "मैं हर रात तुम्हें तीन बार अपना नाम अन्दाज लगाने के लिये दूँगा और अगर तुम एक महीने से पहले मेरा नाम बता दोगी तो ठीक है वरना तुम मेरी हो जाओगी।"

लड़की ने सोचा कि एक महीने में तो वह उसका नाम बता ही देगी सो उसने हॉ कर दी। उसने कहा "ठीक है।" उसकी पूँछ फिर से घूम गयी।

अगले दिन उसका पति उसको उस कमरे में ले गया और उसे वहॉ छोड़ दिया। उसमें रुई थी और उसका दिन का खाना था। वह बोला — "लो यह है रुई। अब तुम इसे कातो। और शाम तक अगर यह नहीं कती तो शाम को तुम्हें मार दिया जायेगा।"

कह कर उसने दरवाजे को ताला लगाया और चला गया। जैसे ही वह गया खिड़की पर दस्तक हुई। वह उठी और उसने खिड़की खोली तो वही काली छोटी चीज़ उसके किनारे बैठी हुई थी।

उसने पूछा — "कहॉ है रुई?"

लड़की बोली — "लो यह रही रुई।" कह कर उसने उसको रुई दे दी।

जब शाम हो गयी तब खिड़की पर एक बार फिर से दस्तक हुई। वह उठी और जा कर खिड़की खोली तो देखा कि वही छोटा आदमी अपनी बॉह पर सूत की पॉच लच्छियॉ लटकाये खड़ा था।

उसने उसको कता हुआ सूत दिया और कहा "अब बताओ मेरा नाम।"

"क्या तुम्हारा नाम बिल है?"

"नहीं यह मेरा नाम नहीं है।" कह कर वह फिर से अपनी पूँछ हिलाने लगा।

"क्या तुम्हारा नाम नैड है?"

"नहीं।" कह कर उसने फिर से अपनी पूँछ हिलायी।

"ठीक है। तब तुम्हारा नाम मार्क होगा।"

"नहीं वह भी नहीं।" कह कर वह वहॉ से भाग गया।

जब शाम को लड़की का पति आया तो पॉच लच्छी सूत देख कर बहुत खुश हुआ। वह बोला — "सो आज की रात तो मैं तुम्हें मारने वाला नहीं। कल तुमको तुम्हारी रुई और खाना फिर से उसी कमरे में मिल जायेगा।" कह कर वह वहॉ से चला गया।

अब हर दिन रुई लायी जाती। लड़की को उस रुई और दिन के खाने के साथ उस कमरे में बन्द कर दिया जाता। कुछ देर बाद वह काली छोटी चीज़ आती उससे रुई ले जाती और शाम को पॉच लच्छी कता हुआ सूत दे जाती।

इस बीच सारा दिन लड़की उसके लिये नामों के बारे में सोचती रहती पर रोज ही वह निराश हो जाती क्योंकि उसकी तीनों कोशिशें बेकार जातीं। उनमें से उसका कोई नाम नहीं निकलता।

ऐसा करते करते सारा महीना बीत गया। महीने के आखिरी दिन से पहले दिन शाम को वह काली छोटी चीज़ पॉच लच्छियॉ ले कर आयी और लड़की से पूछा — "क्या तुमने अभी तक मेरा नाम पता नहीं किया?"

"क्या तुम्हारा नाम निकोडैमस है?"

"नहीं यह नहीं है।"

"तो क्या सैमिल है?"

"नहीं। वह भी नहीं।"

"तो क्या मैथूसेलम है?"

"नहीं। यह भी नहीं है।"

कह कर उसने उसे लाल लाल ऑखों से देखा और बोला — "देखो मैडम। बस अब तुम्हारे पास केवल कल का दिन और है। अब अगर तुम कल भी नहीं बता पायीं तो बस फिर तुम मेरी हो जाओगी।"

यह सुन कर तो लड़की बहुत डर गयी। तभी उसने राजकुमार के आने की आवाज सुनी।

जब वह अन्दर आया तो उसने लड़की के हाथों में पॉच सूत की लच्छियॉ देखीं तो बोला — "ठीक है। अब मुझे ऐसा नहीं लगता कि तुम मुझे कल आखीर की पॉच लच्छियॉ नहीं दे पाओगी। और जैसा कि मैंने कहा है मैं तुम्हें कल नहीं मारूॅगा। आज रात का खाना मैं यहॉ तुम्हारे साथ खाऊॅगा।"

सो नौकर लोग उसके लिये भी एक स्टूल ले आये और खाना ले आये। दोनों खाना खाने लगे। उसने एक दो कौर ही खाये होंगे कि वह बीच में ही रुक गया और हॅसने लगा।

लड़की ने पूछा — "क्या हुआ आप क्यों हॅस रहे हैं।"

राजकुमार बोला — "आज जब मैं शिकार पर गया था तो मैं जंगल में एक ऐसी जगह पहुॅच गया जहॉ मैं पहले कभी नहीं गया था। वहॉ एक बहुत बड़ा गड्ढा था। वहॉ मुझे कुछ गुनगुनाने की सी आवाज आयी।

तो मैं अपने घोड़े पर से उतर गया और उस गड्ढे की तरफ चला गया। मैंने गड्ढे में झॉक कर देखा तो उसमें तो एक बड़ा अजीब सी काली सी पूँछ वाली चीज़ थी जैसी शायद ही कभी किसी ने देखी हो।"

"और वह कर क्या रही थी?"

"उसके पास एक बहुत सुन्दर सा छोटा सा चरखा था जो बहुत तेज़ चल रहा था। वह सूत कात रही थी और साथ में अपनी पूँछ घुमाती जाती थी और गाती जाती थी।

निम्मी निम्मी नौट, मेरा नाम है टौम टिट टौट

लड़की ने जब यह सुना तो वह तो अन्दर ही अन्दर खुशी से कूद पड़ी पर उसने एक शब्द नहीं कहा।

अगले दिन जब वह छोटी काली चीज़ सुबह को रुई लेने आयी तो उसके चेहरे पर एक नीचता भरी मुस्कान थी। जब रात को वह कती हुई रुई देने के लिये आया और उसने खिड़की पर दस्तक दी। लड़की ने उसे सुन कर खिड़की खोली और वह अन्दर आया। वह बहुत ज़ोर से मुस्कुरा रहा था और उसकी पूँछ जल्दी जल्दी गोल गोल घूमे जा रही थी।

अन्दर आ कर उसने पॉच लच्छियॉ लड़की को दीं और उससे कहा — "अब बताओ मेरा नाम क्या है?"

लड़की ने डरने का बहाना बनाते हुए कहा — "क्या तुम्हारा नाम सोलोमन है?"

"नहीं।" और वह क़मरे में और आगे बढ़ आया था।

"तो क्या तुम्हारा नाम ज़ैबैदी है?"

"नहीं यह भी नहीं हैं।" कह कर उसने अपनी पूँछ इतनी तेज़ी से घुमायी कि वह दिखायी ही नहीं दे रही थी।

वह फिर बोला — "लड़की। सोच लो। सोच कर बोलो। बस तुम्हारे पास एक मौका और है फिर तुम मेरी हो।"

यह सुन कर वह एक दो कदम पीछे हटी फिर उसकी तरफ देखा और हॅस कर बोली —

निम्मी निम्मी नौट, मेरा नाम है टौम टिट टौट

जब उसने यह सुना तो वह बहुत ज़ोर से चीख पड़ा और अॅधेरे में भाग निकला। फिर उस लड़की ने उसे कभी नहीं देखा।

7 डफ़ी और शैतान[23]

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियों के इस संग्रह की यह कहानी इंगलैंड की लोक कथाओं से ली गयी है।

हमारे पुरखों के बहुत सारे अन्धविश्वास कविताओं में सुरक्षित हैं। जाड़ों की रातों में बैठ कर इनको लोग अपने मनोरंजन के लिये सुनते सुनाते थे। ये गाये भी जाते थे कहे भी जाते थे जिन्हें कहानी सुनाने वाले ही सुनाते थे।

इनको मजेदार बनाने के लिये वे कई बार इनमें कुछ कुछ जोड़ भी देते थे। जाने पहचाने चरित्र और कुछ कुछ घटनाऐं इनमें बढ़ा दी जाती थीं जो लोगों के दिमागों में पड़ी रहती थीं।

यह कहानी या इसके कई हिस्से कौर्निश के क्रिसमस के नाटकों का विषय होता था। जब मैं लड़का ही था तो मुझे अच्छी तरह याद है कि मुझे इस नाटक में बड़ा मजा आता था। इसमें काम करने वाले फार्महाउस के बड़े कमरे में यह नाटक करते थे जिसमें मैं उसे देखने जाता था।

उन्होंने ही हमारे दिमाग में डफ़ी और शैतान टैरीटौप[24] की घटनाओं के बारे में हमें जानकारी दी थी। एक कम्पनी कोरस गाया

[23] Duffy and the Devil. From "Popular Romances of the West of England; or, The Drolls, Traditions, and Superstitions of Old Cornwall". By Robert Hunt. (London: John Camden Hotten, 1871), pp. 239-247. Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#duffy

[24] Duffy and the the Devil Terrytop

करती थी और बीच बीच में अक्सर कविता में वह कुछ कुछ कहते रहते थे जिन्हें नाटक खेलने वाले दिखा नहीं सकते थे।

वह साइडर[25] बनाने का समय था। स्क्वाइर लौवैल औफ ट्रौव, या ज़्यादा अच्छे तरीके से कहो तो "ट्रैवूफ़"[26], सहायता लेने के लिये घोड़े पर सवार हो कर बरियन चर्चटाउन[27] आया। वहॉ लड़के लड़कियॉ सब थे – कुछ पेड़ से सेब तोड़ने के लिये कुछ उनको साइडर मिल को ले जाने के लिये।

जब वह एक गॉव से जल्दी जल्दी हो कर जा रहा था कि किसी आवाज ने उसका ध्यान खींच लिया। कोई बड़ी तीखी आवाज में किसी को डॉट रहा था।

वह जैनी चिगविन[28] के मकान के दरवाजे पास आया जहॉ एक बुढ़िया अपनी सौतेली बेटी डफ़ी को उसके सिर पर अपनी पोशाक की स्कर्ट से बहुत बुरी तरह से मार रही थी जिसमें वह राख भर कर ला रही थी।

उसने इससे बहुत सारी राख उड़ा दी थी इतनी कि स्क्वाइर का गला करीब करीब रुँध गया था और उसे कुछ दिखायी भी नहीं दे रहा था।

[25] Cider – a kind of drink made from apples – apple cider.
[26] Squire Lovel of Trove, or more correctly Trewoof
[27] Burian Churchtown
[28] Janey Chigwyn

स्क्वाइर बोला — "क्या बात है जैनी खुश हो जाओ। यह तुम्हारे और डफ़ी के बीच क्या चल रहा है।"

जैनी चिल्लायी — "यह बहुत आलसी हो गयी है। यह अपना सारा समय लड़कों के साथ पीछे भागने में निकाल देती है। यह कभी दलिया बनाने के लिये या मोजे बुनने के लिये या सूत कातने के लिये घर में नहीं रुकती।"

डफ़ी बोली — "आप इनकी बात पर विश्वास न करना, योर औनर। मेरी बुनाई और कताई तो पारिश[29] में सबसे अच्छी है।"

इस तरह कुछ देर तक दोनों की जबानी लड़ाई चलती रही। स्क्वाइर भी पहले तो उन्हें लड़ते देखता रहा फिर उसने तय किया कि वह डफ़ी को अपने घर ट्रोव ले जायेगा क्योंकि यह सब देखते देखते उसको डफ़ी की शक्ल सूरत अच्छी लगने लगी थी।

स्क्वाइर लौवैल ने उन दोनों बूढ़ी और नौजवान स्त्रियों को लड़ते छोड़ा और अपना काम करने चला गया। जब तक वह वापस लौटा तब दोनों में सुलह हो चुकी थी।

पर जब लौवैल ने डफ़ी को अपने घर ले जाने की इच्छा प्रगट की कि वह उसकी नौकरानी की सूत कातने में सहायता करेगी तो बूढ़ी जैनी अपनी पूरी ताकत से चिल्लायी कि "अरे यह तो बहुत सुन्दर सूत कातने वाली रहेगी।"

[29] Parish is an area under a church

डफ़ी भी धीमी आवाज में बोली — "मुझे एक मौका दीजिये। मेरा कता हुआ सूत पारिश में सबसे अच्छा है।"

स्क्वाइर बोला — "हॉ हॉ जल्दी ही तुम्हारा सूत भी देखेंगे। जैनी को भी तुमसे थोड़ा आराम मिलेगा और तुमको भी उससे थोड़ा आराम मिलेगा। आओ मेरे घोड़े पर कूद कर बैठ जाओ।"

कहने से पहले ही वह स्क्वाइर के पीछे घोड़े पर बैठ चुकी थी। वे चुपचाप ट्रोव की तरफ चल पड़े।

स्क्वाइर की नौकरानी करीब करीब अन्धी थी। उसकी एक ऑख एक बूढ़े जादूगर[30] ने बाहर निकाल ली थी और इसी वजह से उसकी दूसरी ऑखों की रोशनी भी जल्दी जल्दी जा रही थी। यह बूढ़ी स्त्री डफ़ी को देख कर बहुत खुश हुई कि उसके कातने बुनने के काम में उसका हाथ बॅटाने वाला कोई आ गया।

डफ़ी को नौकरानी से मिलवाया गया तो उसके बाद नौकरानी उसको वह कमरा दिखाने ले गयी जहॉ ऊन रखी हुई थी और जहॉ गर्मियों में रुई काती काती थी। फिर उसने उससे अपना काम शुरू करने की विनती की।

अब सच तो कहा ही जाना चाहिये। डफ़ी तो एक बहुत आलसी लड़की थी। न तो वह बुन सकती थी और न ही वह कात सकती थी। यहॉ उसको अकेले छोड़ दिया गया ताकि वह अपने काम का सबसे अच्छा नमूना दिखा सके।

[30] Translated for the words "Old Wizard"

उस कमरे में फर्श से ले कर छत तक ऊन भरी पड़ी थी। दफ़ी उसकी तरफ बड़ी निराशा से देखने लगी फिर चरखे पर बैठ गयी और चिल्लायी — "सत्यानाश हो इस कातने और बुनने का। स्क्वाइर के लिये शैतान को कातने और बुनने दो मैं इस बात की परवाह नहीं करती।"

जैसे ही डफ़ी ने यह बोला कि उसने सरसराहट की एक आवाज सुनी और एक अजीब सा दिखायी देने वाला आदमी वहॉ प्रगट हो गया। उसकी ऑखें बहुत ही अलग थीं। उनमें से बिजली की सी चमक निकल रही थी। उसका मुॅह कुछ अजीब सा टेढ़ा सा था। उसकी नाक भी कुछ झुकी हुई थी जिससे ऐसा लगता था जैसे वह कोई बहुत अक्लमन्द हो।

वह काले रंग के कपड़े पहने था और डफ़ी की तरफ बढ़ रहा था। उसकी हर कदम पर आवाज हो रही थी।

इस भले आदमी ने डफ़ी से पूछा — "प्यारी डफ़ी तुम क्यों रो रो रही हो। मैं तुम्हारे लिये कताई और बुनाई दोनों कर दूॅगा।"

डफ़ी ने आश्चर्यचकित होते हुए कहा "धन्यवाद।"

"प्यारी डफ़ी तुम तो एक लेडी[31] बन जाओगी।"

डफ़ी मुस्कुराती हुई बोली — "धन्यवाद योर औनर।"

[31] Lady means a civilized honorable woman in the society.

आदमी ने चालाकी से डफ़ी की तरफ देखते हुए कहा — "पर प्यारी डफ़ी याद रखना कि इस सबके बदले में तीन साल बाद अगर तुमने मेरा नाम नहीं बताया तो तुमको मेरे साथ चलना होगा।"

यह सुन कर डफ़ी बिल्कुल नहीं डरी न ही वह देर तक हिचकिचायी। उसने तुरन्त ही अपने अनजान और अजीब से दिखायी देने वाले साथी इस बात का सौदा कर लिया।

साथी ने उसे बताया कि बस उसे केवल इच्छा प्रगट करनी है और उसका सब काम हो जायेगा। जहॉ तक कातने बुनने का सवाल है उसको जिस चीज़ की भी जरूरत है सब उसको काली भेड़ की खाल के नीचे मिल जायेगा।

इतना कह कर वह चला गया। कैसे और कहॉ गया वह यह तो डफ़ी नहीं बता सकी पर अब वह वहॉ नहीं था। डफ़ी गर्मी में जब तक के लिये सो गयी जब तक उसका समय होता था।

उसने धागे की इच्छा की तो उसको काली भेड़ की खाल के नीचे मिल गया। उसने वह धागा नौकरानी को दिया जिसने स्क्वाइर को दिखाया तो वह भी आश्चर्य से बोला कि ऐसा कता हुआ धागा तो उसने पहले कभी नहीं देखा था।

अब अगर धागा सुन्दर था तो उससे बुने हुए मोजे भी बहुत सुन्दर थे। वे रेशम की तरह से मुलायम थे और चमड़े की तरह से मजबूत थे। स्क्वाइर ने तुरन्त ही उन्हें पहन लिया और उस दिन शाम को जब वह शिकार से वापस आया उसने कह दिया कि वह

डफ़ी के बनाये धागे के ही मोजे पहनेगा और कोई नहीं। उन्हें पहन कर अजीब अजीब जगह घूमता रहा पर उसकी टॉगों में एक खरौंच तक नहीं आयी। वे हड्डी की तरह सूखे थे।

बस अब क्या था डफ़ी के मोजों की बहुत तारीफ होने लगी। डफ़ी का समय भी अब बहुत अच्छा निकलने लगा। वह जो चाहे सो करती जहॉ जाना चाहती वहॉ जाती।

एक दिन वह आधा दिन तक नाचती रही और दूसरी स्त्रियों से गपशप मारती रही जो वहॉ अपना अनाज पिसवाने के लिये लायी थीं। उन पुराने अच्छे दिनों के समय में पारिश की स्त्रियॉ अपनी अपनी मक्का पिसवाने के लिये लाया करती थीं और अपने आप ही उसे पीसती थीं।

जब कुछ स्त्रियॉ इकट्ठी हो जातीं तो जब मक्का पिसती रहती वे सब मिल कर आपस में गपशप मारतीं नाचतीं एक दूसरे को कहानियॉ सुनातीं। वे कभी नाच कहीं करती कभी कहीं।

किसी किसी मौके पर चक्की वाले से उसकी वायलिन बजाने की भी विनती की जाती। जबकि दूसरे मौकों पर वे चलनी के ऊपर भेड़ की एक खाल बॉध लेतीं और उससे तम्बूरीन[32] का काम लेतीं।

[32] A musical instrument to provide with the beat. See its picture above.

इसलिये डफ़ी हमेशा ही चक्की पर जाने का कोई न कोई बहाना ढूँढ लेती और पारिश के सबसे अच्छे नाचने वालों के साथ बहुत देर तक नाचती रहती।

चक्की वाले की पत्नी बूढ़ी बैट[33] एक जादूगरनी थी। उसने यह पता लगा लिया था कि डफ़ी का काम कौन करता था। डफ़ी और वह एक दूसरे की अच्छी दोस्त थीं पर उसने कभी डफ़ी की बुनाई वाली दोस्त के बारे में किसी से कुछ कहा नहीं और न ही उसके अधूरे मोजे के बारे में कहा जिसमें हमेशा ही एक फन्दा कम रह जाता था।

रविवार को बहुत सारे लोग स्क्वाइर के मोजे देखने के लिये बरियन चर्च जाते थे। स्क्वाइर हमेशा ही गर्व के साथ उनको दिखाने के लिये क्रास पर रुकता। वह उनको पहन कर किसी भी मौसम में शिकार के लिये जा सकता था। वे मोजे इतने मजबूत थे जितना कि चमड़ा।

आजकल डफ़ी को बहुत सारे नौजवान ढूँढते रहते। सो स्क्वाइर ने इस डर से कि वह उस सुन्दर लड़की को न खो दे जो उसके लिये बहुत काम की चीज़ थी खुद ही उससे शादी कर ली।

सो समय और जगह के अनुसार वह अब "लेडी लौवैल" बन गयी थी पर पड़ोस के सभी लोग उसे डफ़ी लेडी के नाम से पुकारते।

[33] Bet – name of the miller's wife

लेडी लौवैल उस शैतान से खूब काम लेती रही। मोजे सब तरह के नीचे पहनने वाले कपड़े और बहुत सुन्दर सुन्दर चीज़ जो पहले कभी देखी नहीं गयी थीं वह उससे एक हुक्म पर बनवाती रही और उनको स्क्वाइर को यह कह कर देती रही कि वह सब उसने बनाये हैं।

इस तरह से डफ़ी का समय बड़ा अच्छा गुजर रहा था पर फिर भी जब तक वह लेडी बनी रहती तब तक वह अन्दर से बहुत खुश नहीं थी। वह अपना ज़्यादा से ज़्यादा समय चक्की की मालकिन बुढ़िया के पास गुजारती थी बजाय ट्रोव के महल के कमरे में वैठ कर।

स्क्वाइर आनन्द मनाता पीता। जब तक डफ़ी उसको बुने हुए कपड़े देती रहती वह डफ़ी की निल्कुल भी परवाह नहीं करता।

समय जल्दी ही बीत गया। तीन साल पूरे होने को आये। डफ़ी ने उस शैतान का नाम जानने के लिये अपनी सारी तरकीबें लगा दी थीं पर वह अभी तक उसका नाम नहीं पा सकी थी।

अब उसे डर लगने लगा था कि अब उसको अपने दोस्त के साथ जाना पड़ेगा और यह सोच सोच कर तो वह बहुत ही दुखी होती चली गयी।

बूढ़ी बैट ने उसको खुश करने की बहुत कोशिश की, उससे यह भी कहा कि वह अपने लम्बे अनुभव से बहुत सारे आदमियों को देखने भालने से मिलने पर और अॅधेरे में रहने वाले जीवों को जानने

की वजह से वह उसको आखिरी समय पर जरूर ही इस अॅधेरे से बाहर निकाल लेगी।

डफी रोज अपने कमरे में जाती। वहॉ रोज ही वह शैतान बैठा रहता और उस पर हॅसता रहता। यह सब देख देख कर वह तो बस पागल सी हो गयी थी। रोज एक दिन निकल जाता। अब उसने बैट से बात करने का पक्का इरादा कर लिया था। बैट ने उसको अपनी ताकत देने का वायदा किया।

उस शाम को डफ़ी लेडी को अपने घर के नीचे वाले कमरे से बैट के घर एक चमड़े का थैला भर के बहुत ही तेज़ बीयर ले कर आना था।

जब तक स्क्वाइर शिकार से नहीं आ जाता तब तक वह सोने के लिये नहीं जा सकती थी चाहे वह कितनी भी देर से क्यों न आता और स्क्वाइर उससे जो कुछ भी कहता वह उसके जवाब में कुछ कह भी नहीं सकती थी।

वह बीयर ले कर चक्की पर गयी और वहॉ से वह स्क्वाइर का इन्तजार करने के लिये बहुत दुखी हो कर लौटी। जैसे ही लेडी लौवैल चक्की से वापस लौटने लगी बूढ़ी बैट अपने कन्धे पर बीयर का थैला ले कर बाहर निकली।

उसने दरवाजा बन्द किया पानी चक्की के बाहर फेंका अपना लाल रंग का शाल पहना और बाहर चल दी। उसके पड़ोसियों ने उसको बोलीट[34] की तरफ जाते देखा।

एक आदमी ने उसको पाइपर्स के पास से गुजरते देखा और फिर डौन्से मेन[35] से होते हुए नीचे जाते देखा पर उसको बाद वह उसे नहीं देख सका। कोई नहीं बता सका कि वह बूढ़ी बैट इतनी रात को कहॉ गयी।

डफ़ी बहुत देर तक उसका इन्तजार करती रही। धीरे धीरे कुत्ते भी वापस आने लगे। उनके मुॅह से उनकी जबान बाहर निकल रही थी सो उनके शरीर भी झाग से ढके हुए थे। नौकरों ने बताया कि शायद उन्होंने शैतान के बिना सिर के कुत्ते देख लिये हैं।

यह सुन कर डफ़ी तो बहुत डर गयी। आधी रात हो गयी थी पर स्क्वाइर का कहीं पता नहीं था। आखिर वह लौटा पर वह तो पागल सा हो रहा था जैसे उसका दिमाग खराब हो गया था। वह गा रहा था —

यह शैतान के लिये है लकड़ी की कुल्हाड़ी और फावड़े के साथ

वह न तो पिये हुए था और न ही डरा हुआ था बस थोड़ा सा अलग सा व्यवहार कर रहा था। काफी देर के बाद स्क्वाइर लौवैल बैठा और बोला — "मेरी प्यारी डफ़ी। तुम बहुत दिनों से मुस्कुरायी

[34] Boleit

[35] Dawnse Main

नहीं हो पर आज मैं तम्हें ऐसा कुछ बताऊँगा जिससे अगर तुम मर भी रहोगी तब भी तुम्हारे चेहरे पर हँसी आ जायेगी। काश तुमने भी वह देखा होता जो मैंने देखा था —

यह शैतान के लिये है लकड़ी की कुल्हाड़ी और फावड़े के साथ

जैसा कि तरीका था डफ़ी ने उसका कोई जवाब नहीं दिया। उसने उसको वही कहने और करने दिया जो वह चाहता था। आखिर स्क्वाइर ने उसे नीचे लिखी कहानी सुनायी। स्क्वाइर की फूगो होल[36] में जादूगरनियों से मिलने की कहानी —

प्रिय डफ़ी। मैं सुबह दिन निकलते ही शिकार पर चला गया था। मैंने बहुत सारी जगह शिकार किया पर मुझे कहीं एक खरगोश भी नहीं मिला सो मैंने सोचा कि मैं आज सारी रात शिकार करूँगा।

सो रात हो गयी और मैं घूमता हुआ डौन्से मेन आ गया। वहाँ मुझे एक खरगोश दिखायी दिया। इतना सुन्दर खरगोश मैंने पहले कभी नहीं देखा था। वह इधर उधर घूमता रहा पर हम उसे पकड़ नहीं सके।

यह एक अच्छी दौड़ थी। वह हमको फूगो होल ले गया। कुत्ते भी उसके पीछे पीछे चले गये। उल्लू और चिमगादड़ मेरे सिर के ऊपर उड़ रहे थे। हम पानी और कीचड़ में से जा रहे थे। कम से कम हम एक मील से ज़्यादा तो चले ही होंगे।

[36] Fugoe Hole

मुझे नहीं मालूम था कि वह जगह इतनी बड़ी थी। आखिर हम पानी के एक बड़े गड्ढे के पास आ गये। वहॉ आ कर कुत्तों की सूँघने की ताकत खत्म हो गयी। वे भोंकते हुए पीछे की तरफ भागने लगे। वे ऐसे डर गये थे जैसे उन्होंने मौत देख ली हो।

मैं थोड़ा आगे बढ़ा और फिर वहॉ से वापस घूमा तो मैंने पानी की दूसरी तरफ एक आग जलती हुई देखी। वहॉ सेन्ट लैवैन की बीसियों जादूगरनियॉ[37] बैठी हुई थीं।

कुछ फूलों पर बैठी हुई थीं। कुछ झाड़ुओं पर बैठी थीं। कुछ अपने तीन टॉग के स्टूल पर बैठी हुई तैर रही थीं। और कुछ जो वेल्स में गाय का दूध दुह रही थीं बड़ी बड़ी लीक[38] ले कर आ गयी थीं। इन सबके साथ अपनी चक्की वाली बैट भी थी जिसके कन्धे पर मेरा शराब का चमड़े का थैला रखा था।

सब जादूगरनियॉ आग के पास बहुत जल्दी ही इकट्ठी हो गयी थीं और आग को किसी अजीब तरीके से हवा देने लगी थीं जिससे वह नीली लपट में जलने लगी थी।

उसके बाद मैंने वहॉ एक अजीब सा आदमी देखा जो काले कपड़े पहने था और जिसकी पूँछ बॅटी हुई थी और जो ऊपर की तरफ खड़ी हुई थी और घूम रही थी।

---

[37] Witches of St Leven

[38] Leek is a type of vegetable like spring onion. See its picture above.

जैसे ही बैट ने उसको आते हुए देखा तो अपने हाथ में लिया डंडा जमीन पर मारा और गाया —

यह शैतान के लिये है लकड़ी की कुल्हाड़ी और फावड़ा
खोदने वाला डिब्बा बुशैल के पास और उसकी पूँछ टेढ़ी खड़ी हुई

इस पर उस अजीब से आदमी और सब जादूगरनियों ने हवा की तरह से नाचा। वह अजीब आदमी तेज़ और तेज़ नाचे जा रहा था। वे लोग इतनी आवाज कर रहे थे जैसे हर एक के पैर में बजने वाली कोई चीज़ बॅधी हो।

हर बार जब भी वह काले कपड़े पहने वाला आदमी बैट के पास आता वह मेरे बीयर के थैले में से एक बहुत बड़ा घूँट पी लेता जैसे वह मेरी सबसे अच्छी बीयर पी रहा था। जब तक उसका दिमाग नहीं घूम गया।

फिर वह ऊपर नीचे कूदने लगा घूम घूम कर बहुत ज़ोर ज़ोर से गाते हुए नाचने लगा —

डफ़ी माई लेडी, तुमको कभी पता नहीं चलेगा, क्या?
कि मेरा नाम टैरीटौप है टैरीटौप – टौप

जब स्क्वाइर ने ये लाइनें गायीं तो वह अचानक रुक गया क्योंकि उसको लगा कि यह सुन कर डफ़ी तो मरने वाली हो रही है। वह पीली पड़ गयी थी फिर लाल पड़ गयी पर फिर पीली पड़ गयी।

खैर डफ़ी ने कुछ कहा नहीं और स्क्वाइर आगे बोला — "नाच के बाद सब जादूगरनियॉ आग के चारों तरफ गोला बना कर बैठ गयीं और फिर से उसको हवा दे कर तेज़ करने लगीं जब तक उसमें से नीली लपट उठ उठ कर बहुत ऊपर तक नहीं जाने लगी।

तब वह शैतान आग में जा कर कूद कूद कर नाचने लगा। कभी कभी वह जादूगरनियों के बीच में भी चला जाता और उनके बहुत ज़ोर ज़ोर से ठोकर मारता।

आखिर मैं भी इस आनन्द को देख कर हॅसने लगा और ज़ोर से बोला — "ओ निक[39]। नाचते रहो नाचते रहो।"

लो वहॉ तो रोशनी चली गयी और मुझे वहॉ से बिजली की रफ्तार से भागना पड़ गया क्योंकि सारी जादूगरनियॉ मेरे पीछे पड़ी थीं। मैं किसी तरह से घर आया और अब मैं यहॉ हूॅ।

तुम यह सुन कर हॅसी नहीं डफ़ी?"

तब डफ़ी भी हॅस पड़ी और वह दिल से हॅसी। जब वे इस घटना का काफी आनन्द ले चुके तो दोनों सोने चले गये।

एक घंटे बाद ही तीन साल खत्म होने वाले थे। डफ़ी ने तुरन्त ही बहुत सारी बुनाई की चीज़ों की इच्छा की और उनसे अपने घर की हर आलमारी भर ली।

वह सबसे अच्छे कमरे में थी जिसकी आलामारियों में वह कुछ मोजे और ठूॅसने की कोशिश कर रही थी।

[39] Nick is another name of Satan/Devil.

कि तभी वह काले कपड़े पहने वाला आदमी उसके सामने प्रगट हुआ और बहुत नीचे झुक कर और कुछ उसका अपमान करते हुए सा बोला — "प्यारी डफ़ी। देखो मैं अपने वायदे का पक्का हूँ और मैंने तुम्हारी वफादारी से तीन साल सेवा भी की जैसा कि मेरे और तुम्हारे बीच सौदा हुआ था। इसलिये मुझे पूरी आशा है कि अब तुम मेरे साथ चलोगी और कोई अड़ंगा नहीं लगाओगी।

डफ़ी मुस्कुरायी और बोली — "मुझे डर है कि तुम्हारा देश बहुत गर्म है जिससे मेरा गोरा रंग काला पड़ सकता है।"

वह बोला — "अब वह इतना भी गर्म नहीं है जितना लोग कहते हैं डफ़ी। पर अब तुम मेरे साथ आओ। मैंने तुमसे वायदा किया था वह निभाया अब तुम्हारे जैसी स्त्री भी अपना वायदा निभायेगी मैं ऐसी आशा करता हूँ। क्या तुम मेरा नाम बता सकती हो?"

डफ़ी ने नम्रतापूर्वक मुस्कुरा कर कहा — "तुमने एक बिल्कुल सच्चे भलेमानस की तरह से व्यवहार किया है तो भी मैं इतनी दूर तक जाना नहीं चाहूँगी।"

शैतान गुर्राया और उसकी तरफ बढ़ने लगा जैसे वह उसे जबरदस्ती पकड़ लेगा।

"हो सकता है तुम्हारा नाम लूसीफ़र[40] हो।"

[40] Lucifer – another name of Satan/Devil.

उसने अपना पैर जमीन पर ज़ोर से दे मारा। वह बोला — "लूसीफ़र? लूसीफ़र तो मेरे देश में मेरे नौकर का नाम है।"

अचानक वह शान्त हो गया और फिर शान्ति से बोला — "लूसीफ़र से तो मैं कभी अपने दरबार में बोलता ही नहीं। पर अब तुम मेरे साथ चलो।

जब मैं लेडीज़ के लिये कातता हूँ तो उनसे भी मैं अच्छे व्यवहार की आशा करता हूँ। तुम्हारे पास अभी दो मौके और हैं मेरा नाम बताने के लिये। पर वे तुम्हारे किसी काम के नहीं क्योंकि मेरा नाम इस धरती पर सामान्य रूप से किसी को नहीं मालूम।"

डफ़ी एक बार फिर मुस्कुरायी और बोली — "क्या तुम्हारा नाम बील्ज़ीबब[41] है?"

यह सुन कर तो वह कितना खुश हुआ कि वह हँसते हँसते दोहरा ही हो गया। "बीलज़ीबब? शायद वह मेरा कोई दूर का भाई होगा।"

डफ़ी ने फिर नम्रता से कहा — "हो सकता है। मुझे आशा है कि योर औनर मेरी इस बात का बुरा नहीं मानेंगे और मेरी गलती को मेरी अज्ञानता समझ कर टाल देंगे।"

अब हमारा शैतान तो बहुत ही खुश था। वह डफ़ी के चारों तरफ खुशी से नाचने लगा। और यह देख कर कि वह हिचकिचा रही थी उसको जबरदस्ती पकड़ने लगा।

---

[41] Beelzebub

डफ़ी चिल्लायी — "रुक जाओ रुक जाओ। अब तुम ईमानदारी से बताना कि क्या तुम्हारा नाम "टैरीटौप" नहीं है?"

काले कपड़े पहने वाले भले आदमी ने डफ़ी की तरफ देखा और डफ़ी ने उसकी ऑखों में देखा और बोली — "टैरीटौप। अगर तुममें हिम्मत है तो मना करो।"

टैरीटौप उसके पास से दूर हटते हुए बोला — "एक भला आदमी अपने नाम को कभी मना नहीं करता। मैंने तुम्हारे जैसी एक नौजवान लड़की से हारने की कभी आशा नहीं की थी डफ़ी। पर अब मैं तुम्हारे साथ रहने की खुशी नहीं ले पाऊॅगा।"

यह कह कर टैरीटौप आग और धुऑ बन कर वहॉ से गायब हो गया और शैतान की बुनाई सारी की सारी राख बन गयी।

स्क्वाइर लौवैल शिकार पर गया हुआ था। उस दिन दिन ठंडा था कि अचानक मोजा उसकी टॉगों से नीचे गिर गया और घर का बुना हुआ कपड़ा उसकी पीठ पर से। सो वह बस अपनी कमीज और बूट पहने घर वापस आ गया। वह ठंड से अधमरा हो रहा था।

स्क्वाइर ने इस सब का जिम्मेदार बूढ़ी बैट को ठहराया जिसको कि उसने सोचा कि क्योंकि उसने उसके पीछे अपने कुत्ते दौड़ाये थे इसी लिये उसने उसको उस बात की सजा दी है। वह खरगोश के रूप में उसके आगे भाग रही थी।

जैसे कि हॅसोड़िये इस कहानी को सुनाते हैं उनका कहना है कि अब डफ़ी मोजे नहीं बना सकती थी तो स्क्वाइर गुस्सा हो गया। बहुत बार आपस में लड़ाई हुई बहुत बार समझौते हुए। डफ़ी का पुरान प्रेमी स्क्वाइर को पीटने के लिये बुलाया गया।

जल्दी और देर से बूढ़ी बैट ने ही किसी तरह से उनकी सुलह करवायी।

8 विन्टरकोल[42]

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी यूरोप महाद्वीप के इंगलैंड देश में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक बहुत बड़े जंगल के किनारे एक बहुत ही गरीब लकड़हारा अपनी पत्नी और एक छोटी सी बच्ची के साथ रहता था। उसको अक्सर पता नहीं होता कि वह अपनी भूख से कैसे लड़े सो उसने अपनी बच्ची को जंगल में छोड़ कर आने फैसला किया।

सो जब दोबारा से ऐसा मौका आया जब उसके पास अपने और अपने परिवार के लिये खाने के लिये कुछ भी नहीं था सो उसने अपनी बच्ची का हाथ पकड़ा और उसको ले कर उसे जंगल में छोड़ने के लिये चल दिया।

वहॉ उसने उसे एक घास के मैदान में ले जा कर छोड़ दिया और उससे कहा कि वह वहॉ खेले वह अभी उसको थोड़ी देर में आ कर ले जायेगा। बच्ची को धोखा देने के लिये उसने लकड़ी का एक टुकड़ा बॉध दिया जो जब हवा चलती थी तो पेड़ से टकरा कर ऐसी आवाज करता था जैसे कोई कुल्हाड़ी से लकड़ी काट रहा हो।

[42] Winterkolbl. A folktale from Hungary, German tale by Theodor Vernaleken. 1896. Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#winterkoelbl

इस तरह से वह बच्ची धोखा खा गयी। उसने स्ट्रौबैरीज़ ढूँढी. फूलों से खेली फिर इधर उधर घूम कर थक कर कुछ देर बाद सो गयी।

जब उसकी ऑख खुली तो चॉद आसमान में ऊँचे चमक रहा था पर उसका पिता अभी तक नहीं आया था। बच्ची ने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया फिर अपने पिता को ढूँढने के लिये और गहरे जंगल में चलती चली गयी।

अचानक उसको एक छोटी सी आग जलती दिखायी दी जिसके चारों तरफ भगोने जैसे बर्तन रखे हुए थे। उत्सुकता से वह उनकी तरफ दौड़ पड़ी। उसने देखा कि आग बुझने वाली हो रही थी सो उसने उसको जलाने के लिये आग में कुछ सूखी हुई डंडियॉ डालीं और साथ में फूँक भी मारी।

उसने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि एक छोटा सा आदमी उसकी तरफ देख कर मुस्कुरा रहा है। वह पूरे भूरे रंग का था और उसकी दाढ़ी सफेद थी जो उसकी भूरी जैकेट से एक अजीब से ढंग से बाहर निकल रही थी। वह उसकी छाती से नीचे तक जा रही थी।

छोटी बच्ची उसको देख कर डर गयी और वहॉ से भाग जाने वाली थी कि बौने ने उसको पुकारा। बच्ची ने बेमन से उसका कहा माना। बौने ने उसके गाल इतने प्यार से सहलाये कि उसका सारा डर निकल गया।

भूरे आदमी ने उससे पूछा कि उसका क्या नाम था उसके पिता का क्या नाम था। रोते रोते उसने उसे अपना और अपने पिता का नाम बताया।

बौने ने उसको तसल्ली दी कि वह उसके साथ ठहर सकती थी। वह उसको अपनी बेटी की तरह से रखेगा। बच्ची तैयार हो गयी और वह बूढ़ा छोटा आदमी उसको अपने घर ले गया। उसका घर एक बहुत बड़ा खोखला पेड़ था। पत्तियों का ढेर उसके बिस्तर का काम करता था।

छोटे आदमी ने एक और बिस्तर बनाया ताकि बच्ची वहॉ लेट सके आराम कर सके।

अगली सुबह बौने ने बच्ची को जगाया और उससे कहा कि उसको कहीं जाना है। वह उसके घर की देखभाल करे – घर यानी वह पेड़ जिसमें वह रहता था और जिसको वह अपना घर कहता था।

वह जल्दी ही वापस आ गया और उसने उसको वह सब कुछ दिखाया जो वह ले कर आया था। उसने उसको खाना बनाना और घर के दूसरे काम काज करने सिखाये। इस तरह दिन जल्दी ही गुजर गया और कब रात हो गयी उसे पता ही नहीं चला।

वहॉ वे खुशी और आराम से कई साल तक रहे। अब वह लड़की अपने बौने पिता से करीब करीब एक फुट लम्बी हो गयी थी।

एक शाम बौने ने बच्ची से कहा कि अब वह समय आ गया है जब वह उस बच्ची के आगे आने वाली ज़िन्दगी के बारे में कुछ सोचे।

उसने कहा कि वहॉ की रानी को जो वहीं आसपास रहती थी एक वफादार नौकरानी की जरूरत थी। वह उसके पास गया था और बच्ची को अपनी सेवा में रखने के लिये विनती की थी। रानी जी मान गयी हैं। उसने आगे यह भी कहा कि अगर वह वहॉ ठीक से व्यवहार करेगी तो सारी ज़िन्दगी सुखी रहेगी।

अगली सुबह ही वे दोनों किले की तरफ चल पड़े। लड़की को रानी से मिलाया गया तो रानी ने भी उसको स्वीकार किया। सो लड़की ने अपने माने हुए पिता से इजाज़त ली और रानी की सेवा में चली गयी। पिता ने उससे वायदा किया कि वह उससे हर रविवार को मिलने आता रहेगा।

वहॉ उसने बहुत दिनों तक काम नहीं किया था कि नौजवान राजा जो अपने दुश्मन राजा से लड़ने गया हुआ था जीत कर घर वापस लौटा। उसने लड़की को देखा तो वह उसकी तरफ आकर्षित हो गया और उससे शादी की इच्छा प्रगट की। उसकी मॉ को भी लड़की बहुत पसन्द थी सो उसने उसे शादी की इजाज़त दे दी।

जब भूरा आदमी, जैसा कि किले में लोग उसे जानते थे, लड़की से मिलने आया तो रानी मॉ ने उसे बताया कि उसका बेटा उससे

शादी करना चाहता है और वह खुद भी इस बात के लिये तैयार हो गयी है पर अब वह उसकी राय जानना चाहती है।

बूढ़े ने दुखी हो कर कहा — "राजा मेरी छोटी सी बेटी से शादी कर सकता है अगर वह मेरा नाम बता दे तो।"

यह कह कर वह किला छोड़ कर जंगल चला गया। हमेशा की तरह से उसने आग जलायी और अपना खाना बनाना शुरू कर दिया। जब वह अपना खाना बना रहा थ तो साथ में अपना गाना भी गाता जा रहा था।

बर्तन उबल मेरे बर्तन उबल ताकि राजा यह जान ले कि नेरा नाम विन्टरकोल है

राजा को यह सुन कर बहुत चिन्ता हुई और उसने तुरन्त ही अपने एक नौकर को उसका नाम जानने के लिये भेजा। नौकर ने उड़ती उड़ती वे लाइनें सुनी और उल्टे पॉव किले को वापस लौटा। उसने राजा को नाम बताया और इस खबर को देने के लिये बहुत सारे सोने के सिक्के पाये।

जब बौना लौटा तो राजा ने उसका यह कह कर स्वागत किया — "आइये विन्टरकोल जी।"

बूढ़े ने देखा कि वह तो हार चुका है तो उसने भी शादी के लिये हॉ कर दी। शादी की तैयारियॉ शुरू हो गयीं।

विन्टरकोल भी वहॉ आया हुआ था पर उसको किले में रहने की इजाज़त नहीं दी गयी सो वह उस पेड़ के खोखले में अकेला ही रहता रहा।

9 मिस सुन्दरी[43]

एक बार की बात है कि एक बहुत सुन्दर पर बहुत गरीब लड़की थी। एक सौदागर को उससे प्यार हो गया। उसने उससे कहा कि वह उससे शादी कर ले। अब क्योंकि सौदागर लोग यह आशा करते हैं कि उनको बहुत सारा दहेज मिले सो शादी से पहले ही उसने अपने आपको एक शैतान को दे दिया था।

इस तरह शैतान उसके लिये बहुत सारा धन ले कर आया उसने यह इस शर्त पर किया कि एक साल के अन्दर अन्दर वह उसका नाम बता देगी नहीं तो शैतान उसको ले जायेगा।

उसकी शादी सौदागर से हो गयी। शादी हुए भी एक साल होने को आया पर उसे अभी तक शैतान का नाम नहीं मालूम था।

एक दिन एक गड़रिया शहर के बाहर अपने घर में लेटा हुआ था कि उसको कुछ दूरी पर आग जलती हुई दिखायी दी। वह आग की तरफ चल दिया और एक पहाड़ी के पास आ गया।

उसने देखा कि उस आग के चारों तरफ कई लोग नाच रहे थे। उनमें से एक बहुत खुश नजर आ रहा था। वह आग के चारों तरफ कूद कूद कर नाच रहा था —

यह अच्छा है यह अच्छा है कि मिस सुन्दरी नहीं जानती कि मेरा नाम हिप्शे है[44]

---

[43] Mistress Beautiful. A folktale from Germany. By Heinrich Pröhle, "Jungfer Schön," *Kinder- und Volksmärchen* (Leipzig: Avenarius und Mendelssohn, 1853), no. 23, p. 76.
Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#hipche

[44] Hipsche

अगले दिन गड़रिया सौदागर की पत्नी के पास गया और जा कर उसे बताया जो उसने सुना था और देखा था। उसने वह नाम याद कर लिया और जब साल पूरा हुआ तो उसने शैतान को उसका नाम बता दिया।

इस तरह शैतान हार गया और मिस सुन्दरी सौदागर के साथ खुशी खुशी रही। जो पैसा उसने शैतान से लिया था उससे उनका व्यापार देश विदेश दोनों में खूब बढ़ा।

10 ज़िर्कज़िर्क[45]

रम्पिलटिल्टस्किन जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी जर्मनी में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक स्त्री थी जिसको कातना बिल्कुल पसन्द नहीं था। उसका पति उसको कोई भी काम पूरा न करने पर अक्सर डॉटा करता था।

इससे दुखी हो कर वह एक दिन अपनी हालत पर सोचते सोचते घूम रही थी कि अचानक एक बौना उसके सामने आ गया। उसने उससे पूछा — "तुम इतनी दुखी क्यों हो। क्या मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूँ?"

तब उसने उसको सब कुछ बता दिया तो बौना बोला — "अगर तुम जो कुछ तुम्हारे ऐप्रन के नीचे है वह मुझे दे दोगी तो मैं तुम्हारी सहायता कर दूँगा। इसके अलावा अगर तुम मेरा नाम बता दोगी तो फिर उसके बाद मुझे कुछ और देने की जरूरत नहीं है।

स्त्री को इस बारे में दूसरी बार सोचने की जरूरत ही नहीं थी उसने तुरन्त ही हॉ कर दी क्योंकि उसको विश्वास था कि उसके ऐप्रन के नीचे कुछ भी नहीं था।

---

[45] Zirkzirk. A folktale from Germany. From : "Sagen, Gebräuche und Märchen aus Westfalen". By Adalbert Kuhn. vol 1. Leipzig: F. A. Brockhaus, 1859. no 337. pp. 298-299.
Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#zirkzirk

उस दिन के बाद से उसको काफी धागा मिल जाता था और हर शनिवार को जब उसका पति घर आता और देखता कि उसकी पत्नी ने क्या किया है तो सब कुछ उसे बहुत दिखायी देता।

स्त्री अब खुश थी सन्तुष्ट थी पर बहुत जल्दी ही यह सब बदल गया। क्योंकि अब जल्दी ही उसके बच्चा होने वाला था। सो अब उसकी समझ में आया कि बौने का उसके ऐपन के नीचे की चीज़ से क्या मतलब था।

वह फिर से दुख से भर गयी और उसने अपने पति को सब कुछ साफ़ साफ़ बता दिया। एक दिन पति पहाड़ पर जा रहा था तो उसने चरखा चलने की आवाज सुनी। उसके साथ कोई गा भी रहा था —

यह अच्छा है कि वह आदरणीय स्त्री नहीं जानती कि मेरा नाम ज़िर्कजिर्क है

वह समझ गया कि यही वह है जिससे उसकी पत्नी ने सौदा किया था। वह खुशी खुशी घर लौटा और आ कर सब कुछ अपनी पत्नी को बताया तो उसकी पत्नी भी बहुत खुश हुई।

जब पत्नी के बच्चा हो गया तो वह बौना उसके घर आया और उसका वायदा उसको याद दिलाया। उसने उसी समय उसको उसका नाम बता दिया और उसके बाद वह उसको फिर कभी दिखायी नहीं दिया।

11 सुनहरा कातने वाली[46]

बहुत दूर कहीं लाल सागर के उस पार एक नौजवान लौर्ड रहता था। जब वह बड़ा और समझदार हो गया तो उसने सोचा कि अब उसको दुनियॉ देखने के लिये बाहर निकल जानाा चाहिये। वह अपने लिये अब एक पत्नी भी ढूँढ सकता है जो एक अच्छी गृहिणी की तरह उसका घर सँभाले।

जैसा उसने सोचा था वैसा ही उसने किया भी। वह दुनियॉ देखने चला गया पर उसे कोई अपने मन जैसी पत्नी नहीं मिली। आखीर में वह एक विधवा के घर पहुँच गया। उस विधवा के तीन बेटियॉ थीं और तीनों ही कुँआरी थीं।

उनमें से उसकी दो बड़ी वाली बेटियॉ मधुमक्खी की तरह हर समय काम में ही लगी रहतीं। उसकी सबसे छोटी बेटी का नाम हंका[47] था वह हर उस काम के लिये थकी थकी रहती जिसमें उसको कुछ करना पड़ता।

जब नौजवान लौर्ड उस घर में आया तो वह उनके कताई का समय था। यह देख कर वह आश्चर्यचकित रह गया — "यह कैसे?

[46] The Golden Spinster. A folktale from Hungary and Slav. From "Sixty Folk-Tales from Exclusively Slavonic Sources. By AH Wratislaw. Boston : Houghton. 1890. Taken from the Web Site : https://www.sacred-texts.com/neu/sfs/sfs17.htm

[47] Hanka – name of the youngest daughter of the widow

कि इस समय हंका चिमनी के पास वाले कोने में सो रही है जबकि दूसरी कातने वाली अपने अपने काम में लगी हुई हैं।

उसने उनकी मॉ से कहा — "मॉ जी आप उसको कातने के लिये क्यों नहीं कहतीं। यह काफी बड़ी लड़की है और अब उसको काम करने में आनन्द आना चाहिये।"

मॉ बोली — "ओह नौजवान सर। मैं तो बहुत चाहती हूॅ कि यह काते। इसके लिये मैं खुद उसकी अटेरन[48] भरूॅगी। पर उसके बाद? वह तो एक ऐसी कातने वाली है कि वह सुबह से कातने बैठेगी तो जितनी भी रुई होती है उतनी ही नहीं बल्कि छत का छप्पर भी कात देगी और वह भी सोने के तार में।

नहीं नहीं। कम से कम उसको मेरे सफेद बालों का तो ख्याल रखना चाहिये। इसीलिये मुझे उसे एक दिन की छुट्टी देनी पड़ी।"

नौजवान उम्मीदवार तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया। वह बोला — "अच्छा। अगर ऐसा है तो और अगर यही भगवान की मर्जी है तो आप मुझे उसे एक पत्नी की तरह से दे दें। मेरे पास एक बहुत अच्छी जगह है। मेरे पास बहुत सारी किस्म की रुई है जिनको वह अपना मन भर कर कात सकेगी।"

यह सुन कर उस स्त्री को बहुत देर नहीं लगी। उसने हंका को उसकी गहरी नींद से जगाया। वे दुलहे के लिये आलमारी में निकाल

[48] Translated for the word "Distaff". See its picture above.

कर एक औलिव रंग का रूमाल निकाल कर लाये। दुलहे को सदाबहार फूलों से सजाया और शाम को दोनों की शादी कर दी।

पहले तो उसकी दोनों बहिनें हंका की खुशकिस्मती पर जलने लगीं पर फिर शान्त हो गयीं कि एक दिन वे भी अपनी अपनी उॅगलियों पर अॅगूठी पहनेंगी। क्योंकि उनकी आलसी बहिन को दुलहा मिल गया था।

अगले दिन दुलहे ने अपना घोड़ा तैयार करने के लिये कहा और जब सब तैयार हो गया तो उसने अपनी दुलहिन को एक सुन्दर गाड़ी में बिठाया अपनी सास का हाथ पकड़ कर वायदा किया उसकी बहिनों को विदा कहा और वह गॉव छोड़ दिया।

अच्छे के लिये या बुरे के लिये बेचारी हंका अपने पति के पास दुखी बैठी थी। उसकी ऑखों में ऑसू थे। जैसे मानो बहुत सारे मुर्गी के बच्चे उसकी डबल रोटी खा गये हों। पर नौजवान उससे बातें ही करता रहा। पर हंका तो ऐसे चुप बैठी रही जैसे कोई मछली।

तब नौजवान ने उससे पूछा — "क्या बात है। तुम डरो नहीं। मेरे घर में तुम्हें कोई सोने नहीं देगा। मैं तुम्हें वह सब दूॅगा जो तुम्हें चाहिये। मैं तुम्हें कातने के लिये जाड़े भर कई प्रकार की रुइयॉ दूॅगा।"

पर हमारी हंका तो जैसे जैसे आगे बढ़ती जा रही थी और ज़्यादा दुखी होती जा रही थी।

इस तरह वे शाम को नौजवान के किले पर पहुॅच गये। हंका गाड़ी में से उतरी। खाना खाने के बाद उसको एक कमरे में ले जाया गया जिसमें ऊपर से ले कर नीचे तक कातने का सामान भरा पड़ा था।

वहॉ पहुॅच कर लौर्ड बोला — "देखो यह सब तरह तरह का सामान है। यह अटेरन तकुआ चरखा गुलाबी सेब और मटर के दाने आदि आदि। अगर तुम सुबह तक इस सबको सोने के धागे में कात दोगी तो हम पति पत्नी हो जायेंगे नहीं तो मैं तुम्हें बिना किसी हिचकिचाहट के मरवा दूॅगा।"

इसके बाद नौजवान वहॉ से चला गया और हंका को वहॉ कातने के लिये छोड़ गया।

जब हंका अकेली रह गयी तो वह चरखे पर नहीं बैठी क्योंकि उसको तो सूत बटना भी नहीं आता था। वह दुखी हो कर कहने लगी — "हे भगवान यहॉ तो मेरा अब घोर अपमान होने वाला है।

मेरी मॉ ने मेरी दोनों बहनों की तरह से मुझे काम करना और कातना क्यों नहीं सिखाया। तब मैं घर में शान्ति से रह सकती थी। पर क्योंकि मैं पापिनी हूॅ तो मेरा इसी तरह से अन्त होना ठीक है।"

जब वह इस तरह से बोल रही थी कि एक दीवार फटी और उसमें से एक पुतला सा अन्दर घुसा। उसके सिर पर लाल टोपी थी। उसकी कमर से एक ऐप्रन बॅधा था।

उसके आगे एक छोटी सुनहरी गाड़ी थी जिसे वह आगे धक्का दे रहा था।

उसने हंका से पूछा — "तुम क्यों रो रही हो? तुम्हें क्या परेशानी है?"

"लगता है कि मैं एक पापिन आत्मा हूॅ मुझे रोना नहीं चाहिये बल्कि सोचना चाहिये। उन्होंने मुझे यह सब कल सुबह तक सोने में कातने के लिये कहा है और अगर मैंने यह नहीं किया तो वे मुझे बिना किसी रस्म के मार देंगे। हे भगवान हे भगवान मैं क्या करूॅ। मैं इस अजीब सी दुनियॉ में कितनी लाचार हूॅ।"

पुतले ने कहा — "अगर बस इतनी सी बात है तो मैं तुम्हें बताता हूॅ कि इसे सोने में कैसे कातना है। पर यह मैं तुम्हें एक शर्त पर बताऊॅगा कि मैं तुम्हें अगले साल इसी जगह पर देखूॅगा।

और अगर तुम उस समय मेरा नाम नहीं बता पायीं तब तुम मेरी पत्नी बन जाओगी और मैं तुम्हें इस गाड़ी में बिठा कर ले जाऊॅगा। पर अगर तुमने मेरा नाम बता दिया तो मैं तुम्हें छोड़ दूॅगा।

पर मैं तुम्हें इतनी बात बता दूॅ कि अगर अगले साल के इस समय में तुमने मुझसे छिपने की कोशिश की अगर तुम आसमान में कहीं उड़ भी जाओगी तो मैं तुम्हें ढूॅढ लूॅगा और तुम्हारी गर्दन मरोड़ दूॅगा। क्या तुम इस बात पर राजी हो?"

अब यह बात हंका के लिये कोई आसान तो नहीं था पर वह बेचारी और क्या करती। उसने सोचा कि वह यह सब कुछ भगवान पर छोड़े देती है। वह इस तरह से मरे या उस तरह से।

सो उसने उस पुतले को हॉ कर दी। उसकी हॉ सुन कर पुतले ने अपनी सुनहरी गाड़ी के साथ हंका के चारों तरफ तीन बार चक्कर काटे और चरखे पर बैठ गया और बार बार गाने लगा —

इस तरह हंका इस तरह, इस तरह हंका इस तरह, इस तरह हंका इस तरह

कहते हुए उसने हंका को सुनहरा धागा कातना सिखाया। उसके बाद जैसे वह आया था वैसे ही वह वापस भी चला गया। और उसके जाने के बाद दीवार फिर पहले जैसी हो गयी। अब तो हमारी लड़की हंका सुनहरा धागा कातने वाली हो गयी थी।

वह चरखे पर बैठी और सुनहरा धाग कातने लगी। रुइयॉ खत्म होने लगीं और सोने का धागा बढ़ने लगा। सुबह तक न केवल उसका सारा धागा कत गया था बल्कि उसने रात को थोड़ा आराम भी कर लिया था।

सुबह जैसे ही लौर्ड जागा वह तैयार हो कर सुनहरा कातने वाली के पास पहुॅचा वह तो वहॉ पहुॅच कर सोने की चमक से तो उसकी ऑखें ही चौंधिया गयीं। वहॉ तो सारा का सारा सोना था। पर जब उसको सन्तोष हो गया कि हॉ वह सब सोना ही था उसने अपनी पत्नी को गले लगा लिया और उसे अपनी रानी बना लिया।

अब वे भगवान से डर कर रहने लगे और अगर हमारे लौर्ड पहले हंका को सोना कातने की वजह से प्यार करते थे तो अब उसको उससे ज़्यादा प्यार करने लगे थे क्योंकि इस बीच में उसने लौर्ड को एक प्यारा सा बेटा दे दिया था।

पर कोई ऐस रास्ता नहीं जिसका अन्त न होता था और ऐसा ही हुआ हमारे खुश खुश रहते हुए जोड़े के साथ। दिन पर दिन बीतते गये और उस पुतले का नियत किया दिन भी आ पहुॅचा।

हंका अब और ज़्यादा दुखी रहने लगी। उसकी ऑखें लाल रहने लगीं मानो किसी ने उन्हें भून दिया हो। वह अब कुछ नहीं करती थी सिवाय एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने के।

किसी भी नौजवान लड़की के लिये यह एक बहुत बड़ी बात थी कि पल भर में वह एक अच्छा पति और बेटा खो दे। इधर उसके पति को इस बारे में कुछ पता नहीं था। जितनी अच्छी तरह से वह अपनी पत्नी को बहला सकता था बहला रहा था पर उसको कोई चीज़ आराम नहीं दे पा रही थी।

जब वह अपने बारे में सोचती कि अपने सुन्दर पति की जगह वह कैसे ऊबड़ खाबड़ बौने को पाने जा रही थी वह दुखी हो कर दीवार से अपना सिर टकराने लग जाती।

आखिर उसने अपने आपको सॅभालने की कोशिश की और अपने पति को सब कुछ बता दिया जैसा कि उसके साथ पहली रात को ही हुआ था।

यह सुन कर उसका पति भी डर से सफेदी से चमकायी हुई दीवार की तरह पीला पड़ गया। उसने अपने सारे शहर में मुनादी पिटवा दी कि "अगर किसी को ऐसे ऐसे बौने का पता मालूम हो तो वह उसका असली नाम पता लगा कर लाये। वह उसको उसके सिर जितना बड़ा एक सोने का टुकड़ा देगा।"

यह सुनते ही सब पड़ोसियों में यह खबर फैल गयी "अरे वाह यह तो कितना अच्छा इनाम है।"

इसके बाद वे सब इनाम को लेने के लिये चारों तरफ बिखर गये। सबने सब कोने देखे चूहे के बिल देखे सब जगह ऐसे देखीं जैसे कोई सुई ढूँढता है। पर वे उसके बारे में कुछ भी पता न कर पाये।

न तो कोई ऐसे बौने के बारे में जानता था और न ही किसी ने उसे देखा था। और जहॉ तक उसके नाम का सवाल है उसका तो कोई अन्दाज भी नहीं लगा सका।

यह सब करते करते दिन बीत रहे थे कि आखिरी दिन आ पहुँचा। अब तक उस पुतले के बारे में कोई कुछ भी न जान पाया था और न देख ही पाया था। बेचारी हंका अपने बच्चे को गोद में लिये हुए यही सोचती सोचती बैठी बैठी हाथ मल रही थी कि अब उसको अपने इतने अच्छे पति को छोड़ना पड़ेगा।

उसके दुखी पति की ऑखें भी रोते रोते थक गयी थीं। उसने अपने इस दुख को छिपाने के लिये अपनी बन्दूक उठायी और अपने

प्यारे शिकारी कुत्ते के गले में रस्सी बॉधी और शिकार के लिये चल दिया। दोपहर के बाद उसने करीब एक घंटा ही शिकार किया होगा चारों तरफ मौसम हल्का हो गाया।

बारिश भी हो गयी तो ऐसे मौसम में कुत्ते को बाहर छोड़ना ठीक नहीं होता। सारे लोग भी ऐसे तूफान से बचने के लिये कहीं कहीं जगह ढूँढने लगे। लौर्ड और उसका नौकर भी उस घने जंगल में अकेले ही रह गये। वे पूरी तरह से पानी से भीग गये थे। पानी उनके शरीर से टपक रहा था।

तूफान आने से पहले वे इस तूफान में कहॉ शरण लें। वे रात को कहॉ ठहरें। यही सोचते हुए दोनों घूम रहे थे। शायद कहीं किसी गड़रिये की कोई झोंपड़ी मिल जाये पर जहॉ कुछ नहीं होता वहॉ कुछ नहीं होता।

बहुत ज़्यादा ऑखें गड़ा गड़ा कर देखने के बाद उनको एक जगह से धुँआ निकलता देखा तो लौर्ड ने अपने नौकर से कहा "जाओ ओ लड़के और इस धुँए के बारे में जानकारी मालूम कर के लाओ। वहॉ कुछ लोग होंगे। उनसे पूछना अगर वे हमें रात को ठहरने की जगह दे देंगे।"

नौकर उधर गया और एक पल में ही इस समाचार के साथ लौट आया कि न तो वहॉ कोई शैड है न कोई दरवाजा है न कोई आदमी है।"

लौर्ड ने नौकर को दॉत कटकटाते हुए डॉटा — "तुम तो बहुत ही गधे हो। मैं वहॉ खुद जाता हूॅ और तुम्हारी सजा यही है कि तुम यहीं टपकते रहो और जमते रहो।"

सो लौर्ड ने यह जिम्मेदारी अपने हाथ में ली पर दोनों में से कोई भी वहॉ कुछ नहीं ढूॅढ सका। सिवाय इसके कि एक तरफ से धुॅआ निकले जा रहा था।

आखिर परेशान हो कर वह बोला — "कोई भी शैतान किसी भी शैतान को बुला ले मुझे यह पता करना ही है कि यह धुॅआ कहॉ से आ रहा है।"

सो वह खुद उस छेद के पास बैठ गया और उसमें झॉक कर देखने लगा। जब वह यह कर रहा था तो उसे लगा कि धरती के नीचे किसी रसोईघर में खाना बन रहा था और पत्थर की मेज पर दो आदमियों के लिये खाना लगा हुआ था।

इस मेज के चारों तरफ लाल टोपी पहने और एक सुनहरी गाड़ी लिये एक पुतला चक्कर काट रहा था। कुछ कुछ देर में वह यह गाता जा रहा था —

मैंने एक लौर्ड के लिये सोना कातने वाली बनायी है
आज रात वह मेरा नाम जानने की कोशिश करेगी
अगर वह मेरा नाम ठीक बता देगी मैं उसे छोड़ दूॅगा
और अगर वह न बता सकी ताप मैं उसे ले लूॅगा
मेरा नाम मार्टिन्को क्लिनगैस है[49]

[49] Martynko Klyngas

यह गा कर वह फिर से मेज के चारों तरफ भगने लगा —
मैं खाने के लिये नौ खाने बना रहा हूँ मैं उसको एक रेशमी बिस्तर में सुलाऊँगा
अगर वह पता कर लेती है...

नौजवान लौर्ड को इससे ज़्यादा और क्या चाहिये था। वह उसको सुन कर वहॉ से अपने नौकर के पास जितनी तेज़ी से भाग सकता था भाग लिया। अब मौसम कुछ साफ हो गया था सो वह उस जंगल में घर जाने का रास्ता ढूँढ सका।

वह तुरन्त ही घर पहुँच गया। उसने अपनी पत्नी को अभी भी बहुत दुखी पाया। उसकी ऑखों से अभी भी ऑसू बह रहे थे क्योंकि वह अभी भी यही सोच रही थी कि वह अपने प्यारे पति को कैसे छोड़ पायेगी वैसे भी वह बहुत दूर था।

तभी लौर्ड घर आ पहुँचा तो उसके पहले शब्द यही थे — "मेरी प्यारी पत्नी अब तुम्हें दुखी होने की रोने की कोई जरूरत नहीं है। मुझे पता चल गया है तुम्हें जो चाहिये। उसका नाम है मार्टिन्को क्लिन्गौस।"

उसके बाद उसने उसके साथ जो कुछ भी हुआ था वह सब खोल कर बता दिया। कि वह कहॉ गया था क्यों गया था और वहॉ क्या हुआ था।

हंका तो यह सुन कर बहुत खुश हो गयी। उसके तो पैर ही जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। वह अपने पति से जा कर लिपट गयी

और उसे बहुत बार चूमा। वह बहुत खुश थी। वह खुश खुश अपने उसी कमरे में फिर से गयी जिसमें उसने अपनी पहली रात काटी थी – सोने का धागा काता था।

आधी रात को दीवार खुली और वह पुतला अपनी लाल टोपी पहन कर अपनी सुनहरी गाड़ी लिये वहॉ आया जैसे वह पिछले साल आया था। उसने आ कर उसका तीन बार चक्कर काटा —

अगर तुम मेरा नाम बता दो तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा
अगर तुम नहीं बता पायीं तो मैं तुम्हें ले जाऊँगा
बस अन्दाज लगाओ अन्दाज लगाओ

हंका बोली — "अब मुझे अन्दाज तो लगाना ही होगा। तुम्हारा नाम "मार्टिन्को क्लिन्गैस" है।"

जैसे ही उसने यह कहा छोटे बौने ने अपनी गाड़ी पकड़ी अपनी टोपी फर्श पर फेंकी और वैसे ही चला गया जैसे वह आया था। दीवार बन्द हो गयी। हंका ने शान्ति की सॉस ली।

उसके बाद उसने फिर कभी सोना नहीं काता। क्योंकि अब उनको पैसे की जरूरत ही नहीं थी। वे पहले से बहुत अमीर थे। अब वे खुशी खुशी रहने लगे।

उनका बेटा उस पेड़ की तरह से बढ़ने लगा जैसे कोई पानी के किनारे लगा पेड़ बढ़ता है। फिर उन्होंने एक गाय खरीद ली गाय के गले में एक घंटी बॉध दी। हम अपनी कहानी यहीं खत्म करते हैं।

12 आलसी लड़की और उसकी चाचियॉ[50]

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के आयरलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें रम्पिलस्टिल्टस्किन का काम तीन बुढ़ियें करती हैं।

एक समय की बात है कि एक गरीब विधवा अपनी एक सुन्दर सी बेटी के साथ रहती थी। उसकी बेटी थी तो दिन के उजाले जैसी सुन्दर पर वह आलसी बहुत थी जब कि वह स्त्री खुद बहुत ही मेहनती थी।

वह स्त्री हमेशा यही चाहती थी कि उसकी बेटी भी उसी की तरह से मेहनती बने परन्तु सब बेकार। उसके मुँह से तो शब्द भी इतनी मुश्किल से निकलते थे मानो उनको भी निकलने में आलस आ रहा हो।

एक दिन वह स्त्री अपनी बेटी को उसके आलसी होने पर डॉट रही थी कि उधर से एक राजकुमार अपने घोड़े पर सवार निकला। वह बोला — "लगता है मॉ जी कि आपके घर में कोई खराब बच्चा

[50] The Lazy Beauty and Her Aunts – a folktale from Ireland, Europe. This tale is in "Fairy and Folk Tales of the Irish Peasantry. Edited and selected by WB Yeats. 1888. Taken from the Web Site : https://www.sacred-texts.com/neu/yeats/fip/index.htm
Yeats selected it from the book "The Fireside Stories of Ireland" by Patrick Kennedy. 1870. Kennedy's book is available on the Web Site : https://archive.org/details/firesidestories00kenngoog/page/n15/mode/1up

है जो जिसको आप इतना डॉट रहीं हैं नहीं तो इतनी सुन्दर लड़की को तो कोई इस तरह नहीं डॉट सकता।"

स्त्री बोली — "योर मैजेस्टी, बिल्कुल नहीं। मैं तो बल्कि इस लड़की को इतना ज़्यादा काम करने से मना करने की कोशिश कर रही थी।

आप शायद विश्वास नहीं करेंगे कि यह एक दिन में तीन पौंड तक रुई कात लेती है, अगले दिन उस सूत का कपड़ा बुन लेती है और तीसरे दिन उस कपड़े की कमीजें बना लेती है।"

यह सुन कर तो राजकुमार की ऑखें फटी की फटी रह गयीं। वह बोला — "अच्छा? तब तो यह लड़की मेरी मॉ को बहुत पसन्द आयेगी क्योंकि मेरी मॉ भी सूत बहुत जल्दी कातती हैं।

मॉ जी, आप ऐसा कीजिये कि अपनी बेटी को मेरे घोड़े पर मेरे पीछे बिठा दीजिये। मेरी मॉ इसको देख कर बहुत खुश होगी और हो सकता है कि एकाध हफ्ते में वह इससे मेरी शादी भी कर दे अगर आपकी बेटी राजी होगी तो।"

भेद खुलने का डर भी था और रानी बन जाने की खुशी भी, सो उन दोनों को यह समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या करें परन्तु फिर भी उस लड़की की मॉ ने अपनी बेटी को राजकुमार के घोड़े पर उसके पीछे बिठा दिया और राजकुमार उसको ले कर अपने घर चल दिया।

राजकुमार स्त्री को काफी धन दे कर उस लड़की को वहॉ ले गया।

लड़की के जाने के बाद उसकी मॉ बहुत परेशान हुई कि कहीं उसकी बेटी के साथ कुछ बुरा न हो जाये। राजकुमार ने रास्ते में उससे कई सवाल किये पर उनसे उसको उस लड़की के बारे में किसी खास बात का पता नहीं चल सका।

उधर रानी ने जब राजकुमार के पीछे एक देहाती लड़की को घोड़े पर बैठे देखा तो वह भी सकते में आ गयी लेकिन जब रानी ने उसका सुन्दर मुखड़ा देखा और उसके कामों के बारे में सुना तब उसे कुछ तसल्ली सी हुई।

इसी समय राजकुमार ने अपनी मॉ के कान में फुसफुसा दिया कि अगर वह लड़की राजी हो गयी तो वह उससे शादी भी कर सकता है।

शाम गुजर गयी और राजकुमार और वह लड़की जिसका नाम ऐन्टी[51] था आपस में एक दूसरे को चाहने लगे। परन्तु ऐन्टी कातना बुनना आदि कामों के बारे में तो सोच कर ही कॉप उठती थी।

रात को जब सोने का समय आया तो रानी उसको एक बहुत ही सुन्दर सजे हुए कमरे में सुलाने के लिये ले गयी। जब वह वहॉ से जाने लगी तो ऐन्टी से बोली — "बेटी, तुम इस रुई का सूत

[51] Anty – name of the girl

कातना। कल सुबह के बाद तुम इसे कभी भी शुरू कर सकती हो और यह सूत तुम मुझे परसों सुबह दे देना।"

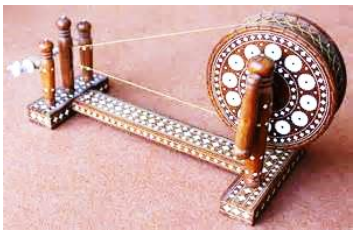

रानी तो यह कह कर चली गयी परन्तु ऐन्टी को रात भर नींद नहीं आयी। वह रात भर यही सोच सोच कर रोती रही कि उसने अपनी मॉ की सलाह मान कर यह सब काम क्यों नहीं सीखा।

सुबह होने पर उसे एक कमरे में अकेले बिठा दिया गया और उसे एक बहुत ही बढ़िया किस्म का चरखा दे दिया गया।

कपास भी बहुत बढ़िया थी और चरखा भी परन्तु उसका धागा तो उससे बार बार टूट जाता था। कभी वह बहुत बारीक आता और कभी बहुत मोटा।

क्योंकि ऐन्टी ने तो सूत कभी काता ही नहीं था इसलिये उससे सूत कत ही नहीं रहा था। आखिरकार ऐन्टी ने तंग हो कर चरखा एक तरफ खिसका दिया और रोने लगी।

इतने में एक बड़े पैरों वाली छोटी बुढ़िया उसके सामने प्रगट हुई और बोली — "बेटी तुम्हें क्या दुख है?"

ऐन्टी बोली — "मेरे सामने यह इतनी सारी कपास पड़ी है इस सबका सूत कात कर मुझे कल सुबह तक देना है और मुझसे तो एक गज सूत भी नहीं काता जा रहा है।"

बुढ़िया बोली — "जब तुम्हारी शादी होगी तो क्या तुम मुझे बुलाओगी? अगर तुम ऐसा करो तो रात को जिस समय तुम सो रही होगी तुम्हारा यह सारा सूत कत जायेगा।"

लड़की बोली — "ठीक है। मैं तुमको अपनी शादी पर आने के लिये अभी से बुलावा देती हूँ और वायदा करती हूँ कि मैं तुमको ज़िन्दगी भर नहीं भूलूँगी।"

बुढ़िया बोली — "ठीक है। तुम शाम तक अपने कमरे में ही रहो और शाम को जब रानी आये तो उससे कहना कि वह सुबह आ कर अपना सूत ले जा सकती है।"

ऐसा ही हुआ। अगले दिन सुबह रानी ने जब सूत देखा तो उसको देख कर बहुत खुश हुई और बोली — "कल तुम इस सूत का कपड़ा बुनना।"

बेचारी ऐन्टी इस बार पहले से भी ज़्यादा परेशान थी क्योंकि उसको तो कपड़ा बुनना भी नहीं आता था और वह राजकुमार को खोना नहीं चाहती थी।

यही सोचती वह परेशान सी बैठी थी कि एक भारी कमर वाली छोटी सी स्त्री उसके सामने प्रगट हुई और उससे पहले वाली बुढ़िया की तरह सौदा किया कि अगर वह उसको अपनी शादी में बुलायेगी तो रात भर में उसके सूत का कपड़ा बुन जायेगा।

ऐन्टी ने उसको विश्वास दिलाया कि वह उसको अपनी शादी में जरूर बुलायेगी। ऐन्टी ने हाँ कर दी तो वह उससे बोली कि वह

आराम करे और रात भर में उसका कपड़ा बुन जायेगा। और अगले दिन सुबह जब वह लड़की उठी तो उसके लिये तो बहुत ही बढ़िया कपड़ा बुन कर तैयार था।

अगले दिन सुबह रानी ने जब कपड़ा देखा तो वह तो बहुत ही खुश हो गयी। वह बोली — "बेटी अब तुम आराम करो कल मुझे इस कपड़े की कमीजें बना कर और दिखा देना। तुम एक कमीज मेरे बेटे को भी दे सकती हो, बस फिर तुम्हारी और राजकुमार की शादी हो जायेगी।"

अगले दिन तो ऐन्टी बहुत ही परेशान थी। वह राजकुमार के जितनी पास थी उतनी ही दूर भी थी। पर आज वह उतना घबरा नहीं रही थी क्योंकि उसको विश्वास था कि आज भी उसकी परेशानी दूर करने के लिये कोई न कोई आ ही जायेगा। वह दोपहर तक शान्ति से इन्तजार करती रही।

दोपहर बाद उसके सामने एक बड़ी लाल नाक वाली स्त्री प्रगट हुई और उसने भी उससे पहली दोनों स्त्रियों की तरह ही सौदा कर के उसकी बारह कमीजें सिल कर मेज पर तह कर के रख दीं। सुबह जब रानी आयी तो उन कमीजों को देख कर बहुत खुश हुई।

अब तो बस दोनों की शादी की ही बात होने लगी। शादी बहुत ही शानदार ढंग से हुई। ऐन्टी की मॉ भी आयी हुई थी। रानी के मुँह पर केवल ऐन्टी की कमीजों की ही तारीफ थी।

तभी एक पहरेदार ने आ कर ऐन्टी से कहा "राजकुमारी जी, आपकी चाची अन्दर आना चाहती हैं।"

ऐन्टी तो यह सुन कर घबरा गयी कि यह उसकी कौन सी चाची आ गयी क्योंकि उसकी जानकारी में तो उसकी कोई चाची थी ही नहीं।

वह अपनी उन तीनों स्त्रियों को बिल्कुल ही भूल गयी थी जिन्होंने उसको रुई कातने में, फिर उस सूत का कपड़ा बुनने में और फिर उनकी कमीजें बनाने में सहायता की थी।

पर राजकुमार बोला — "उनको कहो कि ऐन्टी का कोई भी रिश्तेदार हम लोगों के पास कभी भी आ सकता है।"

सो बड़े पैरों वाली एक स्त्री आयी और राजकुमार के पास आ कर बैठ गयी। बड़ी रानी को यह अच्छा नहीं लगा पर उसका कुशल मंगल पूछने के बाद रानी ने पूछा — "मैम, क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आपके ये पैर इतने बड़े क्यों हैं?"

वह स्त्री बोली — "मैं ज़िन्दगी भर चरखे पर खड़े हो कर सूत कातती रही हूँ न, इसी लिये।"

यह सुन कर राजकुमार ऐन्टी से बोला — "प्रिये, मैं तो अबसे तुम्हें कभी सूत कातने ही नहीं दूँगा।"

तभी एक पहरेदार ने फिर आ कर ऐन्टी से कहा "राजकुमारी जी, आपकी कोई दूसरी चाची अन्दर आना चाहती हैं।"

राजकुमार फिर बोला — "उनसे कहो कि ऐन्टी का कोई भी रिश्तेदार हम लोगों के पास कभी भी आ सकता है।"

फिर एक भारी कमर वाली स्त्री आयी और आ कर बैठ गयी। रानी ने उसकी भी कुशल मंगल पूछने के बाद उससे पूछा — "मैम, क्या मैं पूछ सकती हॅू कि आपकी कमर बीच में से इतनी चौड़ी क्यों है?"

वह स्त्री बोली — "रानी जी, मैं सारी ज़िन्दगी बैठ कर कपड़ा बुनती रही हॅू न, इसी लिये।"

यह सुन कर राजकुमार बोला — "प्रिये, मैं तो आज से तुमको कपड़ा बुनने के लिये कभी करघे पर बैठने ही नहीं दूॅगा।"

इसके बाद बड़ी लाल नाक वाली स्त्री आयी और वहॉ आ कर बैठ गयी। रानी ने उससे भी पूछा — "मैम, क्या मैं जान सकती हॅू कि आपकी नाक इतनी बड़ी और लाल क्यों है?"

वह स्त्री बोली — "क्योंकि मैं ज़िन्दगी भर सिर नीचा कर के कपड़े सिलती रही हॅू इसलिये मेरे शरीर का सारा खून मेरी नाक की तरफ खिंच आया है, इसी लिये।"

राजकुमार फिर उस लड़की से बोला — "प्रिये, मैं तो तुम्हें कभी सुई ही नहीं पकड़ने दूॅगा।"

पर बच्चो, यह तो परियों की कहानी है। ऐसा भी कहीं होता है क्या? न तो आजकल राजकुमार हैं, न सहायता करने के लिये परियॉ हैं। सब कुछ अपने आप ही करना पड़ता है।

इसलिये इस कहानी से हमें यही सीखना चाहिये कि सबको अपनी ज़िन्दगी में बहुत काम करना चाहिये क्योंकि सभी लोग काम को प्यार करते हैं और हर जगह काम की ही तारीफ होती है।

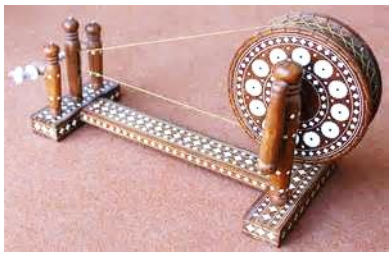

13 विरोधी कैम्पर्स[52]

उत्तरी आयरलैंड में कुँवारी लड़कियों के कातने की मीटिंग हुआ करती हैं जो अक्सर किसानों के घरों पर होती हैं। हर नौजवान लड़की जो कातने में थोड़ी सी भी होशियार हो जाती है इन कैम्पों में हिस्सा ले सकती है। ये कैम्प दिन निकलने के समय शुरू होते हैं।

ये लोग जब यहॉ आती हैं तो ये अपने किसी पुरुष दोस्त या पुरुष सम्बन्धी को भी ला सकती हैं जो इनकी चरखा उठाने में और इनको मैदान में या सड़क के किनारे जैसा भी इन्तजाम हो वहॉ इनके बैठने में सहायता करता है।

कैम्प एक जिन्दादिल और खुशी से भरा दृश्य है। यह एक गर्व भरे उद्योग को बढ़ाने में सहायता करता है। इससे ज़्यादा खुशी की आवाज तो कोई मुश्किल से ही हो सकती है जो सुबह की शान्ति को तोड़ती हुई सुनी जा सके।

लड़कियॉ बातें करती हैं गुनगुनाती हैं गाती हैं हॅसती हैं और चरखा चलाती हैं। कोई कोई एक दूसरे का नाम लेती हैं कि फलॉ लड़की सूत कातने में बहुत होशियार है। यह मुकाबला दिन निकलने से दो तीन घंटे पहले से शुरू होता है।

---

[52] The Rival Kempers. A folktale from Ireland. From “Irish Fairy Tales”. By WB Yeats. 1892. Taken from the Web Site : https://www.gutenberg.org/files/31763/31763-h/31763-h.htm#THE_RIVAL_KEMPERS
Yeats's source: William Carleton, “Traits and Stories of the Irish Peasantry.”

इसके अन्त में नाच होता है और इस तरह कैम्प खत्म हो जाता है। जीतने वाला घोषित किया जाता है और सामान्य रूप से वह मीटिंग की रानी कहलाती है और लोग उसका आदर करते हैं।

पर हमारी कहानी में हर आदमी जानता था कि शौन बुई मैकगैवेरन[53] सबसे साफ सुथरा और सबसे अच्छा बर्ताव करने वाला लड़का था।

वह सारे फ़ौएबैला पारिश[54] में बहुत मेहनती था। ऐसा लड़का मिलना मुश्किल था जो फावड़ा और दूसरे यन्त्र बहुत अच्छी तरह से इस्तेमाल कर सके या फिर अपना दिन का सारा काम तरतीबवार ढंग से निपटा सके। इसके अलावा उसका शरीर भी खूब गठा हुआ और सुन्दर था जैसे किसी मेले में जाने वाले का होता है।

सो वह सारे लोगों के आकर्षण का केन्द्र था। लड़कियॉ उसके नाम की टोपी उछाला करती थीं। पर जितना वह सुन्दर था उतना ही वह होशियार भी था। हालॉकि उसको एक पत्नी चाहिये थी पर वह एक होशियार लड़की को चुनना चाहता था जो उस जैसा ठीक से व्यवहार करती हो और मेहनती हो।

अब उसकी उलझन यह थी कि बजाय इसके कि उसको एक ऐसी लड़की मिलती उसके पड़ोस में दर्जनों लड़कियॉ ऐसी ही थीं जो

[53] Shaun Buie M'Gaveran
[54] Fough-a-ballagh Parish

वैसी ही थी जैसी कि वह चाहता था। सब उससे शादी करना चाहती थीं सब एक जैसी सुन्दर थीं।

उनमें से दो ऐसी थीं जिनके बारे में वह सोच सकता था – बिडी कोरीगन और सैली गोरमैन।[55] पर वे दोनों भी इतनी एक सी थीं कि वह यह नहीं सोच पा रहा था उनमें से किस एक को चुने। दोनों ने अपने अपने कैम्प जीत लिये थे। और उन दोनों के बारे में अभी तो यही कहा जा रहा था कि दोनों में से कोई किसी से कम नहीं थी।

पारिश में किन्हीं भी दो लड़कियों का इनसे ज़्यादा आदर नहीं था और न ही वे इसकी अधिकारी थीं। तो नतीजा यह था कि दोनों को ही सबकी शुभकामनाऐं और आदर प्राप्त था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि जब शौन इसी तरह से दोनों की खींचातानी में पड़ा हुआ था क्योंकि उसको पता नहीं था कि वह यह कैसे तय करे कि वह किसके साथ शादी करे उसके दिमाग में आया कि अगर वे उसका यह काम कर सकें तो वह यह जिम्मेदारी उन्हीं को सौंप दे।

अपनी इस योजना के अनुसार उसने अपने आसपास यह खबर फैला दी कि वह हफ्ते के फलॉ दिन एक कैम्प लगायेगा। फिर उसने बिडी और सैली से कहा कि वह उसी लड़की से शादी करेगा जो उस कैम्प में जीतेगी। क्योंकि सारे पारिश के साथ साथ वह भी यह जानता था कि उनमें से एक तो जीतेगी ही।

[55] Biddy Corrigan and Sally Gorman

लड़कियों ने इस कैम्प का बड़ी खुशी से स्वागत किया। बिडी ने सैली से कहा कि वह यह मुकाबला जरूर जीतेगी। सैली भी सभ्यता की वजह से बिडी को भी यही कहती रही।

हफ्ता गुजर गया अब उस कैम्प के लिये केवल दो दिन बचे थे कि सुबह के तीन बजे बूढ़ी पैडी कोरीगन के घर में एक छोटी स्त्री जो उॅची एड़ी के जूते पहने थी और एक छोटा लाल शाल ओढ़े थी घुसी। उस घर में उस समय वहॉ कोई नहीं था सिवाय बिडी के।

उस छोटी लाल स्त्री को देख कर बिडी उठी और आग के पास एक कुर्सी डाल दी और उससे वहॉ बैठने और सुस्ताने के लिये कहा। छोटी लाल स्त्री वहॉ बैठ गयी। थोड़ी ही देर में दोनों आपस में खुल कर बातें करने लगीं।

अनजान स्त्री ने कहा — "सो अब तो शौन बुई मैकगैवैरन के मैदान में एक बड़ा सा कैम्प लगने वाला है।"

बिडी मुस्कुराते हुए और उसकी तरफ कुछ झुकते हुए बोली — "हॉ लगने वाला तो है।" क्योंकि उसको मालूम था कि उसकी खुशकिस्मती तो उसी पर आधारित थी।

छोटी स्त्री आगे बोली — "और उस कैम्प में जो भी जीतेगा वह पति भी जीतेगा।"

"हॉ ऐसा ही लगता है।"

"जो भी शौन से शादी करेगा वह बहुत खुश रहेगा क्योंकि वह एक बहुत अच्छे आचार विचार वाला लड़का है।"

डर की एक उसॉस लेती हुई बिडी बोली — "यह तो आप सच कह रही हैं।" वह खुद भी उसको खो सकती थी और कोई और लड़की भी डर के अलावा किसी और वजह से भी उसके लिये उसॉस भर सकती थी।

पर तभी विषय बदलते हुए बिडी बोली — "पर आप मुझे थकी हुई लग रही हैं मैम। अच्छा हो अगर आप कुछ खा लें और गाढ़ा दूध पी लें ताकि आप अपनी आगे की यात्रा ठीक से कर सकें।"

स्त्री बोली — "बेटी तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। हॉ मैं यहॉ कुछ खाऊॅगी और आशा करूॅगी कि तुम आज से ज़्यादा गरीब न हो।"

बिडी बोली — "यकीनन। धन्यवाद। आपको तो पता ही है कि जो कुछ भी हम दया से देते हैं वह हमारे पास फिर दुआ ही छोड़ जाता है।"

"हॉ बेटी जब भी वह दया से दिया जाता है।"

फिर जो कुछ भी खाने का सामान बिडी ने उसके सामने रखा उसने उसे अपने हाथ से ले कर खाया। खा पी कर वह कुछ तरोताजा लगी।

उसके बाद वह उठी और बोली — "तुम बहुत अच्छी लड़की हो। अगर तुम मंगलवार से पहले मेरा नाम पता चला लो यानी कैम्प

वाले दिन से पहले तो मैं कहती हूॅ कि तुम जीत जाओगी और तुम अपना पति भी पा लोगी।"

बिडी बोली — "ऐसा कैसे हो सकता है। मैंने तो आपको आज से पहले कभी देखा नहीं है। मैं यह भी नहीं जाती कि आप कौन हैं तो मुझे आपका नाम कैसे पता चलेगा।"

बुढ़िया बोली — "यह तो सच है कि तुमने मुझे पहले कभी नहीं देखा और मैं तुम्हें यह भी बता दूॅ कि सिवाय इस एक बार के और तुम मुझे फिर कभी देखोगी भी नहीं। पर अगर तुमने कैम्प से पहले मेरा नाम नहीं बता दिया तो तुम्हारा सब कुछ खो जायेगा। इससे तुम्हारा दिल बहुत दुखी होगा। मुझे मालूम है कि तुम शौन को बहुत प्यार करती हो।"

इतना कह कर वह लाल बुढ़िया वहॉ से चली गयी और बेचारी बिडी को सोच विचार में छोड़ गयी। उसको कोई आशा नहीं थी कि वह उस बुढ़िया का नाम पता कर पायेगी। पर सच तो यह था कि शौन को बहुत प्यार करती थी। और अब उसकी शादी उस बुढ़िया का नाम जानने पर आधारित थी।

यह भी उसी दिन और लगभग उसी समय की बात है जब कि सैली गोरमैन अकेली अपने पिता के घर में बैठी हुई थी। वह कैम्प के बारे में सोच रही थी कि उसके घर में कौन आया – हमारी दोस्त लाल बुढ़िया।

सैली बोली — "भगवान आपकी रक्षा करे ओ भली स्त्री। आज कितना अच्छा दिन है। इसके लिये हमें भगवान का धन्यवाद करना चाहिये।"

बुढ़िया बोली — "हॉ यह तो है। आज बहुत ही अच्छा दिन है जैसा कि कोई चाह सकता है।"

सैली ने पूछा — "आपकी यात्रा की कोई खबर।"

बुढ़िया सैली की तरफ देखती हुई बोली — "खबर तो पड़ोस में है कि शौन बुई के मैदान में एक कैम्प लगने वाला है। उनका कहना है कि या तो तुम उसे जीत लोगी या फिर खो दोगी।"

सैली बड़े विश्वास के साथ बोली — "मुझे उसका कोई डर नहीं है। अगर मैंने उसे खो भी दिया तो भी मैं अच्छी ही रहूँगी।"

बुढ़िया बोली — "अच्छा होना भी इतना आसान नहीं है। और मुझे बहुत खुशी होगी कि अगर तुम कर सकती हो तो तुम उसको जीतने की कोशिश करो।"

सैली बोली — "उसके लिये तो आप मुझे छोड़ ही दीजिये। मैं जानती हूँ कि बिडी बहुत अच्छी लड़की है पर जहॉ तक कातने का सवाल है वह मुझसे जीत नहीं सकती। आप बैठिये और थोड़ा सुस्ताइये आप बहुत थक गयी हैं।"

बुढ़िया ने अपने मन में सोचा "पर यह समय तुम्हारे इस बारे में सोचने का है।" पर उसने सैली से कुछ कहा नहीं। उसने फिर अपने मन में कहा "बजाय इसके कि वह तुम्हें कभी न मिले इससे

बेहतर है कि देर हो जाये।[56] मैं थोड़ी देर बैठती हूॅ और देखती हूॅ कि यह किस मिट्टी की बनी है।"

यही सोच कर वह वहॉ बैठ गयी और ऐसी बातें करती रही जैसी नौजवान लड़कियों को पसन्द होती हैं। आधे घंटे बाद वह उठी और अपनी लाठी उठाते हुए सैली को बाई कहा और वहॉ से अपने रास्ते चली गयी।

घर से थोड़ी दूर जाने पर उसने घर की तरफ मुड़ कर देखा और अपने मन में यह कहने से रुक नहीं सकी —

यह बहुत अच्छी है होशियार है पर इसको दिल चाहिये
वह अपने विचारों में पक्की है और साफ है पर उसने मॉस नहीं दिया

बुढ़िया के जाने के बाद बेचारी बिडी उस बुढ़िया के बारे में खोजबीन करती रही पर उससे कोई फायदा नहीं हुआ। कोई भी उसके बारे में कुछ नहीं बता सका। किसी ने उसको न देखा था न ही उसके बारे में कुछ सुना था।

इस सबसे वह कुछ निराश हो रही थी। उसको मालूम था कि वह उससे कभी जीत नहीं पायेगी। क्योंकि इसमें उसे कोई शक नहीं था कि अगर इस बार उसने शौन को खो दिया तो वह बहुत दुखी हो जायेगी।

[56] Better late than never

उसको मालूम था कि वह शौन के बराबर में कहीं नहीं बैठती और न किसी ऐसे आदमी के बराबर में जिसको वह इतना प्यार करती हो।

आखिर कैम्प का दिन आ गया और उसके साथ आयीं सब सुन्दर लड़कियॉ जो शौन से शादी करना चाहती थीं। पर इन सबमें दो सुन्दर दो लड़कियॉ थीं – बिडी और सैली। सभी लोग उनकी प्रशंसा करते थे।

इस बात को दिखाने के लिये कि वहॉ सब बहुत खुश थे बहुत सारे मीठे मीठे गाने गाये गये। जैसा कि लोगों को पहले से ही मालूम था बिडी और सैली दोनों वहॉ बैठी सारी लड़कियों से बहुत आगे थीं पर वे दोनों आपस में इतनी एक सी थीं कि कोई भी उनको देख कर यह नहीं बता सकता था कि उन दोनों में से कौन सी ज़्यादा अच्छी है। दोनों सुन्दर लड़कियॉ एक दूसरे से होड़ में लगी हुई थीं।

उस कैम्प में बैठी हुई दूसरी लड़कियॉ इस उत्सुकता में बैठी थीं कि देखें इनमें से कौन जीतता है।

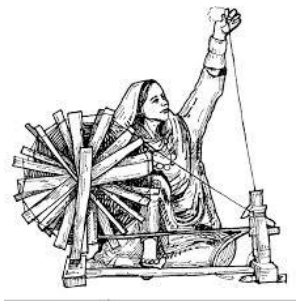

आधा दिन गुजर गया था और अभी तक दोनों बराबर ही चल रही थीं कि दूसरों को यह देख कर बहुत आश्चर्य और दुख हुआ कि बिडी कोरीगन का हैक[57] दो हिस्सों में टूट गया। अब तो यह साफ था कि उसके मुकाबले में जो बैठा था वही जीतेगा।

[57] Heck – maybe it means the “string” which goes around the spinning wheel. See the picture above.

और इससे भी ज़्यादा उसके हार की आशा और बढ़ गयी जब उसको याद आया कि लाल बुढ़िया का नाम तो उसे याद ही नहीं था। अब वह क्या करे। अब तक तो जो कुछ उसे करना था वह हो चुका था।

जब उसके साथ यह हादसा हुआ तब उसका चौदह साल का एक भाई उसके साथ था। उसके माता पिता ने उसको लड़की के साथ इसलिये भेजा था कि वह उनकी मुकाबले के बारे में उनको कुछ खबर दे सके।

जौनी कोरीगन ने तुरन्त ही अपनी बहिन का हैक ठीक होने के लिये डोनल मैककस्कर[58] के पास भेज दिया। हैक को ठीक करने के बाद बिडी का आखिरी मौका था यह मुकाबला जीतने का।

जौनी को अपनी बहिन के जीतने की बहुत चिन्ता थी और इसमें कम से कम समय बर्बाद हो इसलिये वह खुद मैदान पार कर के किलरूडेन फोर्थ[59] चल दिया। यह जगह परियों के रहने की जगह थी।

जब वह एक कॉटों वाले पेड़ के पास से गुजर रहा था तो उसने जो कुछ देखा वह देख कर तो वह आश्चर्यचकित रह गया। वहॉ एक स्त्री चरखा चलाते चलाते गाना गा रही थी —

इस शहर में एक लड़की है जो मेरा नाम नहीं जानती
पर मेरा नाम ईविन ट्रौट है ईविन ट्रौट[60]

[58] Donnel M'Cusker
[59] Kilrudden Forth
[60] Even Trot

लड़के ने कहा — "इस शहर में एक लड़की है जो इस समय बहुत बड़ी मुसीबत में है क्योंकि उसका हैक टूट गया है और इसकी वजह से वह अपने पति को प्राप्त नहीं कर पायेगी। मैं डोनल मैककस्कर के पास जा रहा हूँ उसको ठीक करवाने के लिये।"

उस छोटी लाल स्त्री ने पूछा — "उस लड़की का क्या नाम है?"

"बिडी कोरीगन।"

छोटी स्त्री ने तुरन्त ही अपने चरखे के पहिये से हैक उतारा और लड़के को देते हुए कहा कि वह उसको अपनी बहिन के पास ले जाये और डोनल मैककस्टर को छोड़ दे।

उसने कहा — "तुम्हारे पास बर्बाद करने के लिये समय नहीं है इसलिये तुम यह हैक ले कर तुरन्त ही वापस चले जाओ और उसे दे दो। पर उसको यह मत बताना कि यह तुमको कैसे मिला। और यह तो बिल्कुल भी मत बताना कि यह तुम्हें ईविन ट्रौट ने दिया है।"

बुढ़िया से हैक ले कर लड़का तुरन्त ही वापस लौट गया। पर आखिर उसने उसे यह बता ही दिया कि वह हैक उसे ईविन ट्रौट ने उसे दिया था। यह सुन कर बिडी की ऑखों में ऑसू आ गये।

और अब तो उसे यह भी मालूम पड़ गया था कि उस लाल बुढ़िया का नाम ईविन ट्रौट था। यह सोचते हुए उसको यह लगने लगा कि अब उसके लिये सब कुछ अच्छा ही होगा।

उसने अपनी कताई शुरू कर दी। उस हैक को लगाने के बाद तो वह अब इतनी तेज़ी से कात रही थी कि कोई आदमी भी इतना तेज़ नहीं कात सकता था।

यह देख कर सारा कैम्प आश्चर्यचकित था कि किस तेज़ी से उसकी तकलियॉ भरे जा रही थीं। उसकी दोस्तों के दिल की धड़कने बढ़ने लगी थीं और सैली की दोस्तों के दिल डूबने लगे थे।

जैसे जैसे समय बीतता जा रहा था वह अपने विरोधी सैली के बराबर में पहुॅचती जा रही थी जो बिडी को इस तरह तेज़ी से कातते देख कर दोगुनी गति से कात रही थी। कुछ समय बाद ही दोनों बराबर में पहुॅच गयीं।

उसी समय वह लाल छोटी स्त्री वहॉ आयी और चिल्ला कर पूछा — "क्या यहॉ कोई है जो मेरा नाम जानता है।"

उसने यह सवाल तीन बार पूछा तब बिडी ने उसको इस सवाल का जवाब देने की हिम्मत जुटायी। वह बोली —

यहॉ एक लड़की ऐसी है जो आपका नाम जानती है
आपका नाम है ईविन ट्रौट, ईविन ट्रौट

बुढ़िया बोली — "हॉ यही है मेरा नाम। अब यही नाम तुम्हें और तुम्हारे पति को आगे रास्ता दिखायेगा। अपना काम करती रहो और एक सी गति से करती रहो। हमेशा आगे बढ़ती रहो तुम्हें इस

दिन के लिये कभी पछताना नहीं पड़ेगा जिस दिन तुम ईविन ट्रौट से मिली थीं।"

अब हमें यह कहने की जरूरत नहीं कि बिडी ने ही यह मुकाबला जीता और साथ में पति भी। शादी के बाद शौन और वह दोनों बहुत सुख से रहे।

और ओ इस कहानी को पढ़ने वाले। मैं अब यही इच्छा करता हूॅ कि अब हम दोनों भी हमेशा खुशी से रहें।

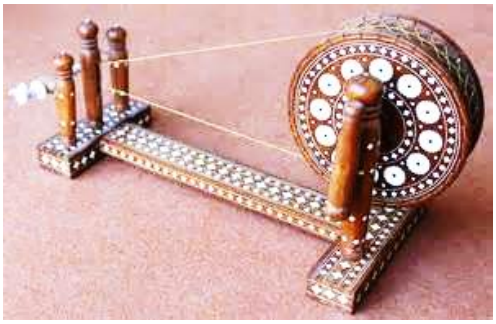

14 टारनडैन्डो[61]

रम्पिलटिस्टस्किन जैसी लोक कथाओं के इस संग्रह में यह लोक कथा हमने इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक माँ अपनी एक अकेली बेटी के साथ रहती थी। वह कोई बदसूरत लड़की नहीं थी पर उसके अन्दर एक कमी थी कि वह केवल अपना काम करने में बहुत होशियार थी सो वह बजाय काम करने के खूब खाती थी।

ऐसी लड़कियों से माँऐं ज़रा कम खुश रहती हैं सो यही बात इस घर में भी थी। यह लड़की कोई भी काम ठीक से नहीं कर पाती थी सो उसकी माँ भी उसे हर समय डाँटती ही रहती थी।

एक बार माँ खेतों के लिये जल्दी ही घर से निकल गयी। अपनी बेटी से जो अभी भी बिस्तर में पड़ी थी कह गयी कि दोपहर के समय कुछ सूप बना लेना और चावल की कुछ बालियाँ[62] मेरे लिये रख देना। जब मैं घर आऊँगी तो वही मेरे लिये काफी होगा।

कुछ का सामान्य रूप से मतलब होता है कि न बहुत ज़्यादा न बहुत कम। पर लड़की इस बात को समझ नहीं पायी। उसने एक बर्तन भर कर पानी आग पर रखा और उसमें चावल की दो बालियाँ

[61] Tarandando. An Italian folktale. By Christian Schneller. 1867. Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#tarandando

[62] She said, “Keep a couple of rice kernels” for me.” This expression in English language is used to denote one or two things. But in day-to-day expressions it normally means – neither too little nor too much.

डाल दीं। क्या ही बढ़िया सूप बना था इसका। जब मॉ घर वापस लौटी तो उसने उसे ऐसा सूप बनाने के लिये बहुत डॉटा। अब अगर उसको कुछ खाना था तो उसको वह सूप फेंकना पड़ा और अपने लिये नया सूप बनाना पड़ा।

एक बार और ऐसा ही हुआ कि मॉ को कहीं जाना था तो वह उससे कह गयी हमारे दोपहर के खाने के लिये कुछ मॉस उबाल लेना। लड़की ने पूछा कि कितना मॉस उबाल लूँ।

"जितना ठीक लगे।[63]"

"कितना ठीक होगा।" लड़की सोचती रही सोचती रही। फिर उसे ध्यान आया कि उसके गधे का नाम भी तो "औनैस्ट" है जो उसके तबेले में खड़ा है। लगता है मॉ का मतलब उसी से था। क्योंकि वह बूढ़ा भी हो गया है और किसी काम के मतलब का भी नहीं रह गया है। इस बार मैं डॉट नहीं खाऊँगी।

सो वह अपने तबेले में गयी उसने बेचारे गधे को मारा काट कर उसके छोटे छोटे टुकड़े किये। एक बहुत बड़ा कपड़े धोने का बर्तन आग पर चढ़ा दिया। उसे पानी से भर कर उसमें उसने गधे के मॉस के टुकड़े डाल दिये। वे तब तक उबलते रहे जब तक खूब नहीं उबल गये।

जब मॉ वापस आयी तो उसने देखा कि क्या हो गया है तो वह तो आपे से बाहर हो गयी। उसने लड़की को दोनों घूँसों से मारना

[63] Translated for the woeds "Whatever is honest".

शुरू कर दिया। लेकिन इससे बेचारा गधा तो वापस ज़िन्दा नहीं किया जा सका। इसके अलावा गधे का मॉस भी सख्त था सो वे उसे नहीं खा सकीं।

मॉ ने उस मॉस को कुत्तों को फेंक दिया। वे उसमें से केवल उतना ही खा सकीं जितना उनकी भूख शान्त करने के लिये काफी था क्योंकि वे बहुत भूखी थीं और उनके दॉत काफी मजबूत थे।

एक बार और ऐसा ही कुछ हुआ कि मॉ को कहीं जाना था कि उसने अपनी बेटी से कहा कि वह थोड़ा सा मुश[64] तैयार कर के रख ले और अबकी बार वह उसे ध्यान से और ठीक से बनाये।

लड़की ने बहुत सारा मुश बना लिया और उसने सात प्लेट भर कर मुश को खाया। आठवीं प्लेट जो सबसे छोटी थी वह उसने अपनी मॉ के लिये छोड़ दी।

जब मॉ वापस आयी और उसको पता चला कि उसकी बेटी ने बहुत सारा मुश बनाया था। सात प्लेट तो उसने पहले ही खा लिया था और केवल एक छोटी सी प्लेट ही उसके लिये छोड़ी थी। वह बहुत नाराज हुई और उसको बहुत ज़ोर ज़ोर से डॉटने लगी।

इत्तफाक से उसी समय एक बहुत ही कुलीन आदमी वहॉ से गुजर रहा था । उसने यह डॉट सुनी तो वह अन्दर आ गया और

[64] Mush is a kind of cornmeal boiled in water or milk. It os often left to set to get semisolid and then cut their pieces in squares or rectangles etc.

मॉ से पूछा — "मॉ जी आप इस बेचारी लड़की को इतना क्यों डॉट रही हैं।"

मॉ यह सुन कर बहुत शर्मिन्दा हुई और बोली — "मैं इसको इसलिये डॉट रही थी क्योंकि यह काम बहुत करती है। आज इसने पूरे सात अटेरन सूत काता है और अभी और कातने को तैयार है। मैं नहीं चाहती कि यह इतना काम करे।"

नौजवान बोला — "अच्छा। ये इतना काम करती हैं।"

मॉ बोली — "पास और दूर कोई ऐसा नहीं है जो मेरी बेटी जैसा सूत कात सकती हो।"

नौजवान बोला — "अगर ऐसा है तो इसे आप मुझे दे दीजिये। मैं इससे शादी करना चाहता हूॅ। मैं एक ऐसी पत्नी चाहता हूॅ जो बहुत काम करती हो। और मुझे लगता नहीं है कि मुझे इससे ज़्यादा कोई काम करने वाली कोई लड़की मिलेगी।"

मॉ और बेटी दोनों खुशी से राजी हो गयीं। दोनों की शादी हो गयी और नौजवान लड़की को ब्याह कर अपने घर ले गया।

कुछ दिन बाद वह रुई का एक बहुत बड़ा गट्ठर ले कर आया और पत्नी से बोला कि वह उस दिन सारे दिन शिकार पर रहेगा सो कल शाम तक वह उसे कात दे।

लड़की ने बुरा सा मुॅह बनाया और बोली — "प्रिय यह तो मुमकिन ही नहीं है।"

इस पर वह कुछ नाराज हो गया और गुस्से से बोला — "प्रिये तुम क्या समझती कि तुमसे मैंने शादी इसलिये की है कि तुम काम ही न करो। अगर तुम इतनी ही आलसी हो तो तुम अपने घर वापस जा सकती हो।"

और यह कह कर वह शिकार के लिये चला गया। पत्नी भी यह सुन कर आपे से बाहर हो गयी। रुई का ढेर भी इतना बड़ा था कि सौ लड़कियों के साथ भी वह उसे दो दिन के अन्दर नहीं कात सकती थी।

जब वह इस तरह सोचती हुई खड़ी हुई थी एक बौना उसके पास आया। उसने लाल रंग के कपड़े पहने हुए थे। अपने सिर पर एक सोने का ताज पहना हुआ था।

वह आ कर बोला — "तुम इतनी दुखी क्यों हो। तुम मुझे क्या दोगी अगर मैं तुम्हारी रुई कात दूँ तो।"

पत्नी ने कोई जवाब नहीं दिया। लाल बौना बोलता रहा — "मैं तुम्हारी रुई कात तो दूँगा पर एक शर्त पर कि तुमको तीन बार में मेरा नाम बताना पड़ेगा। अगर तुम ऐसा नहीं कर पायीं तो तुम मेरी हो जाओगी और तुम्हें मेरे साथ आना पड़ेगा।"

पत्नी बहुत ही निराश थी सो उसने हॉ कर दी। तुरन्त ही वहॉ अनगिनत बौने आ कर इकट्ठे हो गये और वहॉ से सारी रुई इकट्ठा कर के ले गये।

उस शाम नौजवान शिकार से लौट आया। अपनी पत्नी को चुपचाप और शान्त देख कर उसने सोचा कि शायद उसकी पत्नी रुई कातने की वजह से थक गयी होगी।

सोने जाने से पहले उसने अपनी पत्नी से कहा — "पता है आज मेरे शिकार पर क्या हुआ। में जब पहाड़ पर था तो बस अँधेरा होने ही वाला था कि मैं जमीन में बनी एक दरार में आ गया। मैंने उसमें झॉक कर देखा तो देखा कि उसमें एक कमरा है जिसमें सैंकड़ों ऐल्फ़ बैठे बैठे रुई कात रहे थे। उनको तो देखने में ही बड़ा अच्छा लग रहा था।

उनके बीच में एक सिंहासन रख हुआ था जिस पर एक बौना लाल पोशाक पहने बैठा हुआ था। उसके सिर पर सोने का एक ताज था। वह लगातार गाये जा रहा था —

वह क्या करेगी वह क्या कहेगी जब हम इसको उसके पास ले जायेंगे
कभी वह यह अन्दाजा लगायेगी तो कभी वह पर मेरा नाम तो टारनडैन्डो है

यह सुन कर तो पत्नी बहुत खुश हो गयी। वह बोली — "प्रिय उस बौने ने क्या कहा ज़रा फिर से तो कहो।" जब उसके पति ने वह दोबारा कहा तो उसने छिपा कर उसे लिख लिया और चैन की सॉस लेते हुए सोने चली गयी।

अगली सुबह जब नौजवान फिर से शिकार पर चला गया तो वह लाल पोशाक पहने वाला बौना अपने सैंकड़ों बौनों के साथ फिर

से वहॉ आया। ये सब बौने बहुत सारी रुई ले कर आये थे जो बहुत सफाई से काती गयी थी। उसमें से एक बाल भी नहीं खोया गया था।

तब लाल बौना लड़की की तरफ आगे बढ़ा और बोला — "लो यह रही तुम्हारी कती हुई रुई। अब बताओ मेरा नाम क्या है।"

यह बहाना बनाते हुए कि जैसे वह कुछ जानती ही नहीं है वह बोली — "क्या तुम्हारा नाम पीटर है।"

बौना हॅसते हुए बोला — "नहीं।"

लड़की ने फिर अन्दाजा लगाया — "तब तुम्हारा नाम टोनी होगा।"

बौना अबकी बार बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "नहीं।"

तब उसने बहाना बनाया जैसे कि वह बहुत गम्भीरता से कुछ सोच रही हो फिर बोली — "तो क्या तुम्हारा नाम टारनडैडो है।"

लाल बौना ऐसे चिल्लाया जैसे किसी जहरीले सॉप ने उसे काट लिया हो — "सत्यानाश हो।"

उसने उसके गाल पर बहुत ज़ोर का चॉटा मारा और फिर वह और उसके सब साथी वहॉ से एक ऐसी आवाज के साथ गायब हो गये जैसी कि तूफान आने के समय जंगल से सूखी पत्तियॉ हवा में उड़ जाती हैं।

जब नौजवान शाम को घर वापस लौटा उसकी पत्नी ने उसको कती हुई रुई दिखायी तो वह असामान्य रूप से सन्तुष्ट हो गया।

पर वह उसके चेहरे की तरफ देखते हुए बोला — "पर तुम्हारा यह गाल इतना सूजा हुआ क्यों हैं।"

"प्रिय यह इतना सारा सूत कातने की वजह से है।"

जल्दी ही बाद नौजवान फिर से एक रुई का गट्ठर ले आया। यह गट्ठर पहले वाले गट्ठर से काफी बड़ा था। और अपनी पत्नी से बोला कि वह उसे कुछ दिनों में कात दे।

यह देख कर वह फिर अपना आपा खो बैठी। पर इस बार उसकी एक चाची थी जो असामान्य रूप से चालाक और होशियार थी। उसने अपने सम्बन्धियों की कई बार सहायता की थी। वह उसके पास गयी और उससे अपनी सारी मुश्किलें कहीं।

उसकी चाची बोली — "जाओ तुम अपने घर जाओ। इस मामले को मैं देख लूँगी। इस शाम जब तुम्हारा पति घर आयेगा तब मैं तुसे मिलने के लिये आऊँगी तब तुम देखना।"

जब शाम हुई तो लड़की की चाची ने एक मरी हुई मुर्गी ली उसे अपने कपड़ों के नीचे अपनी बगल में छिपा लिया और अपनी भतीजी के घर चल दी।

वह उस कमरे में गयी जिसमें वे दोनों बैठे हुए थे। फिर वह लड़की के पास पहुँची तो लड़की ने उसका स्वागत किया और बोली — "चाची यह तो बड़ा अच्छा हुआ कि आप हमसे मिलने के लिये आयीं।"

चाची बोली — "हॉ मैं बहुत दिनों से आने की सोच रही थी।"

उसने अपनी बॉह अपने शरीर से तब तक दबायी जब तक उसमें से खून और तेल नहीं निकलने लगा। जब तक वह वहॉ खड़ी रही उसकी बगल से खून और तेल बहता ही रहा।

नौजवान यह सब देख रहा था वह चिल्लाया — "चाची। आप यह क्या कर रही हैं।"

चाची ने लापरवाही से खून की बूँदों को देखा और बोली — "बस मेरी पुरानी बीमारी। यह तो मेरी पुरानी बीमारी है। मेरी बगल में एक बहुत बड़ा फोड़ा है। यह खून वहीं से निकल रहा है।"

नौजवान ने उससे सहानुभूति दिखाते हुए कहा — "चाची कैसे हुई आपको यह बीमारी?"

चाची बोली — "क्या आपको मालूम है माई लौर्ड। जब मैं जवान और सुन्दर थी तो मुझे बहुत सारी रुई कातनी पड़ती थी। उसी से मुझे यह बीमारी हो गयी। इससे मेरे पति को बहुत दुख हुआ और वह चल बसे। मुझे लगता है कि उनके जल्दी मर जाने की शायद यही वजह रही होगी।"

यह सुन कर नौजवान अपनी पत्नी की तरफ घूमा और बोला — "प्रिये आज से तुम कोई तकली अटेरन नहीं छुओगी। मुझे यह कातना बिल्कुल पसन्द नहीं आयेगा।"

अब यह बात तो लड़की की मन मर्जी की थी। उसके बाद से उसने फिर कभी कताई नहीं की और बड़े आराम और सुख की ज़िन्दगी जीनी शुरू कर दी।

अगर वह अभी मरी नहीं होगी तो वह आज भी अपनी वही पुरानी आलसी की ज़िन्दगी गुजार रही होगी।

15 और सात[65]

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियों के संग्रह की यह कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस लोक कथा में रम्पिलस्टिल्टस्किन का काम तीन बुढ़ियें करती हैं।

एक बार एक स्त्री थी जिसके एक बेटी थी। उसकी वह बेटी बहुत बड़ी और मोटी थी। जब उसकी मॉ उसके लिये मेज पर सूप लाती थी तो वह उसका पहला कटोरा पीती, फिर दूसरा, फिर तीसरा और फिर भी वह मॉगती ही रहती।

उसकी मॉ भी उसका कटोरा भरती ही रहती और गिनती रहती – "यह तीसरा", "यह चौथा"। जब वह लड़की सूप का सातवॉ कटोरा मॉगती तो उसकी मॉ बजाय उसका कटोरा भरने के उसके खाली कटोरे को उसके सिर पर मारती, चिल्लाती और कहती "और यह सात"।

एक बार एक बहुत ही अच्छे कपड़े पहने एक नौजवान उधर से गुजर रहा था कि उसने उस लड़की की मॉ को खिड़की से देखा कि वह सूप का कटोरा उस लड़की के सिर पर उलटा कर के मार रही थी और उससे कह रही थी "और यह सात"।

---

[65] And Seven – a folktale from Riviera Ligure di Ponente, Italy, Europe.
Taken from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. 1956. Translated by George Martin in 1980. 200 tales. Its 120 tales are available in Hindi from hindifolktales@gmail.com

उस नौजवान को उस मोटी लड़की से प्यार हो गया। वह अन्दर चला गया और उसने पूछा — "सात क्या मॉ जी?"

अपनी बेटी की इतनी भूख से शर्मिन्दा मॉ बोली — "सात ऊन कातने की तकली[66] बेटा। यह मेरी बेटी है जो ऊन कातने के पीछे इतनी पागल है कि उसने आज सुबह से भेड़ के ऊपर के बालों से सात तकली ऊन कात ली हैं।

क्या तुम सोच सकते हो कि उसने इस सुबह से सात तकली ऊन कात दी है और अभी और भी कातना चाहती है। उसी को रोकने के लिये मुझे उसे मारना पड़ा।"

वह नौजवान बोला — "अगर यह इतनी ही मेहनत करने वाली लड़की है तो आप इसे मुझे दे दें। मैं कोशिश करूँगा कि अगर आप सच बोल रही हैं तो मैं इससे शादी कर लूँ।"

मॉ ने अपनी उस बेटी को उस नौजवान को दे दिया और वह नौजवान उसको अपने घर ले गया। घर ले जा कर उसने उसको एक कमरे में बन्द कर दिया।

उस कमरे में बहुत सारी ऊन पड़ी थी कातने के लिये। उसको वहॉ ले जा कर वह नौजवान उससे बोला — "मैं समुद्री जहाज का कप्तान हूँ और अभी मैं एक समुद्री यात्रा पर जा रहा हूँ। अगर तुम

[66] Translated for the word "Spindle" – a round rod on a spinning wheel by which the thread is twisted and at the same time it is wounded upon. "Takalee" is for small work, while "Takuaa" is fixed in a Charakhaa. It is bigger in size and can contain much longer thread. See its picture above.

यह सारी ऊन मेरे वापस आने तक कात दोगी तो मैं अपनी यात्रा पर से आ कर तुमसे शादी कर लूँगा।"

इस कमरे में बहुत सुन्दर सुन्दर कपड़े और जवाहरात भी रखे थे क्योंकि वह कप्तान बहुत अमीर था। उसने उससे यह भी कहा — "जब तुम मेरी पत्नी बन जाओगी तब ये सारी चीज़ें तुम्हारी हो जायेंगी।"

यह कह कर वह उसको उस ऊन के साथ वहीं छोड़ कर अपनी यात्रा पर चला गया।

अब क्या था। अब तो वह लड़की थी और वह कमरा था। वह रोज नयी नयी पोशाकें पहनती नये नये जवाहरात पहनती। उसके दिन तो बस ऐसे ही गुजरने लगे। वह उन कपड़ों और गहनों को पहन कर अपने को शीशे में देखती और अपनी तारीफ करती।

बाकी समय वह यह सोचने में गुजारती कि वह क्या खायेगी और फिर घर के नौकर उसके लिये वही बनाते जो वह उनसे बनाने के लिये कहती।

अभी तक उसने उस ऊन को हाथ तक नहीं लगाया था जो उसको कातनी थी और अब कप्तान के आने में केवल एक दिन ही बाकी रह गया था। लड़की ने उस कप्तान से शादी की सारी उम्मीदें छोड़ दीं और रो पड़ी।

वह अभी रो ही रही थी कि खिड़की से चिथड़ों का एक थैला उसके पैरों के पास आ कर गिर पड़ा।

उसने उस थैले की तरफ देखा तो वह कोई चिथड़ों का थैला नहीं था बल्कि वह तो एक बुढ़िया थी जिसकी लम्बी लम्बी पलकें थीं। उसने लड़की से कहा — "डरो मत। मैं तुम्हारी सहायता करने आयी हूँ। मैं यह ऊन कातती हूँ और तुम इस ऊन की लच्छी बनाती जाओ।"

बच्चो, तुमने कहीं भी कोई भी इतनी तेज़ ऊन कातता नहीं देखा होगा जितनी तेज़ वह बुढ़िया ऊन कात रही थी। पन्द्रह मिनट के अन्दर अन्दर उसने वह सारी ऊन कात दी।

वह जितना ज़्यादा ऊन कातती गयी उसकी पलकें उतनी ही ज़्यादा लम्बी होती गयीं। पहले वे उसकी नाक से लम्बी हुईं, फिर उसकी ठोड़ी से लम्बी हुईं और फिर वे एक फुट लम्बी हो गयीं। फिर भी वह लम्बी होती ही जा रही थीं।

जब उसका काम खत्म हो गया तो लड़की ने पूछा — "मैम, मैं इसके बदले में आपको क्या दूँ?"

वह बुढ़िया बोली — "तुम्हें मुझे इसके बदले में कुछ देने की जरूरत नहीं है। बस जब तुम्हारी शादी की दावत हो तब मुझे उस दावत में बुला लेना।"

"पर मैं आपको बुलाऊँगी कैसे?"

बुढ़िया बोली — "बस तुम कोलम्बिया[67] बोल देना और मैं आ जाऊँगी। पर भगवान तुम्हारी सहायता करें अगर तुम मेरा नाम भूल

[67] Columbia – the name of the first old woman

गयीं तो इसका मतलब यह होगा कि जैसे मैंने कभी तुम्हारी सहायता की ही नहीं थी और तुम्हारा यह सब काम बेकार हो जायेगा।"

अगले दिन कप्तान जब घर वापस आया तो उसने देखा कि उसकी तो सारी ऊन कती पड़ी है। कती हुई ऊन देखते ही वह तो बहुत खुश हो गया और उसके मुॅह से निकला "वाह, बहुत बढ़िया। मुझे लगता है कि तुम ही वह लड़की हो जिसको मैं अपनी शादी के लिये ढूॅढ रहा था।

लो ये कपड़े और जवाहरात लो। ये मैंने तुम्हारे लिये ही खरीदे थे। पर अभी मुझे एक और समुद्री यात्रा पर जाना है। तब तक तुम एक इम्तिहान और दे दो।

यह उस ऊन से दोगुनी ऊन है जो मैंने तुमको पहले दी थी। अगर जब तक मैं अपनी यात्रा से वापस आऊॅ तब तक तुम इसको कात दो तो मैं तुमसे वहॉ से आ कर शादी कर लूॅगा।" इतना कह कर वह नौजवान वहॉ से फिर चला गया।

उसके जाते ही जैसे उस लड़की ने पहले किया था वैसे ही वह अबकी बार भी करती रही। कप्तान के वापस आने तक वह कपड़ों और गहनों को पहन पहन कर देखती रही और अच्छे अच्छे खाने खाती रही जब तक कि कप्तान के आने का आखिरी दिन नहीं आ गया। और वह सारी ऊन कातने के लिये वहीं पड़ी रही।

जब कप्तान के आने का आखिरी दिन आया तो वह फिर रोने बैठ गयी। तभी कमरे की चिमनी के रास्ते से एक पोटली आ गिरी और उसके पैरों तक लुढ़कती चली आयी।

पहले की तरह से उस पोटली में से भी एक बुढ़िया निकल आयी। इस बुढ़िया के होठ नीचे तक लटक रहे थे।

इस बुढ़िया ने भी इस लड़की से कहा कि वह उसकी सहायता करने के लिये वहॉ आयी थी। उसने इससे पहले वाली बुढ़िया से भी ज़्यादा मेहनत और तेज़ी से काम किया।

जितना ज़्यादा वह ऊन कातती जाती थी उसके होठ उतने ही ज़्यादा नीचे को लटकते जाते थे। इस बुढ़िया ने वह सारी ऊन आधा घंटे में कात कर रख दी।

जब इस लड़की ने उस बुढ़िया से पूछा कि वह उसको इसके बदले में क्या दे तो इसने भी यही कहा कि उसको इसके बदले में कुछ देने की जरूरत नहीं है। बस जब उसकी शादी कप्तान से हो तब वह उसको अपनी शादी की दावत में बुला ले।

लड़की ने पूछा कि वह उसको कैसे बुलाये।

तो उस बुढ़िया ने भी वही जवाब दिया — "बस तुम मुझे कोलम्बरा[68] कह कर पुकार लेना मैं आ जाऊॅगी। पर मेरा नाम मत भूल जाना क्योंकि अगर तुम मेरा नाम भूल गयीं तो मेरा यह सब

[68] Columbara – the name of the second old woman

किया धरा बेकार हो जायेगा। और फिर तुमको इसका फल भुगतना पड़ेगा।" यह कह कर वह वहॉ से चली गयी।

अगले दिन कप्तान अपनी यात्रा से वापस आ गया। उस सारी ऊन को कता हुआ देख कर वह तो आश्चर्य में पड़ गया पर ऊन तो कत चुकी थी सो इसमें अब शक की तो कहीं कोई गुंजायश ही नहीं थी।

पर फिर भी उससे रहा नहीं गया तो उसने उससे पूछ ही लिया — "यह सब ऊन तुमने काती है?"

"हॉ मैंने अभी अभी अपना काम खत्म किया है।"

"तुम ये कपड़े और जवाहरात लो। मैंने ये भी तुम्हारे लिये ही लिये थे। अब अगर तुम यह तीसरा ढेर भी मेरे वापस आने तक कात दो तो मैं तुमसे वायदा करता हूॅ कि अबकी बार मैं तुमसे शादी जरूर कर लूॅगा। यह ढेर उन दोनों ढेरों से कहीं ज़्यादा बड़ा है।"

इतना कह कर वह नौजवान अपनी तीसरी समुद्री यात्रा पर चला गया। इस लड़की ने इस बार भी वही किया जो पहली दो बार किया था। उसने अपना सारा समय नये नये कपड़े और गहने पहनने में और अपने आप को शीशे में देखने में और अच्छा अच्छा खाना खाने में बिता दिया और वह ऊन वहॉ ऐसे ही पड़ी रही।

कप्तान के आने से पहले दिन वह फिर रोने बैठ गयी। तभी कमरे की छत की नाली के छेद से फिर से एक फटे कपड़ों की

पोटली उसके पैरों के पास आ गिरी और पहले की तरह से उस पोटली में से भी एक बुढ़िया निकल आयी।

इस बुढ़िया के आगे के दॉत बहुत आगे की तरफ निकले हुए थे। इस बुढ़िया ने भी आते ही ऊन कातनी शुरू कर दी। पर यह बुढ़िया तो उन दोनों बुढ़ियों से भी ज़्यादा तेज़ी से ऊन कात रही थी जो उससे पहले उसकी ऊन कात कर गयी थीं।

जितनी ज़्यादा ऊन वह कातती जाती थी उसके दॉत उतने ही और ज़्यादा आगे की तरफ निकलते जाते थे। उसने वह सारी ऊन बहुत जल्दी ही खत्म कर दी।

जब बुढ़िया का काम खत्म हो गया तो इस लड़की ने इस बुढ़िया से भी पूछा कि वह उसको इस काम के बदले में क्या दे।

इस बुढ़िया ने भी वही कहा जो पहली दो बुढ़ियों ने कहा था कि अभी उसको कुछ भी देने की जरूरत नहीं है। बस केवल जब उसकी शादी कप्तान से हो तो वह उसको अपनी शादी की दावत में बुला ले।

पूछने पर कि वह लड़की उस बुढ़िया को अपनी शादी की दावत में कैसे बुलाये वह बुढ़िया बोली "बस तुम मुझे कोलम्बन[69] कह कर बुला लेना मैं आ जाऊॅगी। पर अगर तुम मेरा नाम भूल जाओगी तो बस समझ लेना कि जैसे तुमने मुझे पहले कभी देखा ही

[69] Columban – the name of the third old woman.

नहीं था।" यह कह कर वह बुढ़िया वहॉ से तुरन्त ही गायब हो गयी।

अगले दिन कप्तान अपनी समुद्री यात्रा से लौट आया और इतनी सारी ऊन कती देख कर तो उसने आश्चर्य से अपने दॉतों तले उॅगली दबा ली। पर क्योंकि अब ऊन तो कती पड़ी थी इसलिये आज भी शक की कोई गुंजायश नहीं थी।

यह सब देख कर वह बोला — "अब हमारी तुम्हारी शादी होगी।" और उसने शादी की तैयारियॉ शुरू कर दीं। उसने अपनी शादी में शहर के सभी कुलीन लोगों को बुलाया था। शादी की तैयारियों में वह लड़की उन बुढ़ियों को बिल्कुल ही भूल गयी।

जिस दिन उसकी शादी होने वाली थी उस दिन सुबह उसको याद आया कि उसको तो उन तीनों बुढ़ियों को भी बुलाना था ज्न्हिोंने उसको ऊन कातने में सहायता की थी। पर जब वह उनके नाम याद करने लगी ता उनमें से तो उसको एक का भी नाम याद नहीं आया। वे उसके दिमाग से बिल्कुल ही निकल गये थे।

उसने अपने दिमाग पर बहुत ज़ोर डाला कि वे नाम उसको किसी तरह से याद आ जायें पर उसको तो उन तीनों में से एक का नाम भी याद नहीं आया।

वह हमेशा खुश रहने वाली लड़की दुख के सागर में डूब गयी। कप्तान ने यह भॉप लिया कि वह लड़की बहुत परेशान है तो उसने उससे पूछा — "क्या बात है तुम इतनी परेशान क्यों हो?"

पर वह उसको क्या बताती। जब कप्तान को उसके दुखी होने का कुछ पता न चल सका तो उसने सोचा कि शायद शादी का यह दिन ही ठीक नहीं है सो उसने अपनी शादी की तारीख उस दिन से बदल कर उसके अगले वाले दिन के लिये तय कर दी।

पर उसका अगला दिन तो और भी खराब था। और उसका अगला दिन, यानी शादी का दिन, कैसा था यह तो बताने की जरूरत ही नहीं है। कप्तान को अपनी शादी की तारीख फिर से बदलनी पड़ी।

पर जैसे जैसे दिन बीतते जाते थे वह लड़की और ज़्यादा दुखी और चुप सी होती जाती थी। उसके माथे पर सिकुड़नें पड़ी रहतीं जैसे वह कुछ सोच रही हो और उसको उसकी परेशानी का हल न मिल रहा हो।

कप्तान ने उसको हॅसाने की बहुत कोशिश की – उसको चुटकुले सुनाये, हॅसी की कहानियॉ सुनायीं पर उसकी कोई भी कोशिश उस लड़की को खुश न कर सकी।

अब क्योंकि वह उसको खुश नहीं कर सका तो एक दिन उसने शिकार पर जाने का प्रोग्राम बनाया। जब वह शिकार के लिये जंगल गया तो इत्तफाक से बीच जंगल में काफी ज़ोर का तूफान आ गया और वह उस तूफान में घिर गया। पास ही में उसको एक झोंपड़ी दिखायी दे गयी सो उस तूफान से बचने के लिये वह उस झोंपड़ी में चला गया।

वह वहाँ पर अँधेरे में खड़ा था कि उसने वहाँ कुछ आवाजें सुनी — "ओ कोलम्बिया, ओ कोलम्बरा, ओ कोलम्बन, मक्का का दलिया[70] बनाने के लिये बर्तन ज़रा आग पर तो रख दो। लगता है कि वह लड़की तो हमको अपनी शादी की दावत में बुलाने वाली नहीं है।"

यह सुन कर उसने पीछे मुड़ कर देखा तो वहाँ उसको तीन पतली दुबली बदसूरत बुढ़ियें[71] दिखायी दीं। उनमें से एक की पलकों के बाल जमीन तक गिरे हुए थे, तो दूसरी के होठ उसके पैरों तक आ रहे थे और तीसरी के ऊपर के दाँत इतने बड़े थे कि वे उसके घुटनों तक आ रहे थे।

अब उस कप्तान की कुछ कुछ समझ में आया कि उसकी होने वाली पत्नी दुखी क्यों थी। अब वह उसको ऐसा कुछ बता सकता था जिससे वह हँस सके। और अगर वह इस बात पर भी न हँस सकी तब फिर वह किसी बात पर भी नहीं हँस सकेगी।

सो वह शिकार तो भूल गया और वहाँ से तुरन्त ही अपने घर की तरफ दौड़ चला। जा कर उसने तुरन्त उस लड़की को बुलाया और अपने पास बिठा कर कहा — "पता है आज क्या हुआ? बस तुम सुन लो जो मैं तुमको बताऊँ। और देखो हाँ बीच में मत बोलना।

[70] Translated for the Italian dish "Polenta" – a kind of thick boiled paste of yellow cornmeal.
[71] Translated for the word "Crone"

आज जब मैं जंगल गया तो वहॉ बहुत ज़ोर की बारिश आ गयी। और बारिश से बचने के लिये मैं एक झोंपड़ी में चला गया।

वहॉ मैंने तीन जादूगरनियॉ[72] देखीं जिनमें से एक की पलकों के बाल जमीन पर लटक रहे थे, तो दूसरी के होठ उसके पैरों तक लटके हुए थे और तीसरी के दॉत उसके घुटनों तक लम्बे थे। और वे एक दूसरे को कोलम्बिया, कोलम्बरा और कोलम्बन कह कर पुकार रही थीं।"

यह सुन कर उस लड़की का चेहरा तो वाकई चमक गया और वह बहुत ज़ोर से हॅस पड़ी।

जब उसकी हॅसी थोड़ी सी रुकी तो वह बोली — "शादी की दावत की तैयारी करो। पर तुम मेरे ऊपर एक मेहरबानी और कर दो। क्योंकि तुमने उन तीन जादूगरनियों के नामों से मुझे हॅसाया है मैं उनको भी अपनी शादी की दावत में बुलाना चाहती हूॅ।"

"यह भी कोई पूछने की बात है। तुम उनको जरूर बुलाओ।" और फिर उस लड़की ने उनको अपनी शादी की दावत में बुलाया।

शादी की दावत के दिन उन तीनों के लिये अलग से एक गोल मेज सजायी गयी। वह मेज इतनी छोटी थी कि उन तीनों की ऑखों की लम्बी पलकों के बाल, लटकते होठ और बड़े बड़े दॉत कहॉ तक जा रहे थे यह किसी को भी दिखायी नही दिये।

[72] Translated for the word "Witches"

जब खाना खत्म हो गया तो कैप्टेन ने कोलम्बिया से पूछा — "आपकी पलकों के बाल इतने लम्बे क्यों हैं?"

कोलम्बिया ने जवाब दिया — "बहुत ही बारीक धागा कातने की वजह से मेरी ऑखों पर बहुत ज़ोर पड़ता है इसी लिये वे इतने लम्बे हो गये हैं।"

फिर कैप्टेन ने कोलम्बरा से पूछा — "मैम, क्या मैं जान सकता हूॅ कि आपके होठ इतने नीचे को लटके हुए क्यों हैं?"

कोलम्बरा बोली — "क्योंकि मैं जब धागा कातती हूॅ तो अक्सर अपनी उॅगली गीली करने के लिये अपने होठों पर हाथ फेरती रहती हूॅ इसलिये वे लटकते जाते हैं।"

फिर कैप्टेन ने कोलम्बीना से पूछा — "और कोलम्बीना जी आप? आपके दॉत इतने लम्बे कैसे हो गये?"

कोलम्बीना बोली — "क्योंकि मुझे अक्सर धागे में पड़ी गॉठें अपने दॉतों से काटनी पड़ती हैं न, इसी लिये।"

"ओह अच्छा अच्छा।"

फिर वह अपनी पत्नी से बोला — "जाओ और एक धागा लपेटने वाली तकली ले कर आओ।"

जब वह तकली ले कर आयी तो उसने उसको वहीं आग में फेंक दिया और बोला — "अब से तुम कभी धागा नहीं कातोगी।"

इसके बाद वह मोटी लड़की खुशी खुशी कैप्टेन के साथ आराम से रही। उसको कातने के लिये फिर कभी धागा नहीं दिया गया।

16 सूअर के मॉस के सात टुकड़े[73]

एक भिखारिन बुढ़िया अपनी बेटी को सूअर के मॉस के सात टुकड़े खाने के बाद उसकी इस भूख के लिये उसे बहुत मारती है और एक व्यापारी को यह विश्वास दिला देती है कि क्योंकि उसने सात तकलियॉ कात ली हैं इसलिये वह उसको ज़्यादा काम करने से मना कर रही थी। यह सुन कर वह व्यापारी उससे शादी कर लेता है। पर उसको तो यह काम आता नहीं है। फिर भी तीन परियों की सहायता से व्यापारी के व्यापार के दौरे से लौटने से पहले वह अपना कपड़ा बुन लेती है। उसके बाद वह यह कसम खा लेता है कि वह अब उससे कोई काम नहीं करायेगा।

सबने मैनैका[74] को बहुत बहुत धन्यवाद दिया कि उसने इतनी सुन्दर कहानी सुनायी जिसने सुनने वालों की ऑखों में वही दृश्य पैदा कर दिया जो इतनी दूर हो रहा था और टौला[75] का दिल तो इस बात से जल ही उठा। बस उसने सोच लिया कि वह इससे बेहतर कहानी सुनायेगी। सो उसने अपना गला साफ किया और फिर यह कहानी सुनानी शुरू की।

उसके बारे में तो कुछ कहना ही नहीं चाहिये जो अगर पूरा सच ना हो, और बल्कि आधा भी सच न हो और इसी वजह से किसी ने कहा है कि टेढ़े चेहरे और सीधे काम। वह दुनियॉ की सारी बातें

---

[73] The Seven Bits of Bacon-Rind (Fourth Diversion, of the Fourth Day) – a folktale from Italy, Europe. Taken from the Book "Il Pentamerone, or the Tale of Tales", by Giovanni Battiste Basile, 1634. London: Henry and Company. 1893. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com in three parts. This story is translated from the Web Site: http://www.surlalunefairytales.com/eastsunwestmoon/stories/sevenbits.html

[74] Meneca is one of the story tellers.

[75] Tolla is one of the hearers of these stories.

जानता था शायद उसने ऐन्टोनी और पामीरो[76] की कहानी सुनी होगी जिनकी भौंहें नहीं थी और जिन्होंने चिड़िया पकड़ने वाला गोंद इस्तेमाल किये बिना ही चिड़िया[77] पकड़ ली थी।

यह तो अनुभव की बात है कि यह धरती एक सम्पन्नता[78] की सच्ची तस्वीर है जहॉ जो सबसे ज़्यादा काम करता है उसको सबसे कम मिलता है जिसके पास सबसे अच्छा होता है वह बस जैसे जैसे उसके पास आता जाता है वह उसको वैसे वैसे लेता जाता है और यह आशा नहीं करता कि मैकैरोनी[79] उसके गले में आ कर अपने आप ही पड़ जायेगी।

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब बुढ़िया रहती थी। वह अपनी तकली हाथ में लिये हुए रास्ते भर सूत कातते हुए घर घर दरवाजे दरवाजे भीख मॉग कर अपना गुजारा करती थी।

जो साल में छह महीने अपने हाथ के काम पर ज़िन्दा रहती हो वह अपनी पतली सी बेटी को कैसे मोटा करे।

एक बार इस तरह से भीख मॉगते मॉगते उसने सूअर के मॉस के सात टुकड़े उनकी खाल सहित इकट्ठा किये। उनको वह काफी

[76] Antony and Palmiero
[77] Translated for the word “Becafico” – a kind of bird
[78] Translated for the Italian word “Cuccagna” – pronounced as “Kukana”
[79] Macaroni is an Italian dish like pasta and spaghetti – see its picture above.

सारे भूसे और कुछ लकड़ी के साथ घर ले गयी जो उसने रास्ते में ही इकट्ठा किये थे।

घर ले जा कर उसने उनको अपनी बेटी को दिया और उससे उनको पकाने के लिये कहा और खुद वह कुछ मालियों के पास उनसे हरे पत्ते लेने के लिये चली गयी ताकि उनको वह उस मॉस के साथ के लिये पका सके। इस तरह से आज उसको अच्छा खाना मिलता।

उसकी बेटी ने उन टुकड़ों की खाल निकाली उनके बाल जलाये और उन खालों को एक बर्तन में पकने रख दिया। पर बर्तन में तो वे अभी ठीक से उबले भी नहीं थे कि वे उसके गले में उबलने लगे। क्योंकि उनमें से जो खुशबू उड़ रही थी वह उसकी भूख को बढ़ा रही थी और कह रही थी कि उनको खाया जाये।

कुछ देर तक तो उसने उनके खाने के लालच को रोका पर फिर जब उससे उस बर्तन में से आती खुशबू उससे और ज़्यादा नहीं सही गयी तो अपने लालच की वजह से मजबूर हो कर उसने उसमें से कुछ निकाला और उसे चखा।

उसका स्वाद उसे अच्छा लगा तो उसने दूसरा टुकड़ा निकाला और खा लिया। फिर तीसरा फिर चौथा और इस तरह उसने सारे टुकड़े खा लिये।

जब उसने देखा कि उसने तो मॉस की खाल के सारे टुकड़े खत्म कर दिये तो उसको लगा कि यह तो उसने बहुत गड़बड़ कर

दी। जब उसको अपनी गलती महसूस हुई तो उसको लगा जैसे वे खालों के टुकड़े उसके गले में अटक रहे हैं तो उसने यह बात अपनी मॉ से छिपाने की सोची।

इसके लिये उसने एक जूता लिया उसके तले के सात टुकड़े काटे और उनको बर्तन में रख दिया।

इस बीच उसकी मॉ हरे पत्ते ले कर आ गयी। उसने उनको उनका कोई भी हिस्सा बिना बर्बाद किये छोटे छोटे टुकड़ों में काटा और यह देख कर कि बर्तन में पानी उबल रहा था उसने वे सारे हरे पत्ते उसमें डाल दिये। साथ में उसने वह चर्बी भी डाल दी जो उसको एक गाड़ी वाले ने अपने पहियों में लगाने के बाद बच गयी को उसको भीख में दे दी थी।

उसके बाद उसने अपनी बेटी से लकड़ी के पुराने बक्से के ऊपर एक मोटा कपड़ा बिछाने के लिये कहा। फिर उसने एक थैले में से दो टुकड़े पुरानी डबल रोटी के निकाले एक आलमारी में से एक लकड़ी का बर्तन निकाला उस बर्तन में उनको रख कर काटा और उनके ऊपर जूते के टुकड़े जो हरे पत्तों के साथ पकाये गये थे डाल दिये और खाना शुरू कर दिया।

पहला कौर खाते ही उसको लगा कि उसके दॉत जूते का चमड़ा खाने के लिये नहीं बने। या फिर सूअर की खालें किसी जादू से इतनी सख्त हो गयी थीं।

सो उसने अपनी बेटी से कहा — "तूने इस बार मुझसे धोखा किया है। भगवान तुझे शाप दे तूने इस बर्तन में कौन सी खराब चीज़ डाल दी है? या मेरा पेट पुराना जूता बन गया है? कि तूने मुझे पुराना चमड़ा खाने के लिये दिया। तू मुझे जल्दी बता कि तूने यह सब क्या किया है और यह सब कैसे हुआ नहीं तो मैं तेरे शरीर की कोई हड्डी साबुत नहीं छोड़ूँगी।"

सैपोरिता[80] ने उसको मना करना शुरू किया तो बुढ़िया का गुस्सा और बढ़ना शुरू हुआ। बेटी ने कहा कि शायद बर्तन में धुँआ घुस गया होगा और उसी की वजह से यह सब हो गया होगा। वही धुँआ उसमें से निकला होगा जिसने उसको अन्धा कर दिया होगा और फिर उसी की वजह से यह बुरा काम करने के लिये उसको मजबूर किया होगा।

बुढ़िया ने जब देखा कि उसका खाना तो जहर हो गया है तो उसने आव देखा न ताव और झाड़ू वाला डंडा उठा कर उससे बेटी को सात बार मारा जहॉ भी वह उसके शरीर पर लगा। बेटी इस मार से बेचारी बहुत ज़ोर से चीखी।

इसी समय उधर से एक व्यापारी गुजर रहा था। उसने उस लड़की की चीख सुनी तो वह घर में घुस आया। उसने देखा कि मॉ अपनी बेटी के साथ बहुत ही बुरा व्यवहार कर रही है।

[80] Saporita – name of the daughter of the old woman

यह देख कर उसने मॉ के हाथ से डंडा छीन लिया और उससे पूछा — "इस बेचारी बच्ची ने आपके साथ ऐसा क्या किया है जो आप इसको इस तरह से पीट रही हैं। लगता है कि आज तो आप इसको मार कर ही दम लेंगी।

क्या आपने इसको भाला चलाते हुए देखा या फिर अपने पैसों का डिब्बा तोड़ते देखा? इस बेचारी बच्ची के साथ ऐसा करते आपको शर्म नहीं आती?"

बुढ़िया बोली — "तुम नहीं जानते कि इसने मेरे साथ क्या किया है। यह बेशर्म लड़की। इसको मालूम है कि मैं भीख मॉग कर गुजारा करती हूॅ फिर भी इसको इस बात की कोई परवाह नहीं है। यह मुझे दवा खिला खिला कर मारना चाहती है।

हालॉकि मैंने इससे कहा कि इस समय गर्मी का मौसम है और तुझे इतना काम नहीं करना चाहिये कि तू बीमार पड़ जाये क्योंकि मेरे पास इतना नहीं है जो मैं तुझे फिर ठीक से खिला सकूॅ।

पर यह सुनती ही नहीं। मेरे इतना कहने के बावजूद इस लड़की ने सात तकली सूत काता है। इससे इसके दिल को कोई बुरा रोग लग जायेगा और फिर यह दो महीने तक बिस्तर में पड़ी रहेगी।"

व्यापारी ने जब यह सुना तो वह उस लड़की की मेहनत और चतुरायी देख कर बहुत खुश हुआ। उसने सोचा कि यह लड़की तो उसके घर को परियों का घर बना देगी सो उसने बुढ़िया से कहा —

“मॉ जी अब इस पर अपना गुस्सा छोड़िये क्योंकि मैं अब आपको इस खतरे से बचाने वाला हूॅ। मैं आपकी बेटी से शादी कर के इसे अपने घर ले जाऊॅगा जहॉ मैं इसको राजकुमारी की तरह रखूॅगा।

भगवान की दया से मैं अपनी मुर्गियॉ पालूॅगा और अपने सूअरों को मोटा करूॅगा। मैं अपने कबूतर पालूॅगा। मेरा घर इतना भर जायेगा कि मैं उसमें मुश्किल से इधर उधर चल पाऊॅगा।

भगवान ने ने मेरे ऊपर अगर कृपा की तो मुझे कोई बुरी नजर भी नहीं लगेगी क्योंकि मेरे भंडार मक्का से भरे रहेंगे। मेरे बर्तन आटे से मेरे घड़े तेल से और मेरे घड़े चर्बी से भरे रहेंगे।

मेरी रसोई नमक और मसालों से भरी रहेगी। मेरी आलमारियॉ लकड़ी कोयले और कपड़े से भरी रहेंगी। दुलहे के सोने लायक एक बहुत बढ़िया पलंग होगा। और इसके बाद भी मुझे किराया और ब्याज खाने के लिये मिलता है। मैं एक बहुत ही बड़े लौर्ड की तरह ज़िन्दगी गुजारता हूॅ।

और अगर मेरा काम ठीक से चलता रहा तो दस डकैट[81] तो मुझे मिल ही जायेंगे सो मैं और अमीर हो जाऊॅगा।”

बुढ़िया ने जब इस खुशकिस्मती को इस तरह आते देखा जिसको उसने सपने में भी कभी नहीं सोचा था तो उसने सैपोरीता का हाथ पकड़ कर उठाया और उसे व्यापारी को थमा दिया और

[81] Ducket – the then curreny in use in italy

कहा — "लो अब यह तुम्हारी है। भगवान करे यह तुम्हारी बन कर बहुत साल तक खुश रहे तन्दुरुस्त रहे और इसके कई बच्चे हों।"

व्यापारी ने सैपोरिता को गले लगाया और उसको घर ले आया। अब वह उस दिन का बड़ी बेचैनी से इन्तजार कर रहा था कि जब वह अपनी पत्नी के कातने के लिये बाजार से अलसी की रुई ले कर आयेगा।

जब अगला सोमवार आया तो वह बाजार गया तो वह बहुत सवेरे ही उठ गया और उधर चला गया जहॉ देहातिनें अपना अपना सामान बेचने आती थीं।

उसने उनसे बीस दर्जन[82] गट्ठर अलसी की रुई खरीदी और सैपोरिता को देते हुए कहा — "अगर तुम्हारी कातने की इच्छा हो तो डरना नहीं क्योंकि तुमको यहॉ तुम्हारी मॉ जैसा गुस्सा करने वाला और तुम्हारे शरीर की हड्डी तोड़ने वाला कोई और नहीं मिलेगा जो अगर तुम एक तकली सूत कातोगी।

बल्कि मैं तो तुमको अगर तुम दस तकली सूत कातोगी तो मैं तुमको उसके बदले में दस चुम्बन दूँगा। और अगर तुम एक अटेरन[83] भर कर सूत कातोगी तो मैं तुम्हें अपना दिल दे दूँगा।

जब तुम्हें अच्छा लगे तभी सूत कातना। अभी मैं बीस दिनों के लिये एक मेले में जा

[82] One Dozen is equal to 12, so 20 Dozens should be equal to 240.
[83] Translated for the word "Distaff". See its picture above.

रहा हूॅ। जब मैं वहॉ से वापस लौटूॅगा तब तुम मुझे इसमें से दस दर्जन अलसी की रुई कात कर दे देना। इसके बदले में मैं तुमको रूसी कपड़े का हरी मखमल के बौर्डर लगा एक कोट खरीद दूॅगा।"

सैपोरिता ने अपने मन में कहा "तुम्हें जब जाना हो तब जाओ। तुमने तो मेरी अटेरन भर दी है। जाओ और जा कर आग जलाओ। और अगर तुम मेरे हाथ की बनी किसी कमीज की आशा कर रहे हो तो तुमको अपने लिये स्याही सोख्ता[84] तक तो मिलता नहीं। तुमने तो उसको पा लिया है, काली बकरी का दूध, बीस दर्जन अलसी की रुई के गट्ठर बीस दिन में।

भगवान करे कि जब तुम देश वापस लौट रहे हो तो तुम्हारी नाव के साथ कुछ बुरा हो जाये। जाओ क्योंकि तुम्हारे पास अभी समय है। जब जिगर पर बाल उग आयेंगे और बन्दर के पूॅछ उग आयेगी तब तुमको यह रुई कती हुई मिल जायेगी।"

इस तरह उसको रुई दे कर उसका पति मेले चला गया। इस बीच उस लड़की ने जो लालची थी भूखी थी और बहुत आलसी भी थी बिल्कुल भी इन्तजार नहीं किया।

तुरन्त ही उसने आटा बनाया तेल लिया और उसके पकौड़े तलने बैठ गयी। उसने सुबह से शाम तक बहुत सारे केक बनाये।

[84] Translated for the words "Blotting Paper" – this is a kind of paper which absorbs extra ink from the paper after writing with the ink.

उसने कुछ और नहीं किया सिवाय चूहे की तरह कुतरने के और सूअर की तरह खाने के।

अब उसके पति के आने का समय आने वाला था तो उसने बहुत बढ़िया सूत कातना शुरू किया। सूत कातने से होने वाले शोर का ख्याल रखते हुए जो जब व्यापारी वापस आयेगा तब होगा और देखेगा कि उसकी रुई तो अनछुई रखी है घड़े और बर्तन खाली रखे हैं उसने एक बड़ी सी डंडी ली और उस पर दर्जनों अलसी की रुई के गट्ठर लपेट दिये।

फिर उसको अपने छज्जे से निकले एक लोहे के डंडे से उसके ऊपर टॉग दिया और उस तकलियों के भी बाप को नीचे गिराना शुरू किया। अपने पास उसने पानी की बजाय मैकैरोनी के पानी का एक बहुत बड़ा कटोरा रख लिया और फिर जहाज़ की रस्सी की तरह से मोटा मोटा सूत कातना शुरू किया।

हर बार जब भी वह अपनी उॅगली उस पानी में भिगोती वह सड़क पर चलने वाले के साथ कार्निवाल का एक खेल खेलती।

उसी समय उधर से तीन परियॉ जा रही थीं। जब उन्होंने यह भद्दा दृश्य देखा तो उसको देख कर उनको इतना आनन्द आया कि वे इतना हॅसी इतना हॅसी कि हॅसते हॅसते दोहरी हो गयीं।

और इस वजह से वे चिल्लायीं — "भगवान करे इस घर की सारी अलसी की रुई तुरन्त ही कत जाये उसका कपड़ा बन जाये

और वह धुल कर सफेद हो जाये।" और यह सब तुरन्त ही हो गया।

भगवान का यह भला काम देख कर सैपोरिता तो बहुत खुश हुई। लेकिन उसके पति को ऐसी खुशी फिर कभी हासिल न हो इसलिये उसने सोचा कि उसको उसे बिस्तर में लेटे मिलना चाहिये सो उसने अपने बिस्तर पर पहले कुछ हैज़ल नट बिछाये और फिर जा कर उस पर लेट गयी।

जब उसका पति आया तो वह दर्द से कराहने लगी। कभी वह इस करवट लेटती कभी दूसरी तरफ। इससे उसके नीचे पड़े हैज़ल नट चटकते तो उसकी आवाज ऐसी लगती जैसे उसकी हड्डियॉ चटक रही हैं।

जब उसका पति आया तो उसने उससे पूछा कि वह कैसी है।

उसने बड़ी दर्द भरी आवाज में कहा — "मैंने इतना बुरा समय पहले कभी नहीं देखा जैसा कि मेरे ऊपर अब है। मुझे लगता है मेरे शरीर में अब एक हड्डी भी साबुत नहीं बची है। जबकि तुमको लग रहा होगा कि यह तो भेड़ के लिये थोड़ी सी घास है।

बीस दर्जन अलसी की रुई बीस दिनों में कातना और साथ में उसका कपड़ा भी बुनना? तुम अपना रास्ता ढूँढो मेरे पति क्योंकि तुमने मेरी मॉ को तो कुछ दिया नहीं है।

जब मैं मर जाऊॅगी तो मेरी मॉ मेरी जैसी कोई दूसरी बेटी पैदा नहीं करेगी और फिर तुम इस गन्दे काम के लिये मुझे नहीं पकड़ पाओगे। मुझे इतनी सारी तकलियॉ भरने का कोई शौक भी नहीं है कि मैं अपने शरीर की तकली तोड़ दूॅ।"

यह सुन कर उसके पति ने उसको प्यार से हजारों बार सहलाया और कहा — "तुम बस एक बार ठीक हो जाओ प्रिये। क्योंकि दुनियॉ के सारे कपड़ों से ज़्यादा मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूॅ। अब मुझे पता चला कि तुम्हारी मॉ तुमको इतना सारा काम करने के ऊपर तुम्हें जो मार रही थी वह ठीक कर रही थी क्योंकि उतना काम करने के बाद तुम्हारी तन्दुरुस्ती वाकई खराब हो जाती।

इतना काम करने पर तो तुम्हारी चमक ही खत्म हो गयी है। अब तुम खुश हो जाओ। अब मैं तुम्हारा बहुत ख्याल रखूॅगा कि अब फिर से तुम्हारी तबियत खराब न हो। और हॉ ज़रा रुको। मैं अभी डाक्टर के पास जाता हूॅ।"

यह कह कर वह तुरन्त ही डाक्टर कैटूपोलो के पास दौड़ गया। उसके जाने के बाद सैपोरिता ने अपने नीचे बिछे हुए सारी गिरियॉ खायीं और उनके छिलके खिड़की से बाहर फेंक दिये।

डाक्टर भी जल्दी ही आ गया। उसने उसकी नब्ज़ देखी उसका चेहरा देखा उसके कमरे में रखा बर्तन देखा रात वाले बर्तन में कुछ सूॅघा और फिर यह नतीजा निकाला कि उसकी बीमारी उसके अन्दर ज़्यादा खून थी। इसके अलावा कोई काम न करना था।

व्यापारी को लगा कि यह डाक्टर बेकार की बात कर रहा था सो उसने एक कारलीनो[85] उसके हाथ में रखा और उसे बाहर छोड़ आया। अब वह किसी दूसरे डाक्टर के पास जाना चाहता था पर सैपोरिता बोली — "अब तुम्हें किसी दूसरे डाक्टर के पास जाने की कोई जरूरत नहीं है। मेरी बीमारी इस एक डाक्टर को देख कर ही ठीक हो गयी।"

यह देख कर उसके पति ने उसको गले लगाया और उससे कहा कि आगे से उसको कोई काम करने की कोई जरूरत नहीं है। वह कोई काम न करे बस आनन्द करे क्योंकि एक यूनानी और बन्द गोभी दोनों को रखना नामुमकिन है।[86]

[85] Carlino maybe the then currency in use in Italy

[86] It maybe a saying "It is impossible to have a Greek and cabbages together."

17 किनकाश मार्टिन्को[87]

रम्पिलस्टिल्तस्किन जैसी यह कहानी स्लाविक देशों में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब स्त्री रहती थी। उसके एक अकेली बेटी थी हेलेन। वह बहुत ही आलसी थी। एक दिन जब उसने किसी भी काम को करने से मना कर दिया उसकी मॉ उसको नदी के किनारे ले गयी और वहॉ उसकी उॅगलियों को एक चौरस पत्थर से मारने लगी। जैसे तुम लोग कपड़े धोते समय कपड़ा पीटते हो। लड़की बेचारी बहुत रोती रही।

तभी वहॉ से लाल किले का राजकुमार गुजरा तो उसने लड़की की मॉ से उसके इस तरह का बुरा व्यवहार करने की वजह पूछी। क्योंकि वह तो यह देख कर ही डर गया था कि कोई मॉ अपनी बच्ची से ऐसा व्यवहार कर सकती है।

स्त्री बोली — "मैं इसे सजा क्यों न दूॅ। यह आलसी लड़की सिवाय रुई को सोने में कातने के और कुछ करती ही नहीं।"

राजकुमार यह सुन कर तो चिल्ला ही पड़ा — "क्या? क्या यह वास्तव में रुई से सोने का धागा बनाना जानती है। अगर यह ऐसा कर सकती हैं तो आप इसे मुझे बेच दें।"

---

[87] Kinkach Martinko. A folktale from Slav. From : "Fairy Tales of the Slav Peasants and Herdsmen". Translated by Emily J Harding. NY: Dodd Mead & Co, and London: George Allen, 1896.
Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#kinkach

"खुशी से। आप इसका क्या मोल देंगे।"

"आधा माप सोना।"

"ठीक है ले जाइये।" जैसे ही उसको पैसा दिया गया उसने अपनी बेटी को राजकुमार को दे दिया।

राजकुमार ने उसको अपने साथ घोड़े पर बिठाया और उसको अपने घर ले गया।

लाल किला पहुँच कर वह हेलेन को एक कमरे में ले गया जो फर्श से ले कर छत तक रुई से भरा हुआ था। उसने उसके लिये चरखा मँगवाया और उसको वह दे कर बोला — "जब तुम यह सारी रुई सोने के तारों में कात दोगी तो मैं तुम्हें अपनी पत्नी बना लूँगा।"

यह कह कर वह वहाँ से कमरे का ताला लगा कर चला गया। अपने आपको एक कैदी समझ कर बेचारी लड़की बहुत ज़ोर से रो पड़ी।

तभी उसको अपने सामने वाली खिड़की पर बैठा हुआ एक अजीब सा आदमी दिखायी दिया। उसने लाल टोपी पहनी हुई थी और उसके जूते किसी अजीब सी चीज़ के बने हुए थे।

उसने पूछा — "तुम इतना क्यों रोती हो?"

वह बोली — "क्या करूँ। मैं एक अभागी दासी हूँ। मुझे इस सारी रुई को सोने के धागे में कातने का हुक्म दिया गया है पर यह

तो मुमकिन नहीं है। मैं तो यह काम कभी कर ही नहीं सकती। मुझे नहीं मालूम कि अब मेरा क्या होगा।"

"मैं तुम्हारी यह रुई तीन दिन में सोने में कात दूँगा। पर इस शर्त पर कि काम खत्म होने पर तुम्हें मेरा ठीक नाम बूझना पड़ेगा और बताओ कि मैंने ये किस चीज़ के बने जूते पहन रखे हैं।"

बिना एक पल सोचे समझे कि वह उसका ठीक नाम जान पायेगी या नहीं उसने हामी भर दी। वह अजीब सा दिखायी देने वाला आदमी ज़ोर से हॅसा। उसने उसके हाथ से तकली ली और अपना काम करने बैठ गया।

सारा दिन वह अपना काम करता रहा। रुई खत्म होती रही जबकि सोने के तार की लच्छियॉ बढ़ती रहीं बढ़ती रहीं। वह छोटा आदमी सारा समय कातता ही रहा। बिना एक पल को अपना काम रोके हुए उसने हेलेन को बताया कि सोने का धागा कैसे काता जाता है।

जब रात होने को आयी तो उसने अपनी सारी लच्छियॉ बॉधीं और लड़की से पूछा — "क्या तुमको मेरा नाम पता चला? क्या तुम पता चला सकीं कि मेरे जूते किस चीज़ के बने हैं?"

हेलेन बोली — "नहीं अभी तक तो मुझे नहीं पता चला।"

यह सुन कर वह मुस्कुराया और खिड़की से हो कर बाहर गायब हो गया। हेलेन बैठ गयी और आसमान की तरफ देखने लगी और सोचती रही सोचती रही सोचती रही। वह उस बौने के नाम के बारे

में सोचती रही फिर सोचती रही कि उसके जूते किस चीज़ के बने थे। क्या वह चमड़े के बने थे या तिनकों के या लोहे के? नहीं नहीं वे इन चीज़ों के तो नहीं थे। और जहॉ तक उसके नाम का सवाल वह पहेली सुलझाना तो और भी मुश्किल काम है।

वह सोचने लगी "मैं उसे क्या कह कर पुकारूँ – जौन, हेनरी या कुछ और। या फिर पौल और जोसेफ।"

वह इन विचारों में इतनी ज़्यादा डूब गयी कि अपना खाना खाना ही भूल गयी। उसका यह ध्यान टूटा बाहर से आने वाली रोने वाली आवाजों से कराहने की आवाजों से।

उसने बाहर झॉक कर देखा तो देखा कि किले की दीवार के नीचे एक सफेद बालों वाला बूढ़ा बैठा हुआ था। वह बोला — "मैं एक बदकिस्मत आदमी हूँ। मैं भूख प्यास से मरा जा रहा हूँ पर कोई मेरे ऊपर दया नहीं करता।"

हेलेन ने तुरन्त ही उसको अपना खाना दे दिया और उससे अगले दिन आने के लिये कहा। उसने भी अगले दिन आने का वायदा किया। वह फिर सोचती रही कि उस अजीब आदमी को वह क्या जवाब देगी जिसने उसे रुई को सोने के धागे में कातने की तरकीब बतायी थी। सोचते सोचते वह वहीं रुई के ऊपर सो गयी।

वह छोटा आदमी अगले दिन सुबह आ गया और सारा दिन कातता रहा। उनकी ऑखों के सामने उनका काम बढ़ता रहा। जब

शाम हो गयी तब उसने उससे फिर पूछा कि उसका नाम क्या है और उसके जूते किस चीज़ के बने हुए हैं।

जब उसको अपने सवालों का जवाब नहीं मिला तो वह उसकी हँसी उड़ाता हुआ वहाँ से गायब हो गया। हेलेन फिर वही सोचती बैठी रह गयी। पर वह कितना भी सोचती उसे उसके सवालों के जवाब नहीं मिलते।

वह यह सब सोच ही रही थी कि सफेद बालों वाला बूढ़ा वहाँ आ पहुँचा। उसने फिर उस बूढ़े को खाना दिया। वह बहुत बीमार दिखायी दे रही थी और उसकी आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं क्योंकि उसको लग रहा था वह न तो कभी कातने वाले का नाम पता कर पायेगी और न ही उसके जूतों के बारे में कुछ मालूम कर पायेगी जब तक कि भगवान ही उसकी कोई सहायता न करें।

बूढ़े ने जब खाना खा पी लिया तो उसने पूछा कि "तुम इतनी दुखी क्यों हो। तुम मुझे अपने दुख की वजह तो बताओ।"

पहले तो हेलेन ने उसको बहुत देर तक कुछ नहीं बताया पर आखिर उसने उसको सारा मामला खोल कर बता दिया कि किस शर्त पर उसका सोने का धागा काता गया था। उसने उसको यह भी बताया कि अगर उसने उस बौने के सवालों का जवाब ठीक से नहीं दिया तो उसके साथ कुछ बुरा भी हो सकता है।

बूढ़े ने उसकी बातें ध्यान से सुनीं तो हाँ में सिर हिलाने के बाद वह बोला — "आज जब मैं जंगल में से हो कर आ रहा था मैंने

देखा कि एक जगह बहुत बड़ा लकड़ी का ढेर जल रहा है। उसके चारों तरफ नौ लोहे के बर्तन रखे हुए हैं।

एक छोटा आदमी लाल टोपी पहने उसके चारों तरफ नाच नाच कर गा रहा है —

मेरी प्यारी दोस्त सुन्दरी हेलेन जो लाल किले के पास है
उसको दो दिन और दो रात हो गये मेरा नाम जानने के लिये
वह कभी नहीं ढूँढ पायेगी इसलिये तीसरी रात भी साफ है
मेरी प्यारी दोस्त सुन्दरी हेलेन जो अब मेरी हो जायेगी
हुर्रा क्योंकि मेरा नाम किनकाश मार्टिन्को है
हुर्रा क्योंकि मेरे जूते कुत्ते की खाल के हैं

तुम यही तो जानना चाहती थीं न मेरी प्यारी बच्ची। इसे याद रखना और तुम बच जाओगी।"

यह कह कर वह बूढ़ा वहॉ से गायब हो गया। हेलेन को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ पर उसने जो उसके साथी ने उससे कहा था उसे याद कर लिया और शान्ति से सोने चली गयी कि अब वह कल उस बौने से निडर हो कर बात कर सकेगी।

तीसरे दिन सुबह सवेरे ही छोटा बूढ़ा वहॉ आया और अपने काम पर बैठ गया। क्योंकि उसे मालूम था कि आज उसे सारी रुई खत्म करनी है। उसके बादी ही वह लड़की के ऊपर अपना अधिकार जता सकेगा।

जब शाम हुई तब तक सारी रुई कत चुकी थी और सारा कमरा सोने की चमक से चमक रहा था। जैसे ही उसका काम खत्म हुआ

वह वहॉ से बहुत ही विश्वास के साथ उठा। उसके हाथ उसकी जेबों में हेलेन के सामने उठ गिर रहे थे।

वे उठते गिरते हाथ उससे पूछ रहे थे कि उसका नाम क्या है और उसके जूते किस चीज़ के बने हैं। पर उसको पूरा विश्वास था कि हेलेन उसके सवालों के जवाब नहीं दे पायेगी।

पर हेलेन बोली "तुम्हारा नाम किनकैश मार्टिन्को है और तुम्हारे जूते कुत्ते की खाल के बने हैं।'

यह सुन कर वह फर्श पर चरखी की तरह घूम गया। गुस्से में अपने बाल नोच डाले और अपनी छाती पीटने लगा। कमरे की दीवारें कॉप गयीं।

वह बोला — "यह तुम्हारी खुशकिस्मती है कि तुमने मेरे सवालों जवाब देने की कोशिश की। अगर तुमने ऐसा नहीं किया होता तो मैं तुम्हें यहीं इसी जगह फाड़ डालता।"

और यह कह कर खिड़की के रास्ते एक बवंडर की तरह से चला गया। हेलेन उस बूढ़े की बहुत आभारी थी जिसने उसे ये जवाब बताये थे। वह उसको खुद ही धन्यवाद देने वाली थी पर उसके बाद तो वह कभी वहॉ दिखायी ही नहीं दिया।

लाल किले का राजकुमार उसके इस तरह से ठीक समय पर काम खत्म कर लेने पर बहुत खुश हुआ। अपने वायदे के अनुसार उसने फिर हेलेन से शादी कर ली।

हेलेन अपनी इस मुसीबत से बाहर निकलने के लिये सचनुच में ही उस बूढ़े की बहुत आभारी थी। उसकी राजकुमारी बनने की खुशी तो उसकी आशा से कहीं ज़्यादा थी।

उसके पास सोने के धागे का अब इतना सारा भंडार था कि अबके बाद उसे कातने की फिर कभी जरूरत ही नहीं पड़ी।

18 लड़की जो मिट्टी और लम्बे भूसे से सोना कात सकती थी[88]

रम्पिलटिल्टस्किन जैसी कहानियों के इस संग्रह की यह कहानी यूरोप महाद्वीप के स्वीडन देश से ली गयी है।

एक बार की बात है कि बुढ़िया थी जिसके एक बेटी थी। लड़की बहुत अच्छी और मन को अच्छी लगने वाली थी पर वह बहुत आलसी थी। कोई काम करने के लिये अपने हाथ आगे नहीं बढ़ाती थी। इससे उसकी मॉ बहुत दुखी थी। उसने अपनी सारी कोशिशें कर ली थीं कि वह काम करना सीख ले पर नहीं। वह यह न कर सकी।

अब वह क्या करे उसकी समझ में नहीं आता था। बुढ़िया को फिर इसके अलावा और कोई तरकीब समझ में नहीं आयी सिवाय इसके कि वह उसको अपने मकान की छत पर सूत कातने के लिये बिठा दे। ताकि सारी दुनियॉ देखे कि वह कितनी आलसी थी।

पर उसकी यह कोशिश भी बेकार गयी। इसका कोई फल नहीं निकला। लड़की फिर भी उतनी ही आलसी ही रही।

---

[88] The Girl Who Could Spin Gold From Clay and Long Straw. A folktale from Sweden. From "Yule-tide Stories : a collection of Scandinavian….". By Benajamin Thorpe. London. 1853.
(Thorpe's source : "Svenska Folk Sagor och Afventyre", by GO Hyltén-Cavallius and Geo Stephens)
Taken from the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#titteli

और एक दिन राजा का बेटा शिकार के लिये जा रहा था। वह उनके घर के सामने से गुजरा। एक सुन्दर लड़की को छत पर सूत कातते देख कर वह रुक गया और वहॉ पूछताछ की कि वह लड़की ऐसी अजीब जगह पर बैठी सूत क्यों कात रही थी।

बुढ़िया बोली — "यह। यह वहॉ इसलिये बैठ कर सूत कातती है ताकि यह दुनियॉ को दिखा सके कि यह इतनी होशियार है कि यह मिट्टी और लम्बे भूसे से सोना कात सकती है।"

राजकुमार ने जब यह सुना तो उसको बहुत आश्चर्य हुआ। क्योंकि यह उसके दिमाग में आया ही नहीं कि वह बुढ़िया उससे यह बात कह कर मजाक में अपनी बेटी को आलसी कह रही थी।

वह बोला — "अगर आप इस नौजवान लड़की के बारे में सच कह रही हैं कि यह मिट्टी और लम्बे भूसे से सोना कात सकती है तो इसको यहॉ नहीं बैठना चाहिये। यह मेरे साथ महल चलेगी और मेरी पत्नी बनेगी।"

लड़की तब छत पर से नीचे आयी और राजकुमार के साथ उसके महल चली गयी। वहॉ उसको उसका इम्तिहान लेने के लिये कि उसकी मॉ ने उसके बारे में जो कुछ कहा था वह सच था या नहीं एक कमरे में एक बालटी मिट्टी और एक गट्ठर लम्बा भूसा दे कर बिठा दिया गया।

बेचारी लड़की तो अब बहुत ही अजीब सी हालत में थी क्योंकि वह तो यह बहुत अच्छी तरह जानती था कि सोना तो दूर की बात थी वह तो रुई भी नहीं कात सकती थी।

सो कमरे में बैठी उसने अपने सिर को अपनी बॉह पर टिका कर वह बहुत ज़ोर से रोने लगी। जब वह इस तरह बैठी वहॉ रो रही थी कि कमरे का दरवाजा खुला और एक छोटा आदमी अन्दर आया। वह आदमी बहुत ही बदसूरत और टेढ़ा मेढ़ा था।

उसने अन्दर आ कर उसको नमस्ते की और उससे पूछा कि वह वह अकेली बैठी दुखी हो रही थी।

लड़की बोली — "मेरे दुखी होने की एक वजह है। राजा के बेटे ने मुझसे कहा है कि मैं इस मिट्टी और भूसे से उसके लिये सोना कातूँ। और अगर यह काम कल सुबह तक न हुआ तो मेरी ज़िन्दगी दॉव पर लगी है।"

बूढ़ा बोला — "ओ सुन्दर लड़की। तुम रोओ नहीं। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। ये देखो ये दो दस्ताने हैं। जब तुम इन्हें पहन कर कातोगी तब तुम सोना कात सकोगी। कल रात मैं फिर लौटूँगा और अगर तब तक तुमने मेरा नाम नहीं बताया तो तुमको मेरी पत्नी बन कर मेरे साथ चलना होगा।"

अपनी परेशानी की हालत में उसने उसकी यह शर्त मान ली। बूढ़ा उसको दस्ताने दे कर चला गया। लड़की कातने बैठी तो सुबह

तक सारी मिट्टी और भूसा कात कर रख दिया। वह सब अब दुनियॉ का सबसे अच्छा सोना था जो कभी किसी ने देखा होगा।

सारे महल में खुशियॉ मनायी गयीं कि राजकुमार को अब एक ऐसी पत्नी मिल गयी है जो मिट्टी और भूसे को सोने में कात सकती है। पर लड़की? वह तो बस रोये जा रही थी रोये जा रही थी और जितना समय आगे बढ़ता जा रहा था वह उतना ही ज़्यादा रोये जा रही थी।

क्योंकि यह विचार ही कि रात को वह बूढ़ा आयेगा और उसको अपने साथ ले जायेगा उसको बेचैन कर देने के लिये काफी था।

जब शाम को राजकुमार शिकार से वापस आया तो अपनी होने वाली पत्नी से बात करने गया। पर यह देख कर वह बहुत दुखी थी उसने उसका ध्यान इधर उधर बॅटाने की बहुत कोशिश की। फिर यह सोच कर उसने अपने शिकार के समय की एक घटना सुनाने का वायदा किया कि वह उसे सुन कर जरूर खुश हो जायेगी।

लड़की ने उससे विनती की कि वह अपनी वह घटना उसे जरूर सुनाये।

तब राजकुमार बोला — "जब में आज जंगल में शिकार के लिये घूम रहा था तो मैंने एक अजीब सी चीज़ देखी। मैंने देखा कि एक बहुत ही छोटा सा आदमी एक मोरपंखी की झाड़ी के चारों तरफ नाच नाच कर बस एक ही गीत गाये जा रहा था।"

लड़की ने विनती की वह उसे बताये कि वह क्या गा रहा था क्योंकि लड़की को ऐसा लग रहा था कि राजकुमार को जंगल में जरूर ही वही बौना मिला होगा जो उसकी सहायता कर के गया था।

राजकुमार बोला — "वह यह गा रहा था —

आज मैं पीसूँगा कल मेरी शादी होगी लड़की अपनी पालकी में बैठी रोयेगी
वह नहीं जानती कि मेरा नाम क्या है
मेरा नाम टिटैली चर है मेरा नाम टिटैली चर है[89]

तुम क्या सोचते हो कि यह सुन कर क्या लड़की खुश नहीं हुई होगी। उसने राजकुमार से विनती की कि वह यह उसे कई बार बताये कि वह क्या गा रहा था। राजकुमार ने उसे वह गीत दोबारा सुनाया तो उसने उसका नाम याद कर लिया।

फिर वह अपने होने वाले पति से खुशी से बात करती रही। राजकुमार भी उसकी सुन्दरता और समझदारी की प्रशंसा करता रहा। पर उसकी समझ में यह नहीं आया कि वह लड़की उस गीत को सुन कर इतनी खुश क्यों है क्योंकि उसको तो यह भी पता नहीं था कि वह पहले इतनी दुखी क्यों थी।

रात आयी। जब वह अपने कमरे में अकेली बैठी हुई थी कमरे का दरवाजा खुला और वह बौना कमरे के अन्दर घुसा। उसको देख

[89] Titelli Ture

कर लड़की कूद कर उठ बैठी और बोली — "टिटैली चर टिटैली चर ये लो अपने दस्ताने।"

बौने ने जब उसके मुॅह से अपना नाम सुना तो वह बहुत नाराज हो गया और तुरन्त ही हवा में गायब हो गया पर साथ में घर की पूरी छत भी ले गया।

सुन्दर लड़की अपने आप ही हॅस पड़ी और बेहिसाब खुश हो गयी। फिर वह सो गयी। सुबह वह देर तक सोती रही। उसके अगले दिन उसकी राजकुमार के साथ शादी हो गयी। उसके बाद टिटैली चर के बारे में फिर कभी कुछ नहीं सुना गया।

19 बड़े साइज़ का आदमी फ़िन और लुंड का चर्च[90]

रम्पिलटिल्टस्किन जैसी यह कहानी भी स्वीडन देश की कथाओं से ली गयी है। यह बिल्कुल वैसी कहानी तो नहीं है पर इसमें भी किसी काम को पूरा करने के लिये करने वाला अपना नाम पूछता है। तो लो पढ़ो यह कथा स्वीडन की।

स्वीडन के लुंड शहर में एक छोटा शहर है शुनैन जहॉ सारे स्कैन्डिनैवियन देशों का आर्चबिशप बैठता है।[91] यहॉ एक शाही रोमन चर्च है। लोगों का कहना है कि यह रोमन चर्च कभी पूरा नहीं होगा। उसकी इमारत में कुछ न कुछ कमी हमेशा ही रहेगी। इसकी वजह यह बतायी जाती है।

कहते हैं कि जब सेन्ट लौरेन्स[92] वहॉ गोस्पल का उपदेश[93] देने के लिये आये तो वह वहॉ पर एक चर्च बनवाना चाहते थे पर उनको यह नहीं मालूम था कि वह वहॉ उसे कैसे बनवायें।

जब वह इस बात को सोच रहे थे तो एक बड़े साइज़ का आदमी[94] उनके पास आया और उनसे कहा कि वह उसके लिये चर्च

---

[90] Finn, the Giant and the Minster of Lund – a folktale from Sweden, Europe.
Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_3.html

[91] There stands in the University town of Schunen, the town of Lund, the seat of first archbishop in all Scandinavia…

[92] St Lawrence

[93] To preach Gospels – there are four Gospels in Bible. Otherwise Gospels mean message from God.

[94] Translated for the word "Giant"

बना देगा पर एक शर्त पर। कि सेन्ट लौरेन्स को चर्च पूरा होने से पहले पहले उसका नाम बताना पड़ेगा। और अगर वह नहीं बता पाया तो वह या तो चॉद सूरज ले लेगा या फिर सेन्ट लौरेन्स की ऑखें ले लेगा।

सेन्ट बड़े साइज़ के आदमी की इस बात को मान गया और बड़े साइज़ के आदमी ने चर्च बनाना शुरू कर दिया। चर्च जल्दी जल्दी आगे बढ़ने लगा और उसकी इमारत जल्दी ही खत्म होने पर भी आ गयी।

सेन्ट लौरेन्स बेचारा परेशान सा अपने भविष्य के बारे में सोचता रहा क्योंकि अभी तक उसे बड़े साइज़ के आदमी का नाम पता नहीं चला था। और वह अपनी ऑखें भी खोना नहीं चाहता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह शहर के बाहर घूम रहा था और इस मामले पर गम्भीर रूप से विचार कर रहा था तो वह बहुत दुखी हो गया और एक पहाड़ी पर आराम करने के लिये बैठ गया।

जब वह उस पहाड़ी पर बैठा हुआ था तो उसने पहाड़ी के अन्दर से एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी। साथ में एक स्त्री के गाने की आवाज भी सुनी जो वह उस बच्चे को चुप करने के लिये गा रही थी — "सो जा सो जा मेरे बच्चे सो जा। कल तेरा पिता फ़िन यहॉ आयेगा तब तुझे आसमान के सूरज और चॉद खेलने के लिये देगा या फिर सेन्ट लौरेन्स की ऑखें देगा।"

जब सेन्ट लौरेन्स ने यह सुना तो वह बहुत खुश हुआ क्योंकि अब उसे उस बड़े साइज़ के आदमी का नाम पता चल गया था। वह वहॉ से तुरन्त ही शहर भाग गया और चर्च जा पहुँचा। वहॉ बड़े साइज़ का आदमी चर्च की छत पर बैठा हुआ था और उस चर्च का आखिरी पत्थर रखने ही जा रहा था कि...

सेन्ट लौरेन्स नीचे से चिल्लाया — "फ़िन फ़िन। चर्च का यह आखिरी पत्थर ज़रा ध्यान से रखना।"

अपना नाम सुन कर बड़े साइज़ के आदमी को गुस्सा आ गया और गुस्से के मारे उसने वह पत्थर वहीं से नीचे फेंक दिया और बोला — "अब यह चर्च कभी खत्म नहीं होगा।"

यह कह कर वह वहॉ से गायब हो गया। तबसे चर्च में हमेशा ही कुछ न कुछ काम चलता ही रहता है।

कुछ दूसरे लोगों को कहना है कि अपना नाम सुन कर वह बड़े साइज़ का आदमी अपनी पत्नी के साथ नीचे आया चर्च के अन्दर गया और दोनों एक एक खम्भा ले कर उसको तोड़ने ही वाले थे कि वे खुद पत्थर में बदल गये और आज तक उन्हीं खम्भों के बराबर में खड़े देखे जा सकते हैं जिन्हें उन्होंने पकड़ा था।

20 ग्वारविन ए थ्रोट[95]

रम्पिलस्टिल्टसिकिन जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी वेल्स से ली गयी है। वेल्स यूनाइटैड किंगडम का एक हिस्सा है – इंगलैंड स्काटलैंड वेल्स और उत्तरी आयरलैंड मिल कर यूनाइटैड किंगडम बनाते हैं।

यह बहुत पुरानी बात है कि मन्मथशायर[96] के एक खेत पर एक स्त्री काम करती थी। वह बहुत खुशमिजाज और मजबूत थी। इसका किसी को पता नहीं था कि वह कौन थी और कहॉ से आयी थी। पर लोगों का यह विश्वास था कि वह पुराने डाकू मामौ[97] के खानदान की थी।

उसके खेत पर आने के कुछ दिनों बाद यह अफवाह फैल गयी कि उसके घर में किसी आत्मा का वास है। पर लड़की और बौना[98] एक दूसरे को अच्छी तरह समझते थे सो वे एक दूसरे के बहुत अच्छे दोस्त बन गये।

वह बौना लड़की के लिये बहुत ही फायदेमन्द साबित हुआ क्योंकि वह उसका सब काम कर देता था – कपड़ों की धुलाई इस्तरी कातना ऊन का बटना आदि आदि।

---

[95] Gwarwyn-a-throt. A folktale from Wales. From "Celtic Folklore: Welsh, and Manx". By John Rhys (OUP, 1901), vol. 2, Taken from : https://sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#gwarwyn

[96] Monmouthshire

[97] Bandit Mamau

[98] Translated for the word "Elf"

लोगों का कहना था कि वह उसके लिये बहुत सारे तरीके के काम करता था पर चरखा वह बहुत अच्छा चलाता था। और वह इसके बदले में क्या चाहता था – केवल एक कटोरा मीठा दूध और गेहूँ की रोटी।

सो वह इसके बारे में उसका बहुत ध्यान रखती थी। वह सीढ़ियों पर उसके खाने के साथ रात को सोने जाने से पहले एक कटोरा मीठा दूध रखना नहीं भूलती थी।

यहॉ यह बताना बहुत जरूरी है कि उसको उसे देखने की इजाज़त बिल्कुल भी नहीं थी क्योंकि वह अपना सारा काम अँधेरे में ही करता था।

कोई यह भी नहीं जानता था कि वह अपना खाना कब खाता है क्योंकि वह तो उसका खाना तो सोने जाने से पहले रख देती थी और जब वह उठती थी तो वे बर्तन खाली होते थे। वह रात में ही किसी समय अपना खाना खा लेता था।

एक दिन बदकिस्मती से लड़की ने उसके दूध का कटोरा किसी बदबूदार पानी और घर में पड़ी कुछ और चीज़ों से भर दिया जो वे ऊन रँगने के काम में लिया करते थे।

पर भगवान के लिये यह उसके लिये बहुत अच्छा रहता अगर वह ऐसा नहीं करती तो। क्योंकि जब वह सुबह को उठी तो वह पता नहीं किस कोने से आया और उसने उसकी गर्दन पकड़ ली

और उसे घर के एक कोने से दूसरे कोने तक ले जा कर पीटना और ठोकरें मारना शुरू कर दिया।

अपनी हर ठोकर पर वह उसके लिये अपनी सबसे ऊॅची आवाज में गा रहा था —

यह विचार कि मोटे पिछवाड़े वाली लड़की बूगी को जौ की रोटी और पी दे

इस बीच वह सहायता के लिये चिल्लायी पर कुछ देर के लिये तो उसके पास कोई नहीं आया। पर जब बौने ने देखा कि नौकर उठ रहे हैं तो वह वहॉ से उलटे पैरों भाग गया। फिर कुछ दिनों तक उसके बारे में कुछ नहीं सुना गया।

पर दो साल बाद वह किसी दूसरे खेत हफ्ूद पर सुना गया। वहॉ वह एक लड़की का बहुत अच्छा दोस्त बन गया क्योंकि वह उसको एक छोटे चूज़े की तरह से थोड़ी सी रोटी दूध के साथ खिलाती थी।

इसलिये वह अपने इस प्रिय खाने के बदले में उसकी बहुत सेवा करता था। खास कर के वह उसका सूत कातना और उसे लपेटने का बहुत काम करता था।

कुछ समय बाद उसने उससे इच्छा प्रगट की कि वह उसको देखना चाहती है या उसका नाम जानना चाहती है। पर वह दोनों में से कुछ भी करने के लिये तैयार नहीं था।

एक शाम जब सारे आदमी लोग बाहर गये हुए थे और वह बड़ी मेहनत से सूत कात रहा था उसने उसको यह बता कर धोखा दिया कि वह भी वहॉ से बाहर जा रही थी।

उसने लड़की का विश्वास कर लिया सो जैसे ही उसने दरवाजा बन्द करने की आवाज सुनी तो चरखे का पहिया चलाते समय उसने गाया —

अगर उसको पता चल जाता कि मेरा नाम ग्वारविन ए थ्रोट है तो वह कितना हॅसती

सीढ़ियों के नीचे से वह हॅसती हुई बोली — "हा हा हा हा। अब मुझे तुम्हारा नाम पता चल गया।"

उसने पूछा — "तो क्या हुआ?"

वह बोली — "ग्वारविन ए थ्रोट।"

जैसे ही उसने ये शब्द कहे कि वह आत्मा चरखे से सूत कातना छोड़ कर चली गयी।

21 पैनैलोप[99]

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी भी वेल्स से ली गयी है। वेल्स यूनाइटैड किंगडम का एक हिस्सा है – इंगलैंड स्काटलैंड वेल्स और उत्तरी आयरलैंड मिल कर यूनाइटैड किंगडम बनाते हैं।

बैजैलर्ट पारिश[100] के उत्तर पश्चिमी कोने पर एक जगह है जिसको वहॉ के पुराने रहने वाले "परियों का देश" कहते थे। वह हिस्सा हैफ़ोड रफ़ीड से ले कर कोड के पहाड़ों[101] के ढलान तक जाता हुआ "लिन डाइवार्चेन" तक फैला हुआ था।

पुराने लोगों को हर चॉदनी रात में इस देश का संगीत सुनने में बहुत आनन्द आता था और साथ में उनका जादू भरा नाच देखने में भी।

यह बहुत पहले की बात है कि एक बार वहॉ डूस वाई कोड[102] नामका एक नौजवान रहता था जो बहुत खुशमिजाज था मेहनती था बहादुर था और अपने इरादों का पक्का था। यह नौजवान हर रात को उनका संगीत सुनने का बहुत शौकीन था।

---

[99] Penelop. A folktale from Wales. From : "Celtic Folklore: Welsh and Manx". By John Rhys. OUP, 1901, vol. 1. Taken from : https://sites.pitt.edu/~dash/type0500.html#penelop

[100] Beddgelert Parish

[101] From Haffod Ruffydd along the slopes of Mountains of Drws y Coed as far as Llyn y Dywarchen

[102] Drws y Coed

एक रात वे खुशी से रात बिताने के लिये उसके घर के काफी पास लिन वाई डाईवार्चेन के किनारे तक आ गयीं। वह भी रोज की तरह उनको देखने गया कि उसकी निगाह एक परी पर पड़ी।

वह इतनी सुन्दर थी जैसी सुन्दरता धरती के लोगों में नहीं देखी जाती थी। वह सेलखड़ी[103] की तरह सुन्दर थी। उसकी आवाज बुलबुल की तरह मीठी थी। वह गर्मियों के लम्बे गर्म दिन में फूलों के बागीचे में ज़ैफिर के फूल की तरह थी।

उसकी चाल शाही थी। उसके पैर नाचने के लिये घास पर इतनी मुलायमियत से पड़ रहे थे जैसे सूरज की किरनें झील की सतह पर पड़ रही हों। उसको देखते ही वह उसके प्रेम में पड़ गया। उसकी भावनाऐं उसके लिये इतनी ज़्यादा हो गयीं जो प्रेम से भी आगे बढ़ गयीं।

जब वहॉ नाच गाना ज़ोर पर था तो वह उधर की तरफ दौड़ पड़ा। वह परियों की भीड़ में पहुॅच गया और उसने उसे अपनी बॉहों में भर लिया और उसको लिये हुए अपने घर की तरफ दौड़ पड़ा।

परियों के परिवार ने जब धरती के एक आदमी की यह जबरदस्ती देखी तो उन्होंने अपना नाच तो छोड़ दिया और उसके घर की तरफ दौड़ीं। पर जब तक वे वहॉ पहुॅचीं तब तक दरवाजा लोहे का ताला लगा कर बन्द कर दिया गया था।

[103] Translated for the word “Alabaster”

वे वहॉ तक उस तक न ही पहुँच सकती थीं और न ही वे उसे छू सकती थीं। उस परी को एक कमरे में बन्द कर दिया गया। नौजवान जब उसको अपने घर में ले आया तो अपनी सारी होशियारी लगा कर उसका प्यार जीतने के लिये उसने उससे शादी की विनती करने की कोशिश की।

पर पहले तो वह उसकी कुछ सुन ही नहीं रही थी पर उसकी जिद देख कर कि वह उसको उसके अपने लोगों में वापस नहीं जाने देगा तो उसने इस शर्त पर नौजवान की नौकरानी बनने के लिये हॉ कर दी कि वह बताये कि उसका नाम क्या है। पर वह उससे शादी नहीं करेगी।

नौजवान ने सोचा कि यह तो कोई असम्भव काम नहीं है वह उसकी शर्त पर आधा राजी हो गया। पर सारे नाम जितने भी उसको आते थे उनमें से एक नाम भी उसके नाम के करीब तक भी नहीं आ पा रहा था। हॉलॉकि वह इतनी जल्दी हार मानने वाला भी नहीं था।

एक रात जब वह बाजार से घर वापस आ रहा था तो उसने अपनी सड़क से ज़्यादा दूर नहीं कई सारी परियॉ देखीं। उसको लगा कि वे लोग किसी गम्भीर विषय पर बातें कर रही थीं। उसके दिमाग में आया कि शायद वे अपनी हरण की गयी बहिन को छुड़ाने के बारे में बात कर रही थीं।

उसने सोचा कि अगर वह शायद उनके बीच में घुस जाये तो उसका नाम पता वल जाये। सो उसने चारों तरफ देखा कि उनकी जगह तक एक गड्ढा जाता था सो वह उस गड्ढे की तरफ चल दिया और वहॉ अपने चारों हाथों पैरों पर चल कर पहुँच गया जहॉ वे खड़ी हुई थीं। अब वह उनकी बातें अच्छी तरह सुन सकता था।

कुछ देर तक सुनने के बाद उसको पता चल गया कि ये सब उसी लोग उसी लड़की के बारे में बात कर रहे हैं जिसको उसने उठा लिया था। उनमें से एक बहुत ही दुखी स्वर में पुकार उठी — "ओ पैनैलोप पैनैलोप मेरी बहिन। तू एक धरती के प्राणी के साथ क्यों भाग गयी?"

नौजवान ने अपने मन में सोचा कि शायद उसका नाम पैनैलोप ही है। बस यह मेरे लिये काफी है। वह तुरन्त ही घर की तरफ चल दिया। वह परियों से छिप कर सुरक्षित रूप से घर आ गया। घर आ कर उसने परी को बुलाया — "पैनैलोप। मेरी प्यारी। यहॉ आओ।"

और वह आ गयी। उसने आश्चर्य से उससे पूछा — "ऐसा कौन है जिसने मेरा नाम बता कर मुझे धोखा दिया?"

तब उसने अपने छोटे छोटे जुड़े हुए हाथ ऊपर उठा कर कहा — "उफ़ मेरी किस्मत।"

पर वह अपनी किस्मत से सन्तुष्ट थी। वह अपने काम में लगन से लग गयी। घर और खेत दोनों जगह उसकी देखभाल में उन्नति

करने लगे। पास पड़ोस में उससे अच्छी और साफ सुथरी रहने वाली कोई दूसरी घरेलू स्त्री नहीं थी।

नौजवान अभी भी सन्तुष्ट नहीं था कि वह उसकी नौकरानी बन कर रहे सो वह उसके पीछे लगा रहा कि वह उससे शादी कर ले। आखिर उसने इसके लिये भी हॉ कर दी पर एक शर्त पर। कि अगर उसने कभी उसको छुआ तो वह वहॉ से जाने और घर लौटने के लिये आजाद होगी।

नौजवान इस शर्त पर राजी हो गया क्योंकि वह सोचता था कि ऐसा मौका उसके हाथों से तो कभी आयेगा ही नहीं। और अगर आया भी तो वह देख लेगा।

उनकी शादी हो गयी और वे कई साल खुशी खुशी आराम से रहे। उनके दो बच्चे हुए – एक लड़का एक लड़की। वे देखने भालने में अपनी मॉ जैसे थे और गुणों में अपने पिता जैसे थे।

एक दिन पिता एक मेले में जा रहा था तो वह मैदान में एक घोड़े की बच्ची को पकड़ने गया जो वहॉ चर रही थी। पर वह खुद उसको नहीं पकड़ सका सो उसने अपने पत्नी को सहायता के लिये बुलाया।

वह बेचारी तुरन्त ही चली आयी। दोनों ने मिल कर उसको एक कोने की तरफ तो खदेड़ लिया पर जैसे ही नौजवान ने उसे पकड़ना चाहा तो वह उससे दूर भागने लगी। अब उसके पीछे कौन भागा? उसकी पत्नी।

लोहे का टुकड़ा उसके गालों से छू गया और उसी पल वह वहॉ से गायब हो गयी। उसके पति को वह फिर कभी दिखायी नहीं दी। पर इस घटना के बहुत दिनों बाद एक पाले की ठंडी रात को किसी आवाज से वह नींद से जाग गया।

उसको खिड़की के शीशे पर किसी चीज़ के मलने की आवाज सुनी। उसने उसको जवाब दिया तो उसने देखा कि वह तो उसकी पत्नी थी। वह उससे कह रही थी —

कहीं मेरे बेटे को ठंडा न लगे उसको उसके पिता का कोट ओढ़ा दो
कहीं मेरी सुन्दर बेटी को ठंड न लगे उसे मेरा पैटीकोट ओढ़ा दो

ऐसा कहा जाता है कि इस परिवार की सन्तानें अभी भी यहीं रहती हैं। इन्हें इनके गोरे रंग से पहचाना जा सकता है।

22 तपई और ब्राह्मण[104]

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी एशिया महाद्वीप के भारत देश में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं से ली गयी है।

बीच की उम्र का एक ब्राह्मण को एक ठंडी जाड़े की रात को घर जाते समय एक मैदान पार कर रहा था। हवा बहुत ठंडी थी और बहुत ज़ोर से बह रही थी और यह यात्री जिसका नाम सिब्बू था अपने शरीर के हर जोड़ में उसे महसूस कर रहा था।

अचानक उसकी निगाह एक आग पर पड़ी जो आराम से धू धू कर के जल रही थी। उसके चारों तरफ उसकी गर्मी लेने के लिये कुछ लोग बैठे हुए थे। आगे बढ़ने से पहले अच्छे साथ में एक अच्छी गर्मी लेने का तो यह एक बहुत अच्छा लालच था।

वह उस आग के पास आया तो दूर से ही उसे आग की लपटों की गर्मी आने लगी तो उसके मुॅह से निकला "तपई तपई।" यानी मुझे गर्मी आ रही है मुझे गर्मी आ रही है।

---

[104] Tapai and Brahman. A folktale from India. From : J. D. Anderson, book review in *Folk-Lore: A Quarterly Review of Myth, Tradition, Institution, and Custom*, vol. 31 (London: Folk-Lore Society, 1920), pp. 258-260. Anderson retells this story in his review of the book *Sajher Bhog* by Rai Sahib Dinesh Chandra Sen (Calcutta: Sisir Publishing House, 1919).
Title given by DL Ashliman. Taken from the Web Site :
http://www.pitt.edu/~dash/type1175.html#tapai

पर अफसोस जो लोग आग के चारों तरफ बैठे हुए थे वे सब भूत थे – छिपने वाले, कटे फटे, मुस्कुराते हुए मनुष्य के देश में वे कुछ घटिया शब्द मुँह से निकाल रहे थे।

अब उन सब में से एक का नाम था "तपई"। वहॉ बैठे लोगों को उसका अपना नाम तपई इस्तेमाल करना अच्छा नहीं लगा। तो उन्होंने उसको तुरन्त ही मार देने की धमकी दी।

ब्राह्मण डर गया उसने अपना जनेऊ[105] छुआ पर वह उसके हाथ से फिसल गया। वह भगवान के नामों का जाप करने वाला ही था कि उसकी याद धोखा दे गयी। डर के मारे उसे कोई नाम ही याद नहीं आया।

पर आखिर जनेऊ उसके हाथ में आ गया तो उसने उसे अपने हाथ में ले कर कहा कि वह तपई को बहुत अच्छी तरह से जानता था और उसके तीन पीढ़ी तक के पुरखे उसके परिवार के सेवक थे।

तपई चिल्लाया — "अगर यह आदमी मेरे पुरखों के नाम बता दे तो मैं हमेशा के लिये इसका नौकर बन जाऊँगा।"

तो वह हाजिरजवाब पुजारी बोला — "मैं अपने पुरखों के हर गुलाम का नाम कैसे जान सकता हूँ पर हॉ उन सबके नाम एक खाते में लिखे हुए हैं जो मेरे घर पर रखा हुआ है।"

[105] Translated for the words "Sacred Thread"

यह सुन कर उन्होंने उसे इस शर्त पर घर जाने दिया कि वह तीसरे दिन तपई की चुनौती का जवाब देने के लिये वहॉ आयेगा। ब्राह्मण घर चला गया वहॉ जा कर वह कुछ देर तक तो बैठा रहा पर फिर अपने भविष्य के लिये चिन्तित हो उठा। अगले दो दिनों तक वह न ठीक से खा सका और न ही सो सका।

उसकी पत्नी एक बेटी और एक बेटे ने उसका यह दुख बॉटने की कोशिश की पर वे उसकी कोई सहायता नहीं कर सके। तीसरी रात जब उसका परिवार सो गया तो वह उठा और बजाय उन भूतों का सामना करने के जंगल में आत्महत्या करने के लिये चल दिया।

पर जिस पेड़ से लटक कर वह आत्महत्या करना चाहता था उसी पेड़ पर उसे दो शक्लें दिखायी दीं। उनको देख कर वह कॉप गया। वह तो हिल भी न सका पर वे दोनों कुछ बात कर रहे थे सो वह उनको सुनने लगा।

अरे ये तो तपई और उसकी पत्नी ही थे। पत्नी ने अपनी स्त्री सुलभ उत्सुकता से अपने पति से पूछा कि उसके पुरखों का नाम क्या था। तब तपई ने यह कहा —

हरमू, और उसका बेटा छरमू, और उसका बेटा अपाई, और उसका बेटा तपई

ब्राह्मण ने यह लाइन याद कर ली और घने अँधेरे जंगल में से हो कर तेज़ तेज़ कदम बढ़ाता हुआ घर चल दिया। अब उसको ज़िन्दगी में एक नयी आशा हो गयी थी।

अगली शाम को वह उन भूतों की जगह चल दिया और वहॉ जा कर उसको उसके पुरखों का नाम बता दिया। अब वह उसका गुलाम था सो वहॉ से वह बदकिस्मत भूत उस ब्राह्मण के पीछे पीछे चल दिया।

पर अब एक शर्त थी कि हालॉकि तपई उसका हर काम करता जो भी उसे सुबह से शाम तक दिया जाता पर उसको हमेशा ही काम करना होता था वह खाली नहीं बैठ सकता था।

पहले तो यह शर्त ब्राह्मण को आसान सी लगी। भूत को एक महल बनाने का हुक्म दिया गया। फिर उससे एक सुन्दर सा मन्दिर बनाने के लिये कहा गया। एक तालाब खोदने के लिये कहा गया। उसको बाद बेटी के लिये एक दुलहा खोजने के लिये कहा गया।

पर फिर भी इन्सान की इच्छाओं की भी एक सीमा होती है। सो अब जब ब्राह्मण के सारे काम खत्म हो गये थे उसकी सारी इच्छाऐं पूरी हो गयी थीं फिर भी वह चिन्तित था। अब वह इस चिन्ता से मर जाना चाहता था कि वह तपई को क्या काम दे।

उसकी चिन्ता थी कि वह भूत खाली नहीं बैठ सकता था और और ब्राह्मण के पास कोई काम नहीं था। इस समय उसकी पत्नी काम आयी। उसने अपने पति की भौंह से एक घुँघराला बाल तोड़ा और उसे उसको देते हुए कहा — "लो यह बाल उसे दे दो कि वह इसे सीधा कर दे।"

ब्राह्मण ने ऐसा ही किया। भूत से वह बाल कभी सीधा नहीं हुआ और इस तरह से भूत की बुद्धि हार गयी।

उसने बाल खींचा भी गीला भी किया पर कोई फायदा नहीं हुआ। क्योंकि जब भी वह सीधा कर के छोड़ा जाता वह फिर से घुँघराला हो जाता।

आखिर भले ब्राह्मण ने शाम को उसे ऐसे आजाद कर दिया जैसे प्रोसपरो ने एरियल को आजाद कर दिया था। उसके बाद वह और उसका परिवार खुशी से रहने लगा।

प्रोसपरो संसार के सबसे बड़े और नामी नाटककार और कहानियॉ लिखने वाले विलियम शेक्सपीयर के एक नाटक "द टैम्पैस्ट" का एक चरित्र है। शेक्सपीयर ने यह नाटक लगभग **1610** या **1611** में लिखा था। इसमें प्रोस्परो मिलान का ड्यूक है जिसके भाई ऐन्टोनियो ने उसे और उसकी तीन साल की बेटी मिरैन्डा के साथ एक सड़ी हुई नाव पर चढ़ा कर समुद्र में मरने के लिये डाल दिया है।

प्रोसपरो ने किताबें पढ़ पढ़ कर जादूगरी सीख ली थी। उसकी यह जादूगरी बहुत शक्तिशाली थी। उसकी सहायता से वह मरे हुए आदमी को भी ज़िन्दा कर सकता था। प्रोसपरो एरियल आत्मा की सहायता से समुद्र में तूफान ला कर उनकी नाव को तोड़ देता है और उनको एक छोटे से टापू पर ले आता है। इस तरह प्रोसपरो और मिरैन्डा बच जाते हैं।

वहॉ प्रोसपरो एरियल को जो एक पाइन के पेड़ में कैद है छुड़ा लेता है और उसको अपनी जादूगरी से वश में रखता है। एरियल एक हवाई आत्मा है। प्रोसपरो जब उस टापू से अपने राज्य जाता है तो वह एरियल को आजाद कर देता है।

23 रम्पिलस्टिल्टस्किन[106]

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियों के इस संग्रह की यह कहानी संसार के सबसे बड़े देश रूस की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि रूस के किसी शहर किसी जगह एक गरीब आदमी रहता था जो लोगों का आटा पीस कर अपना और अपनी सुन्दर एकलौती लड़की का पेट भरता था।

एक दिन उस राज्य के राजा ने उसे बुला भेजा। जब वह गरीब आदमी राजा के दरबार में आया तो वह डर के मारे थर थर कॉप रहा था। बजाय चुप रहने के घबराहट में उसके मुॅह से निकला — "मेरे एक लड़की है जो भूसे को सोने के तारों में कात सकती है।"

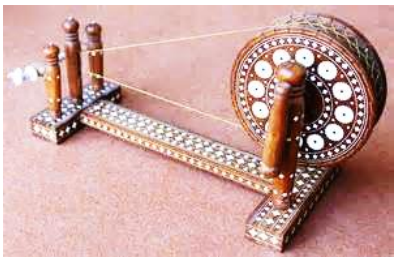

"अच्छा? अगर तुम जैसा कह रहे हो वह सच है तो तुम्हारी लड़की तो बड़ी ही होशियार और चतुर है। तुम उसे कल हमारे दरबार में ले कर आओ हम भी उसे देखना चाहेंगे।" राजा ने कहा।

अगले दिन वह आदमी अपनी लड़की के साथ राजा के दरबार में हाजिर हुआ।

राजा उस लड़की को एक कमरे में ले गया जो भूसे से भरा हुआ था। उस कमरे में भूसे के अलावा बैठने के लिये एक चौकी,

[106] Rumpelstiltskin – a folktale from Russia, Asia.

भूसा कातने के लिये एक चरखा और धागा लपेटने के लिये कुछ लकड़ी की रीलें रखीं थीं।

राजा ने उस लड़की से कहा — "अब तुम अपना काम शुरू कर दो। अगर कल सुबह तक तुमने इस भूसे को सोने में नहीं बदला तो तुमको जान से हाथ धोने पड़ेंगें।" ऐसा कह कर राजा ने कमरे का ताला लगा दिया और चला गया।

वह लड़की चौकी पर बैठ गयी और उस भूसे को देखने लगी। वह उसे सोने में कैसे काते, वह नहीं जानती थी। सुबह का खयाल आते ही वह और भी अधिक डर गयी। उसे और तो कुछ नहीं सूझा बस वह अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा कर रोने लगी।

इतने में एक आश्चर्यजनक घटना घटी। अचानक ही बन्द कमरे का दरवाजा खुला और एक अजीब सी बनावट का छोटा सा आदमी उस कमरे में आया।

ऐसा आदमी उसने अपने ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा था। उस आदमी ने आते ही कहा — "नमस्ते, तुम इतनी देर से क्यों रो रही हो? तुम्हें क्या दुख है?"

लड़की ने कहा — "क्या बताऊॅ मुझे क्या दुख है। मुझे यह सारा भूसा सोने के तारों में कातना है और मुझे यह काम आता नहीं है।"

उस आदमी ने कहा — "अगर मैं तुम्हारा यह काम कर दूॅ तो तुम मुझे क्या दोगी?"

लड़की बोली — "मेरे गले में जो यह माला पड़ी है यह मैं तुम्हें दे दूँगी।" उस आदमी ने वह माला ले ली और चरखे के सामने बैठ गया।

घर्र घर्र घर्र, चरखे के तीन बार घुमाने में ही एक रील सोने के तार से भर गयी। घर्र घर्र घर्र, और चरखे के तीन बार दोबारा घुमाने में ही दूसरी रील भी भर गयी।

रात भर वह आदमी इसी तरह से घर्र घर्र करता रहा और सुबह होने से पहले सारा भूसा उन रीलों पर सोने के तारों के रूप में लिपट चुका था। इस तरह सारा भूसा कात कर सुबह होने से पहले ही वह आदमी वहाँ से गायब हो गया।

सुबह को जब राजा आया तो वह इतना सारा सोना देख कर बजाय खुश होने के आश्चर्यचकित ज़्यादा हुआ। लेकिन वह इतने सोने से ही सन्तुष्ट नहीं था। सोने की झलक ने उसको और ज़्यादा लालची बना दिया था।

अब वह उस लड़की को एक दूसरे कमरे में ले गया जो पहले कमरे से भी बड़ा था और भूसे से भरा हुआ था। राजा ने उस लड़की से फिर वही कहा — "अगर कल सुबह तक तुमने इस भूसे को सोने में नहीं बदला तो तुमको जान से हाथ धोने पड़ेंगे।"

एक बार फिर वह लड़की उस भूसे से भरे कमरे में अकेली रह गयी। वह फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

पल भर में ही दरवाजा खुला और वही अजीब सा छोटा आदमी फिर अन्दर आया। उसने फिर पूछा — "अगर मैं तुम्हारे इस भूसे को सोने में कात दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?"

लड़की ने कहा — "अब मेरे पास यह अँगूठी है। तुम यह ले लेना।"

उस आदमी ने वह अँगूठी उसके हाथ से उतार ली और चरखे के सामने बैठ गया। घर्र घर्र घर्र, रात भर में उसने वह सारा भूसा कात कर सोने के तारों में बदल दिया और पहले की तरह सुबह होने से पहले ही गायब हो गया।

सुबह होते ही जब राजा आया तो वह उस सोने को देख कर बहुत खुश हुआ परन्तु अभी भी वह उतने सोने से सन्तुष्ट नहीं था।

वह उस लड़की को एक तीसरे कमरे में ले गया जो पहले दो कमरों से कहीं ज़्यादा बड़ा था और पूरे का पूरा भूसे से भरा हुआ था। इस बार उसने उस लड़की से कहा — "इस भूसे को अगर तुम सुबह तक सोने में बदल दो तो तुम मेरी रानी बन जाओगी।"

जब वह लड़की कमरे में अकेली रह गयी तो वह फिर बड़े ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। एक बार फिर वह छोटा आदमी फिर अन्दर आया और बोला — "अबकी बार तुम मुझे क्या दोगी अगर मैं तुम्हारा यह सारा भूसा सोने में कात दूँ?"

लड़की सिसकियाँ भरते हुए बोली — "अब तो मेरे पास तुम्हें देने के लिये कुछ भी नहीं है।"

"अच्छा तो वायदा करो कि जब तुम रानी बन जाओगी तो अपना पहला बच्चा मुझे दे दोगी।"

"न तो मैं रानी बनूँगी न मेरे बच्चा होगा" यही सोच कर उसने उस आदमी से वायदा कर लिया कि वह रानी बनने के बाद अपना पहला बच्चा उसको दे देगी।

हर बार की तरह इस बार भी उस छोटे आदमी ने सारा भूसा फिर से सोने के तारों में कात दिया और सुबह होने से पहले ही चला गया।

जब राजा सुबह आया तो इतने सारे सोने को देख कर फूला न समाया। उसने सोचा कि लड़की सुन्दर है और उसने उसे धन भी बहुत दिया है सो उसने अपना वायदा निभाते हुए उससे शादी कर ली।

अब वह लड़की रानी बन गयी थी सो वह बहुत खुश थी और उस आदमी के बारे में सब कुछ भूल चुकी थी जिसने उसे सोना कात कर रानी बनाया था। एक साल बाद रानी के एक सुन्दर बच्चे को जन्म दिया। रानी और राजा फूले न समाये।

कुछ दिनों बाद वह अजीब आदमी अचानक ही रानी के कमरे में आया और बोला — "अपना वायदा पूरा करो और यह बच्चा मुझे दे दो।" रानी ने डर के मारे अपने बच्चे को अपनी छाती से चिपटा लिया।

रानी ने अपने बच्चे के बदले में उसे राज्य का सारा खजाना देने को कहा परन्तु उस आदमी ने साफ मना कर दिया और बोला — "मुझे तो खजाने के बदले में आदमी का बच्चा ज़्यादा पसन्द है।"

इस बात को सुन कर रानी बहुत रोयी बहुत चिल्लायी। उसका रोना चिल्लाना सुन कर उस आदमी को उस लड़की पर दया आ गयी।

उसने कहा — "ठीक है, मैं तुमको तीन दिन का समय देता हूँ, अगर तुमने मेरा नाम बता दिया तो यह बच्चा तुम्हारे ही पास रहेगा नहीं तो फिर इसे मैं ले जाऊँगा।" और यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

उस रात रानी उन सब नामों को याद करती रही जो उसने कभी सुने थे। सुबह रानी ने एक आदमी बुलवाया और उससे देश के सभी लड़कों के नाम इकट्ठे करने को कहा।

जब वह छोटा आदमी अगले दिन आया तो उस लड़की ने नामों की एक लम्बी लिस्ट पढ़ दी पर उस आदमी का नाम उस लिस्ट में कहीं नहीं था।

अगले दिन फिर रानी ने उस आदमी को दूसरे देश में लड़कों के नाम मालूम करने भेजा। वह शाम तक फिर एक लम्बी लिस्ट ले कर आ गया।

शाम को जब वह छोटा आदमी आया तो रानी ने वे सब नाम उसको बताये जो कि उसकी लिस्ट में थे कि उस लिस्ट में उसका

नाम था या नहीं पर उस लिस्ट में भी उसका नाम नहीं था। रानी बहुत निराश हुई।

तीसरा दिन आखिरी दिन था। अगर आज रानी उस छोटे आदमी का नाम मालूम नहीं कर पायी तो वह छोटा आदमी उसके बच्चे को ले जायेगा। दिन भर रानी बहुत परेशान रही और अपने भेजे आदमी के वापस आने का बड़ी बेसब्री से इन्तजार करती रही।

उस दिन रानी का आदमी बहुत देर से लौटा और बोला — "आज मुझे कोई और नया नाम तो मालूम नहीं पड़ा रानी जी परन्तु जब मैं जंगल के किनारे एक ऊँचे पहाड़ से आ रहा था तो वहॉ मैंने एक घर देखा।

उस घर के सामने आग जल रही थी और उस आग के चारों तरफ एक अजीब सा छोटा सा आदमी नाच रहा था और गा रहा था — "आज मैं रोटी बना रहा हूँ। कल मैं रानी का बच्चा ले लूँगा। मेरा नाम वह कभी नहीं जान पायेगी इसलिये वह शर्त जीत भी नहीं पायेगी क्योंकि मेरा नाम रम्पिलस्टिल्टस्किन[107] है।"

रानी बहुत खुश हुई। जब वह छोटा आदमी आया तो उसने ऐसा बहाना किया जैसे वह उसका नाम जानती ही न हो। कई नाम लेने के बाद उसने कहा रम्पिलस्टिल्टस्किन।

[107] Rumpelstiltuskin

अपना नाम सुन कर वह आदमी बहुत गुस्सा हुआ और गुस्से में भर कर उसने अपना पैर फर्श पर दे मारा। इससे उसका पैर फर्श में धॅस गया।

इस पर वह और भी अधिक गुस्सा हुआ और किसी तरह अपना पैर फर्श से निकाल कर वहॉ से भागता नजर आया और फिर उसको कभी किसी ने नहीं देखा।

इसके बाद रानी अपने बच्चे के साथ निडर हो कर रही।

24 हिप्पोपोटेमस और कछुआ[108]

यह बहुत साल पुरानी बात है कि इसान्टिम नाम का एक हिप्पोपोटेमस[109] देश का सबसे बड़ा राजा हुआ करता था। वह बस केवल हाथी से ही छोटा था।

इस हिप्पो की सात बड़ी बड़ी मोटी मोटी पत्नियॉ थीं जिनको वह बहुत चाहता था। अक्सर ही वह लोगों को दावत भी दिया करता था।

इस हिप्पो के बारे में एक खास बात यह थी कि हालॉकि सभी हिप्पो को बहुत अच्छी तरह जानते थे पर उसका नाम उसकी सातों पत्नियों के अलावा और कोई नहीं जानता था।

एक बार हिप्पो ने दावत दी सो खाना खाने के लिये बैठने से ठीक पहले हिप्पो बोला — "आप सब मेरे यहॉ खाना खाने आये हैं पर आप सबमें से कोई भी मेरा नाम नहीं जानता। कम से कम आपको यह तो जानना ही चाहिये कि आप लोग किसके घर खाना खाने आये हैं। सो अगर आप लोग मेरा नाम नहीं बता सकते तो आप सब बिना खाना खाये घर जा सकते हैं।"

---

[108] The Affair of the Hippopotamus and the Tortoise OR Why Hippopotamus Lives in the Water? Taken from the Book : "Folktales of Southern Nigeria" by Elphinstone Dayrell. London : Longmans. 1910.

[109] Isantim named Hippopotamus

और क्योंकि कोई भी हिप्पो का नाम नहीं बता सका सो सारे ही लोग अच्छा खाना और टोम्बो[110] वहीं छोड़ कर अपने अपने घर चले गये।

पर जाने से पहले कछुआ उठा और बोला — "तुम क्या करोगे अगर अगली दावत के दिन मैं तुम्हारा नाम बता दूँ तो?"

हिप्पो बोला — "इस पर मैं इतना शर्मिन्दा होऊँगा कि मैं और मेरा परिवार यह जमीन छोड़ दूँगा और पानी में जा कर रहने लगूँगा।"

कछुए को यह मालूम था कि हिप्पो की केवल सातों पत्नियों को ही उसका नाम मालूम है और उसको यह भी मालूम था कि हिप्पो और उसकी सातों पत्नियॉ सुबह सुबह नदी पर नहाने और पानी पीने जाया करते थे। हिप्पो आगे आगे जाता था और उसकी सातों पत्नियॉ उसके पीछे पीछे जाती थीं।

बस कछुए ने एक प्लान बना लिया।

एक दिन जब हिप्पो और उसकी पत्नियॉ नदी पर गये हुए थे तो कछुए ने उसी रास्ते पर एक छोटा सा गड्ढा खोद दिया और एक जगह बैठ कर उन सबका नदी से लौटने का इन्तजार करने लगा।

[110] Tombo is a kind of Nigerian alcoholic drink

जब हिप्पो नदी पर से लौट रहा था तो उसकी दो पत्नियॉ उसकी दूसरी पत्नियों से थोड़ा पीछे थीं।

कछुए ने हिप्पो और उसकी पॉच पत्नियों को तो निकल जाने दिया पर उन पीछे आने वाली दो पत्नियों के आने से पहले वह अपनी जगह से निकला और उस गड्ढे में जा कर छिप कर बैठ गया।

गड्ढा बहुत ही छोटा था सो उसके खोल का बहुत सारा हिस्सा बाहर दिखायी दे रहा था। जब हिप्पो की वे दोनों पत्नियॉ वहॉ तक आयीं तो हिप्पो की आगे वाली पत्नी कछुए के खोल से टकरा गयी और उसके पैर में चोट लग गयी।

उसने तुरन्त ही अपने पति को पुकारा — "ओ इसान्टिम, मेरे पति, देखो न मेरे पैर में चोट लग गयी। यहॉ सड़क पर कुछ था।"

बस कछुए को और क्या चाहिये था उसको हिप्पो का नाम मालूम पड़ गया था। वह खुशी खुशी घर वापस चला गया।

जब हिप्पो ने दूसरी दावत दी तब भी उसने वही शर्त रखी कि जो कोई भी उसका नाम नहीं जानता था उसको वहॉ खाना नहीं मिलेगा।

सो कछुआ उठा और बोला — "वायदा करो कि अगर मैं तुम्हारा नाम बता दूँ तो तुम मुझे मारोगे नहीं।"

हिप्पो ने वायदा किया कि नहीं वह उसको मारेगा नहीं।

कछुआ बोला — "इसके अलावा तुम अपना पुराना वायदा भी पूरा करोगे कि अगर मैंने तुम्हारा नाम बता दिया तो तुम यह जमीन छोड़ कर पानी में चले जाओगे।"

हिप्पो ने इस बात का भी वायदा किया।

तब कछुआ अपनी सबसे ऊॅची आवाज में चिल्लाया — "तुम्हारा नाम इसान्टिम है।"

यह सुन कर सब लोग तो बहुत खुश हो गये और खाना खाने बैठ गये।

जब दावत खत्म हो गयी तो हिप्पो अपने वायदे के अनुसार अपनी सातों पत्नियों के ले कर नदी में चला गया और तबसे ले कर आज तक वह पानी में ही रहता है।

हालॉकि हर रात वे खाना खाने के लिये किनारे पर आते हैं पर तुम उनको कभी दिन के समय में जमीन पर नहीं देखोगे।

Stories Like Rumplestiltskin

http://www.pitt.edu/~dash/type0500.html#rumpelstiltskin

1. Rumpelstiltskin, Grimms' version of 1812 (Germany),
2. Rumpelstiltskin, Grimms' version of 1857 (Germany)
3. Doubleturk (Germany).
4. Mistress Beautiful (Germany).
5. Dwarf Holzrührlein Bonneführlein (Germany).
6. Nägendümer (Germany).
7. Kugerl (Germany).
8. Hoppetînken (Germany).
9. Zirkzirk (Germany).
10. Purzinigele (Austria).
11. Tarandandò (Italy).
12. Winterkölbl (Hungary).
13. Kruzimugeli (Austria).
14. The Girl Who Could Spin Gold from Clay and Long Straw (Sweden).
15. Tom Tit Tot (England).
16. Duffy and the Devil (England).
17. Whuppity Stoorie (Scotland).
18. Peerie Fool [Peerifool] (Orkney Islands).
19. Gwarwyn-a-throt (Wales).
20. Penelop (Wales).
21. Silly go Dwt (Wales).
22. The Rival Kempers (Ireland).
23. Kinkach Martinko (A Slav Folktale).
24. Finn the Giant and The Minster of Lund (Sweden)

There is one site more which gives the full list of the Rumplestiltuskin like stories. The following list is taken from this Web Site :
http://www.surlalunefairytales.com/rumpelstiltskin/other.html#RUMP

1. Duffy and the Devil * (England)
2. Dwarf Holzrührlein Bonneführlein * (Germany)
3. Ferradiddledumday *
4. The Giant, the Princess, and Peerie-Fool
5. Gilitrut
6. The Golden Spinster *
7. Gwarwyn-a-throt *
8. King Olav, Master Builder of Seljord Church
9. King Olav, Master Builder of Trondheim Cathedral
10. Kinkach Martinko * (A Slav Folktale)
11. Kruzimugeli * (Austria)
12. The Lazy Wife
13. Lignu di Scupa
14. The Little Devil in the Forest
15. The Miller
16. Mistress Beautiful *
17. Nägendümer * (Germany)
18. Peerie Fool [Peerifool] *
19. Penelop *
20. Purzinigele *
21. Ricdin-Ricdon
22. Rumpelstiltskin *
23. The Seven Bits of Bacon Rind *
24. Svein Unafraid
25. The Three Spinners *
26. Titty Tod
27. Tom Tit Tot * (England)
28. Tucker Pfeffercorn
29. Whuppity Stoorie * (Scotland)
30. Winterkölbl * (Hungary)

** Full text of tale is available online.*

See also Tina Hanlon's annotated bibliography of Rumpelstiltskin stories part of AppLit at http://www.ferrum.edu/applit/bibs/tales/rump.htm.

FILMS ON RUMPLESTITSKIN
(From Wikipedia)

Rumpelstiltskin (1915 film), an American silent film, directed by Raymond B. West
Rumpelstiltskin (1940 film), a German fantasy film, directed by Alf Zengerling
Rumpelstiltskin (1955 film), a German fantasy film, directed by Herbert B. Fredersdorf
Rumpelstiltskin (1985 film), a twenty-four-minute animated feature
Rumpelstiltskin (1987 film), an American-Israeli film
Rumpelstiltskin (1995 film), an American horror film, loosely based on the Grimm fairy tale
Rumpelstilzchen (2009 film), a German TV adaptation starring Gottfried John and Julie Engelbrecht

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (12 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (9 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe – 2 parts (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (24 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022